



अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanthtimes.org

६६
निःशल्य

सल काढ़े सुध हुआं तिण सूं
सीझें आतम कांमो।

शल्य निकालकर जो स्वस्थ
हो जाता है। उसकी आत्मा का
कार्य सिद्ध हो जाता है।

— आचार्यश्री भिक्षु

नई दिल्ली

● वर्ष 27 ● अंक 10 ● 08 दिसंबर - 14 दिसंबर, 2025



प्रत्येक सोमवार

● प्रकाशन तिथि : 06-12-2025 ● पेज 20

₹ 10 रुपये

गणाधिपति पूज्य गुरुदेव श्री तुलसी के दीक्षा शताब्दी वर्ष की संपन्नता पर भाव भरी श्रद्धा प्रणति

कालुगणि से दीक्षा ग्रहण की, जीवन भर किया काम।
शिखरों पहुंचाया तेरापंथ को, बढ़ाया जिन शासन का नाम।
चंदेरी के चांद, मानवता के मसीहा, गुरुवर तुलसी—
100वें दीक्षा दिवस पर करते हैं तुम्हें, झुक-झुक कर लाखों प्रणाम ॥



श्रद्धाप्रणत : अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स परिवार

भाषा के विवेकपूर्ण उपयोग से हो सकता है अनेकों का कल्याण : आचार्यश्री महाश्रमण

महामना आचार्यश्री भिक्षु की बोधि भूमि पर हुआ आचार्य प्रवर का पदार्पण

राजनगर।

1 दिसंबर, 2025

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें अधिशास्ता, भगवान महावीर के प्रतिनिधि, महातपस्वी युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण वर्तमान में मेवाड़ की धरा को पावन बना रहे हैं। प्रातः पूज्य प्रवर अपनी धवल सेना के साथ कांकरोली से प्रस्थान कर तेरापंथ की उद्गम स्थली राजनगर की ओर गतिमान हुए।

कांकरोली स्थित प्रज्ञा विहार से गतिमान होकर कुछ दूरी पर अणुविभा के मुख्य केन्द्र स्थल पधारे, जहाँ आचार्यश्री ने श्रद्धालुओं को मंगल आशीर्वाचन प्रदान किया। तदुपरान्त तुलसी साधना शिखर पर आचार्यश्री भारमलजी के स्मृति स्थल पर जनता को मंगल पाठ सुनाया। इसके पश्चात् आचार्यश्री राजनगर स्थित बोधि स्थल पधारे। मार्ग में सभी जैन एवं जैनोत्तर समाजजन को मंगल आशीर्वाद प्रदान करते हुए, दोपहर लगभग बारह



बजे के प्रवास स्थल राजनगर स्थित भिक्षु निलयम पहुँचे।

भिक्षु निलयम परिसर में आयोजित मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में समुपस्थित जनता को आर्हत वाग्मय के माध्यम से पावन संबोध प्रदान करते हुए कहा कि हमारे जीवन में शरीर और आत्मा—ये

दो तत्त्व हैं। इन दोनों के सिवाय कुछ नहीं है। हालांकि भाषा और मन आदि भी होते हैं। मूलतः आत्मा और पुद्गल का बहुत योग है, और यदि विस्तार में जाएँ तो धर्मास्तिकाय आदि छह द्रव्य भी हमारे जीवन में हैं। जहाँ छह द्रव्य हैं, वहाँ लोक है। इन द्रव्यों को संक्षेप में

कहा जाए तो जीव और अजीव—ये दो तत्त्व ही इस लोक में हैं।

आचार्यश्री ने कहा कि हमारे जीवन में शरीर और आत्मा—इन दोनों का मिश्रित रूप है। इसी मिश्रित रूप से हमारे जीवन में भाषा, मन, पर्याप्ति, प्राण आदि अनेक स्थितियाँ हैं। भाषा एक ऐसा माध्यम है

जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचार व्यक्त करता है। भाषा न होने से विचारों के संप्रेषण में असुविधा हो सकती है। यदि भाषा का विवेकपूर्ण उपयोग हो तो इसके द्वारा अनेक लोगों का कल्याण किया जा सकता है, समस्याओं का समाधान किया जा सकता है, आध्यात्मिक ज्ञान दिया जा सकता है—यह भाषा का उजला पक्ष है।

भाषा का दूसरा पक्ष अंधेरा भी है—जिससे बोलकर झगड़ा, दूसरों को फँसाना आदि कार्य किए जा सकते हैं। बोलने में तीन बातों का ध्यान रखें तो भाषा का विवेकपूर्ण उपयोग हो सकता है—पहला मित-भाषा, अर्थात् अनावश्यक न बोलें; दूसरा दोषरहित बोलना; और तीसरा विचारपूर्वक बोलना। अतः हमारी भाषा उत्तम रहनी चाहिए। आचार्यश्री ने आगे कहा कि आज हम राजनगर आए हैं। यह क्षेत्र हमारे धर्मसंघ के आद्य अनुशास्ता आचार्यश्री भिक्षु के बोधि स्थल से जुड़ा हुआ है। तेरापंथ के उत्पन्न होने में किसी न किसी रूप में राजनगर का योगदान है। (शेष पेज 16 पर)

श्रेय और हितकर का समाचरण करने का हो प्रयास : आचार्यश्री महाश्रमण

कांकरोली।

30 नवम्बर, 2025

नाथद्वारा में अध्यात्म की गंगा प्रवाहित करने के पश्चात् जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें अधिशास्ता, महातपस्वी युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण अपनी धवल सेना के साथ कांकरोली की ओर गतिमान हुए। लगभग 11 किमी का विहार कर आचार्यश्री कांकरोली स्थित प्रज्ञा विहार में पधारे।

प्रज्ञा विहार परिसर में बने विशाल प्रवचन पंडाल में समुपस्थित जनसमूह को पावन संदेश प्रदान करते हुए आचार्य प्रवर ने फरमाया कि आदमी सुनकर कल्याण को जानता है और सुनकर पाप को भी जान लेता है। विशेष बात यह है कि दोनों को जानकर जो श्रेय हो, हितकर हो, उसका समाचरण करने का प्रयास करना चाहिए।

मनुष्य के पास पाँच इन्द्रियाँ होती

हैं। ये पाँच इन्द्रियाँ ही माध्यम बनकर आदमी को ज्ञान भी कराती हैं और भोग भी कराती हैं। श्रोत्रेन्द्रिय और चक्षुरीन्द्रिय बाहर से ज्ञान प्राप्त करने में सक्षम माध्यम बनती हैं।

प्रवचन के श्रवण से भी ज्ञान की वृद्धि हो सकती है, किसी के बोलने से भी ज्ञान प्राप्त हो सकता है। विद्यालयों और महाविद्यालयों में शिक्षक बोलकर ही ज्ञान प्रदान करते हैं। अच्छी बातों के श्रवण से मानो कान धन्य हो जाते हैं। किसी दुःखी व्यक्ति की व्यथा कोई अच्छा आदमी सुन ले, तो सामने वाले को थोड़ी राहत मिल सकती है। कान में कोई कुण्डल आदि आभूषण धारण करना कान की बाहरी शोभा हो सकती है, परन्तु कान से धर्म, अध्यात्म, शास्त्रों की बातें सुनना कान का धार्मिक-भीतरी आभूषण है।

आँखों से भी ज्ञान प्राप्त होता है।

अतः आँखों से हमें अच्छी धार्मिक-



आध्यात्मिक पुस्तकें पढ़नी चाहिए, जिससे उत्तम ज्ञान प्राप्त हो सकता है। इस प्रकार श्रोत्र और चक्षु से हमें विविध प्रकार का ज्ञान प्राप्त हो सकता है। आदमी को कानों से सुनकर और आँखों से देखकर अच्छा ज्ञान ग्रहण करने का प्रयास करना चाहिए।

परम पूज्य आचार्यश्री भिक्षु का जन्म

त्रिशताब्दी वर्ष चल रहा है। आचार्य भिक्षु के साहित्य को पढ़ें तो कितने लोगों का कल्याण हो सकता है। आज कांकरोली पहुँचे हैं, जहाँ हमारे रत्नाधिक मुनि श्री सुरेश कुमार जी स्वामी से चार चातुर्मास बाद मिलना हुआ है। आपकी साधना का अच्छा क्रम बना रहे। यहाँ के लोगों में खूब धार्मिक चेतना बनी रहे।

आचार्य प्रवर के मंगल प्रवचन के उपरान्त साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभाजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ एक नेतृत्व वाला धर्मसंघ है। इसी कारण सबकी आस्था आचार्य में केन्द्रित रहती है। आचार्य की दृष्टि ही सबके लिए सर्वोपरि होती है। पहले उदयपुर और आज कांकरोली में विशाल जनसमूह की उपस्थिति इसी श्रद्धा और आस्था का परिणाम है। हमारी सबकी यह गहरी श्रद्धा उत्तरोत्तर बढ़ती रहे और प्रत्येक तेरापंथी श्रावक-श्राविका यह संकल्प करे कि हम आचार्य के इंगित की आराधना करेंगे और आचार्य प्रवर के प्रति श्रद्धा के भाव बने रहेंगे।

स्थानीय स्वागताध्यक्ष ललित बाफना और सभा अध्यक्ष विनोद बाफना ने अपनी अभिव्यक्ति दी। चार चातुर्मास के उपरान्त गुरु सन्निधि में पहुँचे मुनि सुरेश कुमारजी ने भी अपने हृदयोद्गार व्यक्त किए। (शेष पेज 16 पर)

ज्ञानार्जन के माध्यम से मन पर रखें नियंत्रण : आचार्यश्री महाश्रमण

घोड़ाघाटी।

28 नवम्बर, 2025

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी मेवाड़ की धरा को पावन करते हुए नेगड़िया ग्राम से प्रातःकालीन विहार कर घोड़ाघाटी स्थित श्री मदन विहार धाम पधारे। मदन विहार धाम में आयोजित मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में समुपस्थित श्रद्धालुओं को अमृत देशना प्रदान करते हुए आचार्य प्रवर ने फरमाया कि आगम वाङ्मय में विविध विषय प्राप्त होते हैं।

आगम वाङ्मय में वर्णित घटना-प्रसंगों के माध्यम से आध्यात्म की प्रेरणा भी प्राप्त की जा सकती है और आध्यात्मिक साधना भी की जा सकती है। साथ ही यह जगत क्या है, इसकी जानकारी भी द्रव्यों के संदर्भ में आगमों से प्राप्त होती है।

आगम साहित्य में परिसंवादों के माध्यम से भी ज्ञान की उत्तम बातें समझाई गई हैं। उत्तराध्ययन आगम के तेईसवें अध्याय में दो ज्ञानी व्यक्तियों



का परिसंवाद मिलता है—पार्श्व-परंपरा के मुनि कुमार श्रमण केशी और महावीर-परंपरा के गौतम स्वामी के बीच वार्तालाप। दो ज्ञानियों के बीच ऐसा परिसंवाद अन्य अनभिज्ञ व्यक्तियों

को भी श्रेष्ठ ज्ञान प्रदान कर सकता है। मुनि कुमार श्रमण केशी ने प्रश्न किया— 'गौतम! तुम इस मनरूपी दुष्ट अश्व पर आरुढ़ हो, तो क्या यह अश्व तुम्हें उन्मार्ग पर नहीं ले जाता?'

गौतम स्वामी ने उत्तर दिया— 'मैं इस मनरूपी अश्व को श्रुतरूपी लगाम से नियंत्रण में रखता हूँ, अतः यह मुझे स्वेच्छा से कहीं नहीं ले जा सकता।' मन को दुष्ट अश्व कहा गया है,

परन्तु इसे उत्तम कोटि का अश्व भी बनाया जा सकता है। मन में अच्छे और बुरे दोनों प्रकार के विचार आ सकते हैं। मनुष्य को चाहिए कि ज्ञानार्जन के माध्यम से अपने मन पर नियंत्रण रखने का प्रयास करे। अध्यात्म की साधना, प्रेक्षा-ध्यान आदि के माध्यम से मन की चंचलता को कम किया जा सकता है, क्योंकि यही चंचलता मन को दुष्ट बना सकती है। अतः मन की चंचलता कम कर मन को उत्कृष्ट बनाने का प्रयास आवश्यक है।

आचार्य प्रवर ने आगे कहा कि हम नाथद्वारा की ओर जा रहे हैं और नाथद्वारा से पूर्व स्थानकवासी परंपरा के इस मदन विहार में आए हैं। आचार्य शिवमुनि जी से और अन्य मुनियों से भी अनेक बार मुलाकात हुई है। स्थानकवासी समाज में भी उत्तम धार्मिक-आध्यात्मिक साधना चलती रहे।

विहार धाम के अध्यक्ष मांगीलाल लोढ़ा ने आचार्य प्रवर के स्वागत में अपने विचार रखे।

जीवन में रहे मानवीयता, सद्भावना और नैतिकता : आचार्यश्री महाश्रमण

बिलोता।

27 नवम्बर, 2025

जनता की दशा और दिशा बदलने वाले युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण उदयपुर नगरी में अपना त्रिदिवसीय प्रवास संपन्न कर नाथद्वारा की ओर गतिमान हुए और विहार करते हुए ग्राम बिलोता में ढाबालोजी रेस्टोरेण्ट परिसर में पधारे।

प्रातःकालीन मुख्य प्रवचन के दौरान परम पूज्य आचार्य श्री महाश्रमण जी ने आर्हत वाणी के माध्यम से पावन संबोध प्रदान करते हुए फरमाया कि एक सिद्धांत है 'आत्मवाद', अर्थात् आत्मा है। शरीर अलग है और आत्मा अलग है। एक अवधारणा यह भी मिलती है कि जो शरीर है वही आत्मा है और जो आत्मा है वही शरीर है। इसे नास्तिक विचारधारा कहा जा सकता है। प्रश्न उठता है कि मैं कौन हूँ? उत्तर है कि मैं आत्मा हूँ। अभी जीवन है, इस कारण आत्मा और

शरीर का योग है। जैन दर्शन का यह सिद्धांत है कि जब तक मोक्ष प्राप्त न हो जाए, तब तक आत्मा एक जन्म के बाद दूसरा जन्म लेती रहती है। प्रश्न हो सकता है कि आत्मा का पुनः पुनः जन्म क्यों होता है? शास्त्र में कहा गया है कि चार कषाय — क्रोध, मान, माया और लोभ — आगे से आगे पुनर्जन्म की जड़ों को सिंचन देते रहते हैं। जब तक मोहनीय कर्म है, तब तक जन्म-मरण का क्रम चलता रहता है। मोहनीय कर्म के क्षय हो जाने के उपरांत भी एक बार तो मृत्यु होती है, उसके पश्चात आत्मा जन्म-मरण से मुक्त हो जाती है। पुनर्जन्म का सिद्धांत अध्यात्म से जुड़ा हुआ है। यदि पुनर्जन्म है और मोक्ष है, तो अध्यात्म जगत और साधु बनने की गहरी उपयोगिता सिद्ध हो जाती है।

कोई यह कहे कि पुनर्जन्म है ही — इसका क्या प्रमाण है? तो यह भी कहा जा सकता है कि पुनर्जन्म नहीं — इसका भी कोई प्रमाण नहीं है। ऐसी स्थिति में



हमें पुनर्जन्म और आत्मा को मानकर ही जीवन जीना चाहिए, और जीवन को पाप, धोखाधड़ी आदि से बचाते हुए ईमानदारी और नैतिकता के साथ जीने का प्रयास करना चाहिए।

जीवन में सद्भावना, नैतिकता, अहिंसा और संयम रहे तो वर्तमान जीवन के साथ-साथ बाद का जीवन भी अच्छा बन सकेगा। आचार्य श्री तुलसी ने अणुव्रत का प्रवर्तन किया। अणुव्रती बनने के लिए

जैनी होना आवश्यक नहीं है, तेरापंथ धर्मसंघ को मानने की आवश्यकता भी नहीं है। जीवन में मानवीयता, सद्भावना और नैतिकता रहे तो व्यक्ति के जीवन में भी शांति रह सकती है।

अभातेयुप के सत्र 2025-27 के प्रथम ATDC का भव्य शुभारंभ

उदयपुर।

सेवा के क्षेत्र में अग्रणी अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् द्वारा उदयपुर के चेतक सर्किल पर आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर का शुभारंभ राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री पवन मांडोट की अध्यक्षता में किया गया। अपने शपथ ग्रहण के अवसर पर आचार्य श्री महाश्रमण जी के आशीर्वाद से लिए गए संकल्प की क्रियान्विति हेतु राष्ट्रीय अध्यक्ष पवन मांडोट एवं पूरी टीम ने उदयपुर में ही विराजित आचार्य प्रवर के दर्शन कर मंगल पाठ श्रवण किया। तेरापंथ युवक परिषद् के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि योगेश कुमार जी एवं मुनि अक्षय प्रकाश जी ने कार्यक्रम से एक दिन पूर्व सेंटर का अवलोकन भी किया। रियायती दरों पर डायग्नोस्टिक और दंत चिकित्सा के साथ कई अनुभवी डॉक्टरों की परामर्श सुविधा भी इस आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर पर उपलब्ध करवाई जाएगी।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् द्वारा



संचालित और तेरापंथ युवक परिषद् उदयपुर द्वारा समर्थित एटीडीसी का भव्य शुभारंभ जैन संस्कार विधि से किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत संस्कारक पंकज भंडारी और मनोज लोढ़ा द्वारा नमस्कार महामंत्र से हुई। जैन संस्कार विधि से निर्दिष्ट विधान से एटीडीसी का शुभारंभ किया गया।

अभातेयुप राष्ट्रीय अध्यक्ष पवन मांडोट ने सभी

का स्वागत करते हुए मेवाड़ में श्रृंखलाबद्ध एटीडीसी की स्थापना की यात्रा की शुरुआत उदयपुर से करते हुए सभी युवाओं को सेवा के इस क्रम में अधिक से अधिक जुड़ने का आह्वान किया और कहा की हमारी यह संस्था उदयपुर और आसपास के लोगों को कम दरों पर चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराने के लक्ष्य से जुड़ी है। इस लक्ष्य के साथ एटीडीसी के सपने को

जन-जन तक पहुंचाना चाहती है, इसमें आप सभी का सहयोग अपेक्षित है। शीघ्र ही मेवाड़ के अन्य कई क्षेत्रों में भी इसी तरह के डायग्नोस्टिक सेंटर एवं चिकित्सकीय सुविधा उपलब्ध कराई जाएगी।

समारोह में उद्घाटनकर्ता दिनेश पोखरना, तेरापंथ सभाध्यक्ष कमल नाहटा, राजकुमार सुराणा, एटीडीसी राष्ट्रीय प्रभारी पीयूष लूनिया, संदीप हिंगड़, आचार्य महाप्रज्ञ प्रतिभा पुरस्कार से सम्मानित राजीव सुराणा, ओ. पी. जैन, आचार्य महाश्रमण युवा व्यक्तित्व पुरस्कार से सम्मानित देवेन्द्र डागलिया, जैन विश्व भारती के मंत्री सलिल लोढ़ा, तेयुप अध्यक्ष अशोक चोरडिया ने अपने विचार व्यक्त किए।

कार्यक्रम का संचालन अभातेयुप महामंत्री सौरभ पटावरी द्वारा किया गया। तेरापंथ युवक परिषद् उदयपुर ने व्यवस्था संचालन किया। इस अवसर पर प्रायोजक दिनेश राकेश पोखरना परिवार, अभातेयुप प्रबंध मंडल एवं सदस्य, अनेकों डॉक्टरों, गणमान्य व्यक्ति एवं परिषद् कार्यकर्ता उपस्थित थे।

संक्षिप्त खबर

बच्चों में सद्संस्कार के लिए ज्ञानशाला आवश्यक

नोखा। अच्छे संस्कार बच्चों को ज्ञानशाला के द्वारा ही दिए जा सकते हैं। विनम्रता, सहनशीलता सेवा भावना, धर्म- कर्म पाप - पुण्य छोटी-छोटी बातें जीवन को उन्नत बनाती हैं।

अभिभावकों का दायित्व है कि ज्ञानशाला में ज्ञानाराधना के लिए बच्चों को भेजें - यह उद्गार डॉ मुनि अमृतकुमार ने ज्ञानार्थियों को प्रशिक्षण देते हुए कहा। भूरा भवन में प्रशिक्षिका राजकुमारी मरोठी, कोमल भूरा, अनु भूरा, विभा आंचलिया, रेखा सेठिया, स्नेहा बैद ने दो घंटा बच्चों को प्रशिक्षित किया।

तेयुप अध्यक्ष निर्मल चोपड़ा, सभा मंत्री मनोज घीया, ज्ञानशाला प्रभारी महावीर नाहटा, सुशील भूरा ने व्यवस्था का दायित्व संभाला। इंदर चंद बैद ने बताया कि 70 बच्चों ने ज्ञानशाला में भाग लिया।

भगवान महावीर निर्वाण महोत्सव

तुसरा। परमपूज्य युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमणजी की सुशिष्या समणी डॉ निर्वाण प्रज्ञा और समणी मध्यस्थ प्रज्ञाजी के सान्निध्य में कुंदन जैन भवन तुसरा ओडिशा में भगवान महावीर का निर्वाण महोत्सव मनाया गया।

समणी डॉ निर्वाण प्रज्ञा जी ने कहा भगवान महावीर हिंदुस्तान के महान संपूत थे। उनका विशाल दृष्टिकोण सम्पूर्ण मानव जाति को व प्राणी जगत को अपने में समेटे हुए था। उन्होंने अहिंसा का सिद्धांत दिया यदि आज का मानव उसे अपनाता तो न हिंसा होती, न क्रूरता होती और न युद्ध का वातावरण होता। आज की मानव जाति को उस करुणा शील महावीर के पुनः अवतरण की अपेक्षा है।

भगवान महावीर सर्वज्ञ, सर्वदर्शी, यथार्थवादी, अनेकांतवादी, समता वो सहिष्णुता का साक्षात् जीवंत उदाहरण थे। यदि व्यक्ति सुख शांति, अभय और अमन को चाहता है तो उसे शांति, सहिष्णुता ओर करुणा का विकास करना चाहिए। समणी मध्यस्थप्रज्ञाजी, तुलसी और ओडिशा सभा के अध्यक्ष मनोज ने भी अपने विचार रखे। ज्ञानशाला के बच्चों के प्रस्तुति ने सभी का मन मोह लिया। आस पास के क्षेत्रों से भी श्रावक समाज ने लाभ लिया।

भिक्षु प्रीमियर लीग प्रतियोगिता का आयोजन

विजयनगर।

तेरापंथ किशोर मंडल विजयनगर द्वारा साध्वी संयम लता जी ठाणा -4 के पावन सानिध्य में तेरापंथ धर्म संघ के आद्य प्रवर्तक महामना भिक्षु के त्रिशताब्दी अवसर पर भिक्षु प्रीमियर लीग प्रतियोगिता का आयोजन तेरापंथ भवन विजयनगर में किया गया।

साध्वीश्री द्वारा मंगल पाठ के द्वारा प्रतियोगिता की शुरुआत हुई। संचालक हर्ष मांडोट एवं प्रिंस मांडोट द्वारा प्रतिभागियों को चार टीम में विभक्त किया गया। जिनका नाम क्रमशः बगड़ी के सुरमा, सिरियारी के सितारे, कंटालिया के धुरंधर, केलवा के महारथी था, टीमों को क्रिकेट के नियमों से भिक्षु के जीवन पर आधारित विभिन्न

प्रश्न पूछे गए, प्रथम राउंड में केलवा के महारथी एवं बगड़ी के सुरमा विजेता रही जिनके बीच फाइनल मैच खिलायी गया, जिसमें केलवा के महारथी इस प्रतियोगिता की विजेता रही।

साध्वी संयम लता जी ने किसी भी कार्य को सफल बनाने में श्रम समय एवं संगठन की आवश्यकता होती है तेयुप एवं किशोर मंडल ने पूरी टीम के साथ अच्छी और सुंदर प्रस्तुति की, ऐसे ही युवा पीढ़ी आध्यात्मिक की सुंदर प्रस्तुति करते रहें, साध्वी मार्दव श्री जी ने कहाँ प्रतियोगिता धर्म को नए तरीके से प्रस्तुत करने का सरल माध्यम है, ए आई के युग में किशोर आध्यात्मिक के मार्ग पर ऐसे ही आगे बढ़ते रहें। ज्ञातव्य है कि इस प्रतियोगिता को सफलतम संपादित करवाने में साध्वी मार्दव श्री का विशेष

मार्गदर्शन रहा। किशोर मंडल संयोजक दर्शन बाबेल, रिदम चावत, हर्ष मंडोट एवं प्रिंस मांडोट का सराहनीय श्रम रहा। साथ ही किशोर मंडल प्रभारी पीयूष ललवानी का सहयोग रहा। कार्यक्रम के अंत विजेता टीम सहित सभी प्रतिभागियों को प्रायोजक मनोहर लाल, राकेश, मुकेश बाबेल परिवार द्वारा पुरस्कार दिया गया।

इस अवसर पर तेरापंथ की सभा विजय नगर अध्यक्ष मंगल कोचर, तेरापंथ युवक परिषद विजयनगर अध्यक्ष विकास बाँठिया, प्रबंध मंडल से पवन बैद, अमित नाहटा, महिला मंडल उपाध्यक्ष सुमित्रा बरडिया, तेयुप हनुमंत नगर अध्यक्ष स्वरूप चोपड़ा सहित श्रावक समाज की रही गरिमामय उपस्थिति।

अखंड जप एवं मांगलिक कार्यक्रम का आयोजन

गुड़ियातम।

सभा भवन में दो दिवसीय अखंड जप एवं मांगलिक कार्यक्रम का आयोजन श्रद्धा और उत्साह के साथ किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मंगलाचरण, दीप प्रज्वलन और नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से हुआ।

इस अवसर पर विराजमान मुनि रश्मि कुमार जी ने सभी श्रावक-श्राविकाओं को गहन भक्ति भाव से 'बड़ा मंगल पाठ'

सुनाया। उनकी मधुर वाणी और मंगल स्वर से पूरा वातावरण आध्यात्मिक ऊर्जा, शांति और दिव्यता से ओतप्रोत हो उठा। अपने प्रेरणादायक प्रवचन में मुनिश्री ने दिवाली के आध्यात्मिक महत्व पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए कहा कि दिवाली केवल दीप जलाने का त्योहार नहीं, बल्कि यह आत्मा के प्रकाश को जगाने और अहंकार, लोभ व क्रोध के अंधकार को मिटाने का संदेश देती है। उन्होंने आगे बताया कि दिवाली

का यह दिन भगवान महावीर स्वामी के निर्वाण दिवस के रूप में भी मनाया जाता है। भगवान महावीर ने इसी दिन मोक्ष प्राप्त किया था, जो हमें आत्मशुद्धि, संयम और सत्य के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है।

कार्यक्रम के अंत में सभी ने सामूहिक रूप से मंगल पाठ, आशीर्वाचन और दिवाली की शुभकामनाएँ दीं। पूरा सभा भवन भक्ति, शांति और आध्यात्मिक उल्लास से आलोकित हो उठा।

भारतीय संस्कृति सदसंस्कारों की संस्कृति कार्यशाला का आयोजन

पल्लावरम/चेन्नई।

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि दीपकुमार ठाणा 2 के सान्निध्य में हमारी संस्कृति - हमारे संस्कार विषयक कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ भवन में श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, पल्लावरम द्वारा किया गया।

मुनि दीपकुमारजी ने कहा कि 'जैसी संस्कृति, वैसे हो संस्कार' - जब तक यह सामंजस्य बना रहेगा, तब तक व्यक्ति और उसका व्यवहार दोनों की सुरक्षा होती रहेगी। भारत की संस्कृति बहुत प्राचीन संस्कृति है। भारतीय संस्कृति मूलतः सदसंस्कारों की संस्कृति है, ऋषि मुनियों की संस्कृति है। वे सारे संस्कार जो व्यक्ति और समाज को श्रेष्ठता की ओर ले जाते हैं- वह संस्कृति भारतीय संस्कृति है। आज के बदलते दौर में पाश्चिमात्य सांस्कृतिक प्रभाव से दुष्कृतों का उदय हो रहा है। हमें भौतिक एवं आडंबर ग्रस्त संस्कृति जनित संस्कारों से दूरी बनाये रखना है एवं अपनी पहचान सुरक्षित रखनी है। जैनों की भी एक सेवा, समर्पण, मैत्री, विसर्जन भावित संस्कृति रही है, जिसे 'मानव संस्कृति- विश्व संस्कृति' कहा जा सकता है। जैन संस्कृति मानव

जीवन को श्रृंगार का वलय प्रदान करने की संस्कृति है। संस्कृति की सुरक्षा से ही हमारा भविष्य उज्ज्वल बना रह सकता है एवं आदर्श भावी पीढ़ी का निर्माण सुगम बन सकता है। मुनिश्री ने पारिवारिक और धार्मिक संस्कारों पर बल देते हुए कहा कि परिवार से ही संस्कारों का प्रारंभ होता है। आज संस्कृति को रसातल की ओर धकेला जा रहा, जिसके परिणाम स्वरूप समाज में असभ्य परिधान पहने जा रहे हैं। खान-पान की अशुद्धि बढ़ती जा रही है। प्री-वेडिंग के कारण संस्कृति का पतन हो रहा है। इससे हमें बचकर रहना है। मुनिश्री ने विस्तार से संस्कृति और संस्कार पर मार्मिक विचार रखे। मुनि काव्यकुमारजी ने कहा कि अपने बच्चों को विद्यालयी शिक्षा के साथ सदसंस्कार जरूर दे। संस्कारों का प्रारंभ जब बच्चा गर्भ में आ जाए, तब से ही प्रारंभ कर दे। हर माता अपनी दैनिक जीवन शैली में संस्कारमय चर्चा का अनुसरण करे। मां बच्चों की पहली संस्कारशाला होती है। अंत में ज्ञानशाला के बच्चों ने ज्ञानशाला अवदान पर भव्य प्रस्तुति दी। जिसका संचालन सुधा मरलेचा एवं शकुंतलादेवी ने किया। पल्लावरम तेरापंथ सभा अध्यक्ष दिलीप भंसाली ने कुशल संचालन कर धन्यवाद ज्ञापन दिया।

संतान की परवरिश में माँ की भूमिका कार्यशाला का आयोजन

गंगापुर, कालू।

संतान की परवरिश में माँ की भूमिका कार्यशाला में बोलते हुए मुनि प्रसन्न कुमार ने कहा जैसे मिट्टी के घड़े के निर्माण में कुम्भकार की भूमिका होती है वैसे ही एक दृष्टी से प्रारंभिक समय में माँ की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। व्यक्ति निर्माण करना पुरुषकार्य होता है। जन्म से पहले 9 मास के पिरियड में ही बच्चे का काफी निर्माण हो जाता है। जैसे भगवान महावीर के त्रिशला माँ के गर्भ में रहे उस समय ज्ञानी पण्डितों ने त्रिशला को २२ बातें (सावधानियाँ) बताई। कि तुम ध्यान रखोगी तो महापुरुष होगा। जन्म के बाद बच्चे की परवरिश की जाती है वही महत्व रखती है। किन्तु जन्म से पहले उस बच्चे को क्या बनना वह संस्कार माँ के हाथ में है। माँ बच्चे की पहली गुरुणी होती है। महात्मागांधी ने भी जीवनी में लिखा मेरी अनपढ़ माँ ने मुझे गांधी से महात्मा

गांधी बना दिया। आजकी पढ़ी लिखी माताओं के लिए एकमहात्मा का निर्माण करना है एक चुनौती है। हम दो हमारे एक संतान का भी निर्माण भी कठिन हो रहा है। सुधार की जगह बिगड़ने का माहौल ज्यादा बढ़ गया है। मौलिकगुणों के हास से बच्चों में उन्माद, प्रमाद असहिष्णुता, विलासिता का माहौल ज्यादा बढ़ने से अच्छी और भरोसे मंद संतान की कल्पना धुमिल न हो जाए। माता पिता इस धारणा को बदल दे कि बच्चे की हर ख्वाइस को पूरा करना चाहिए। गलत प्रोत्साहन बिगड़ने का कारण बनता है। अनुशासन सिखाएं। मौबाइल हिंसक संस्कार के खिलाफ से दूर रखें। इसी क्रम में मुनी श्री धैर्य कुमार ने अपने उद्बोधन में कहा कि बच्चों को जो संस्कार देने हैं वह गर्भ में ही दे दिए तो बच्चों को जिंदगी भर याद रहता है एक घटना के माध्यम से भी समझाया। प्रेरणा गीत से मीटिंग की शुरुआत की गई। संयोजन मंत्री प्रीती रांका ने किया।

संस्कृति का संरक्षण-संस्कारों का संवर्द्धन

जैन विधि-अमूल्य निधि



नूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ

■ **नागपुर।** अजित चन्दन मल नाहटा के नूतन प्रतिष्ठान जैन मल्टी ट्रेडिंग कंपनी का जैन संस्कार विधि से शुभारंभ करवाया गया। संस्कारक आनंदमल सेठिया, जतन मालू ने मंगल भावना यंत्र एवं जैन संस्कार विधि की महत्ता का विश्लेषण करते हुए विभिन्न मंगल मंत्रोच्चार के द्वारा विधि को मंगलपाठ से संपन्न करवाया।

नूतन गृह प्रवेश

■ **साउथ हावड़ा।** श्रीडूंगरगढ़ निवासी, साउथ हावड़ा प्रवासी स्व. रूपचंद - स्व. पताशी देवी चौरडिया के सुपुत्र प्रदीप-नीतू चौरडिया के नूतन गृह का प्रवेश जैन संस्कार विधि से संस्कारक बजरंग लाल डागा एवं राकेश चौरडिया ने सम्पूर्ण विधि विधान व मंगल मंत्रोच्चार से सानन्द संपन्न करवाया।

■ **साउथ हावड़ा।** सरदारशहर निवासी साउथ हावड़ा प्रवासी प्रवीण कुमार - मधु बैद के सुपुत्र मनीष - मीतू बैद एवं पंकज - प्रियंका बैद के नूतन गृह का प्रवेश जैन संस्कार विधि से संस्कारक बीरेंद्र बोहरा एवं नवीन सेठिया ने सम्पूर्ण विधि विधान व मंगल मंत्रोच्चार से सानन्द कार्यक्रम संपन्न करवाया।

■ **गंगाशहर।** भारती- राहुल बोरड़ के नूतन गृहप्रवेश का मंगल शुभारंभ जैन संस्कार विधि द्वारा 'जैन संस्कारक' रोहित बैद, विनीत बोथरा और देवेन्द्र डागा ने विधि विधान पूर्वक मांगलिक मंत्रोच्चार के साथ सम्पन्न करवाया।

वीतराग पथ कार्यशाला का आयोजन

विजयनगर।

अभातेयुप के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद विजयनगर द्वारा युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या साध्वी संयमलता जी ठाणा -4 के पावन सान्निध्य में अभातेयुप अध्यक्ष पवन मांडोट की अध्यक्षता में वीतराग पथ कार्यशाला का आयोजन हुआ। साध्वीश्री द्वारा मंगल मंत्रोच्चार से कार्यशाला का शुभारंभ हुआ। तेयुप अध्यक्ष विकास बाँठिया ने सभी का स्वागत किया। साध्वी संयमलता जी ने कहा जीवन एक पुरस्कार है, उपहार है, अवसर है, बच्चों का जीवन सफेद कागज है उसे पर चाहे जैसा चित्र उकेरा

जा सकता है, बच्चों की कीमत ही जीवन को संस्कारित करें। साध्वीश्री ने स्वयं के वैराग्य जीवन की घटनाओं को बताते हुए बच्चों को प्रेरित किया। साथ ही बच्चों को 1 घंटे से अधिक मोबाइल उपयोग करने का त्याग करवाया गया। श्रावक श्राविकाओं ने भी साध्वीश्री की प्रेरणा से डिजिटल डिटाॅक्स का त्याग किया। पवन मांडोट ने अपने प्रभावशाली व्यक्तित्व में बच्चों को त्याग एवं संकल्प करने हेतु प्रेरित किया एवं अभिभावकों को संकल्प करवाया कि अगर उनके परिवार में बच्चे दीक्षा लेने हेतु तैयार होते हैं तो वह उन्हें मना नहीं करेंगे। साध्वी मार्दवश्री जी ने कुशल संचालन करते हुए कहा कि पदार्थ जगत

से आध्यात्मिक जगत की ओर जाने का मार्ग है वीतराग पथ, बच्चे कलियों से फूल बनकर इस नंदनवन में सुवासित करें। सभी बच्चों को प्रायोजक मनोहरलाल जी, राकेश जी, मुकेश जी बाबेल द्वारा उपहार दिए गये। विजयनगर सभा अध्यक्ष मंगल कोचर ने शुभकामनायें संप्रेषित की। सभा ट्रस्ट से पुखराज श्रीश्रीमाल, अभातेयुप से विनोद मुथा, गौतम खाब्या, कमलेश चोपड़ा, अणुव्रत समिति अध्यक्ष महेंद्र टेबा, तेयुप प्रबंध मंडल से प्रदीप बाबेल, पवन बैद, अमित नाहटा, मनीष चावत, पीयूष ललवानी, विजयनगर ज्ञानशाला संयोजिका ममता मांडोट सहित ज्ञानशाला बच्चे एवं श्रावक समाज की रही उपस्थिति।

मंत्र अनुष्ठान से सकारात्मक ऊर्जा का निर्माण संभव

पूर्वांचल, कोलकाता।

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि जिनेश कुमार जी ठाणा-3 के सान्निध्य में मंत्रोत्सव-2 का भव्य आयोजन जैन श्वेतांबर तेरापंथ सभा (कोलकाता पूर्वांचल) ट्रस्ट द्वारा भिक्षु विहार में आयोजित किया गया। मंत्र जप अनुष्ठान के इस अद्भुत कार्यक्रम में सजोड़े, स्वस्तिक आकार में बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने जप किया।

इस अवसर पर श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए मुनि जिनेश कुमार ने कहा- जैन धर्म में आठ मंगल बताए गये हैं- स्वस्तिक, श्रीवत्स, नन्द्यावर्त, वर्धमानक, भद्रासन कलश, मत्स्य, दर्पण। स्वस्तिक का अर्थ है-अच्छा या मंगल। तीर्थंकरों

की वाणी सदा मंगलमय होती है इसलिए स्वस्तिक को मंगल का प्रतीक माना जाता है। कहीं-कहीं स्वस्तिक को अनंत और शांति का प्रतीक भी माना जाता है। तीर्थंकर अनंत ज्ञान के स्वरूप होते हैं तथा चारों गतियों से मुक्त होने का मार्ग दिखलाते हैं। चौबीस तीर्थंकरों का क्रम और काल का चक्र हमेशा चलायमान रहता है इसीलिए जैनधर्म में स्वस्तिक को चारों गति व अनंतकाल का प्रतीक माना जाता है। स्वस्तिक को ऋग्वेद की ऋचा में सूर्य माना गया है।

स्वस्तिक में चार बिंदिया ज्ञान, दर्शन, चरित्र और तप का प्रतीक होती है। स्वस्तिक से नार शिक्षाएं ग्रहण कर सकते हैं- समय कीमती है, ज्ञान अर्जवान है, सत्यनिष्ठ बनें, चरित्रवान रहें। मुनिश्री ने

आगे कहा- मंत्र अनुष्ठान से सकारात्मक ऊर्जा का निर्माण होता है। धनतेरस के पवित्र दिन सजोड़े, स्वस्तिक आकार में तन्मयता पूर्वक जप करना अपने आप में विशिष्ट है। नमस्कार महामंत्र, भक्तामर आदि आध्यात्मिक मंत्रों से आध्यात्मिक लाभ प्राप्त किया जा सकता है। कार्यक्रम का शुभारंभ मुनि कुणाल कुमार जी के मंगलाचरण से हुआ। आधार ज्ञापन सभा के अध्यक्ष संजय सिंधी ने किया।

मुनिश्री को अपने क्षेत्र में पदार्पण हेतु निवेदन वक्तव्य साल्टलेक सभा के अध्यक्ष जयसिंह डागा ने व गीत का संगान तेरापंथ महिला मंडल, साल्टलेक ने किया। कार्यक्रम का संचालन - मुनि परमानंद ने किया। जप में कुल २० जोड़े व लगभग 450 श्रद्धालुगण संभागी बनें।



गणाधिपति पूज्य गुरुदेव श्री तुलसी के दीक्षा शताब्दी वर्ष की संपन्नता पर श्रद्धा प्रणति

आचार्य श्री तुलसी-एक महान कलाकार

● साध्वी सम्यकप्रभा जी ●

तुलसी तुम जीवन विश्वास, लाए गण में नव मधुरिमा।

नाम तुम्हारा सबल सहारा, भरता कण-कण में उल्लास।।

आचार्यश्री तुलसी के जीवन को जिस किसी कोण से देखा जाये तो उसमें विविधताओं का संगम मिलता है, उनका बचपन, मुनि जीवन व इनका आचार्यकाल जन-जन को अभिसिंचित प्रेरणा देने वाला था, अध्यात्मदर्शन, संस्कृति व मानवीय चरित्र के लिए अहिंसा के प्रखर प्रवक्ता थे। संयम ही जीवन है। इस घोष को बुलंद करते हुए सबको संयममय जीवन जीने की प्रेरणा दी। तेरापंथ उनकी शक्ति का स्रोत था और वे तेरापंथ की शक्ति के केन्द्र थे।

गुरुवर ने तेरापंथ की पहचान के तीन घोष दिए जिनमें तीसरा घोष था व्यसन मुक्त जीवन संसार, गुरुवर का यह स्वप्न था कि समाज का हर युवक हर व्यक्ति व्यवसन-मुक्त जीवन जीएं, राजस्थान में जहां नारी जाति घूंघट से बाहर आने की कल्पना थी नहीं कर सकती थी। वहां उन्हें जागृत कर धर्म आंदोलन में लगा कर संपूर्ण मानव जाति को कल्याण का मार्ग दिखाया। मानव का आचरण बदले इसके लिए भगवान महावीर की आत्मा साधना के सूत्र की समाज के समक्ष सरल भाषा में व्याख्यायित किया। सुधरे व्यक्ति, समाज व्यक्ति से राष्ट्र स्वयं सुधरेगा आदि नारे

देकर संपूर्ण मानव जाति के सुधार के लिए बहुआयामी कार्यक्रम प्रस्तुत किए। महाव्रतों को आम जनता अपने जीवन में आंशिक रूप से ही सही पर उतारे, उसके लिए अणुव्रत की परिकल्पना का यथार्थ रूप प्रस्फुटित किया। उन्होंने न केवल अणुव्रत आंदोलन की शुरुआत की अपितु इसके माध्यम से नैतिकता व सदाचार की आवाज घर-घर तक पहुंचाई।

अस्पृश्यता धर्म के मस्तक पर कलंक का रीण है। जाति प्रधान, पर्दाप्रथा जैसी रूढ़ धारणा को तोड़ने में समय श्रम व शक्ति लगाने पर सघन प्रयासों से समाज की मानसिकता में अंतर आने लगा।

तेरापंथ संघ में साध्वी समाज के शिक्षा विकास को आचार्य तुलसी के प्रयत्न पुरुषार्थ व पालन पोषण ने धर्म संघ नई राह दिखाई। पारमार्थिक शिक्षण संस्था जो आज अनेक साध्वियों व समणियों के निर्माण स्थली के रूप में प्रतिष्ठित हो चुकी है।

गुरुदेव तुलसी ने प्रबुद्ध युवकों की टीम जो सावधिक समण दीक्षा स्वीकार कर धर्म प्रचार-प्रसार कर सके उस हेतु समण दीक्षा का क्रम प्रारम्भ किया। इस प्रकार तुलसी का अनुकरण हम सबका लक्ष्य हो। वह दिव्य, अलौकिक, तेजोमय, दीप्ति व क्रांतिमय ज्योति अदृश्य लोक से भी हमारा पक्ष प्रदर्शन करती रहे। यह मेरी अन्तर अभिलाषा है।

संयम हीरा पायो है

● साध्वी साध्वी अणिमाश्री ●

सदी महोत्सव संयम रो ओ, प्रभु तुलसी रो आयो है।
संयम री फैली है किरणां, रंग अनुठो छायो है।।

बाल सूर्य सो तेजस्वी हो, तुलसी मुनि रो उणिहारो।
चंदा-सी शीतलता मुख पर, घाल रह्या सै थूथकारो।
कालु गुरु रै कर कमला स्युं संयम हीरो पायो।।

कालुगणी री महर सवाई, निज प्रतिभा चमकाई है।
नान्हीं वय में शिक्षा-गुरु वण नूतन ख्यात बनाई है।
मुनि नथमल सो चेलो मिल्यो, सचमुच भाग सवायो है।

पुरबली पुण्याई जागी, गण रा नाथ बण्या तुलसी।
भैक्षव गण ने घणो दीपायो, नूतन काम करया तुलसी।
बाईस बरस रा आचारज बण, अद्भुत नाम कमायो है।

गणिवर महाश्रमण जी लागै, तुलसी गुरुवर सा म्हानै।
ऊपर जाकर ध्यान राख स्युं, कह्यो तुलसी प्रभु थानै।
महाप्रज्ञ पट्टधर रो शासन, सगला रे मन भायो है।

लय- ब्याऊं बिनणी

मेधावी विद्यार्थी सम्मान समारोह आयोजन

गंगाशहर।

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम बीकानेर द्वारा तेरापंथ भवन गंगाशहर में मेधावी विद्यार्थी सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। आयोजन को संबोधित करते हुए उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमलकुमार जी ने कहा कि विद्यार्थी को अपना चरित्र उज्ज्वल बनाना चाहिए। उसका आचार अच्छा होना चाहिए। आचार ही प्रथम धर्म है। विद्वता के साथ चरित्रवान होने की ज्यादा आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि धन से भी अधिक महत्व चरित्र का है।

उन्होंने विद्यार्थियों को सफलता के सूत्र बताते हुए व्यसन मुक्त रहने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि नैतिकता, प्रामाणिकता, पवित्रता, शालीनता और मिलनसारिता आदि विद्यार्थी के जीवन और व्यवहार में आए। मुनि श्रेयांश कुमार जी ने सुमधुर गीतिका द्वारा जीवन का विकास करने की प्रेरणा दी। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता माध्यमिक शिक्षा निर्देशालय के स्टाफ ऑफिसर डॉ. अशोक शर्मा ने कहा कि विद्यार्थी अपना लक्ष्य तय कर निरंतर अभ्यास करें तथा आत्मविश्वास के साथ तैयारी करें तो उसे निश्चित रूप से सफलता प्राप्त होती है। वर्तमान समय के प्रतिस्पर्धी वातावरण में आत्मविश्वास बनाए रखें, दृढ़ निश्चय से तैयारी करें तथा बाधाओं का सामना करने की सकारात्मक सोच रखें।

विद्यार्थियों को अपना स्क्रीन टाइम न्यूनतम करना चाहिए। मोबाइल, टीवी व कंप्यूटर पर अनावश्यक बिताया गया समय लक्ष्य में बाधक बनता है। उन्होंने अभिभावकों को बच्चों की ईच्छा व रुचि के अनुरूप कैरियर निर्धारित करने की सलाह दी।

विशिष्ट अतिथि अतिरिक्त निर्देशक जितेंद्र गुप्ता ने अपना वक्तव्य देते हुए कहा कि घर का वातावरण सकारात्मक व ऊर्जामय होना चाहिए। माता-पिता बच्चों के मित्र बनकर उन्हें प्रेरित करें। अनुप्रेक्षा व ध्यान के माध्यम से एकाग्रता बढ़ाएं तथा बुद्धि को चेतन करें। कार्यक्रम का शुभारंभ सुमधुर गायिका इंजीनियर एकता पुगलिया द्वारा मंगलाचरण से किया गया।

प्रोफेशनल फोरम के अध्यक्ष रतनलाल छलाणी ने स्वागत वक्तव्य देते हुए धर्म संघ की इस चतुर्थ संघीय संस्था का सविस्तार परिचय दिया। उन्होंने आचार्य महाप्रज्ञ शिक्षा सहयोग योजना, मेधावी सम्मान योजना, परामर्श, चिकित्सा सेवा तथा संस्था के द्वारा संचालित कार्यों के बारे में बताया। शिक्षा संयोजक अशोक चौरडिया द्वारा अतिथियों का परिचय दिया गया तथा शिक्षा संबंधी आगामी योजनाओं की जानकारी दी गई। आचार्य महाप्रज्ञ नॉलेज सेंटर के सहसंयोजक राकेश चौरडिया ने केंद्र द्वारा आगामी समय में प्रारंभ किए जाने वाले कोर्सेज की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि महादानी मूलचंद जी सामसुखा

परिवार द्वारा प्रदत्त भूमि पर निर्माण कार्य अपनी पूर्णता पर है। शीघ्र ही सेंटर का विधिवत उद्घाटन प्रस्तावित है।

एमबीए कुलदीप छाजेड़ ने टीपीएफ फ्यूचर के बारे में विस्तृत जानकारी देते हुए प्रोफेशनल कोर्स कर रहे विद्यार्थियों को इसमें जोड़ने हेतु आवाह किया। पूर्व महापौर नारायण चोपड़ा, पूर्व अध्यक्ष बच्छराज कोठारी, तेरापंथी सभा अध्यक्ष नवरतन बोथरा, तेयुप अध्यक्ष ललित राखेचा द्वारा अतिथियों का साहित्य व पताका द्वारा सम्मान किया गया। बोर्ड परीक्षाओं में 85% से अधिक अंक प्राप्त करने वाले 88 मेधावी विद्यार्थियों को मेडल व प्रशस्ति पत्र द्वारा सम्मानित किया गया। अमरचंद सोनी, मानमल सेठिया, डॉ. बबिता जैन, मांगीलाल बोथरा, तोलाराम सामसुखा, पियुष लूणिया, कन्हैया लाल बोथरा, उषा डाकलिया, सुशीला देवी बोथरा, अनिल बैद, जूली देवी बैद आदि गणमान्य व्यक्तियों द्वारा मेधावी विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का सफल संचालन मंत्री अजीत कुमार संचेती व देवेन्द्र डागा द्वारा किया गया। आभार ज्ञापन टीपीएफ के पूर्व अध्यक्ष व परामर्शक नारायण चोपड़ा द्वारा किया गया। कार्यक्रम को सफल बनाने में तेरापंथी सभा, तेरापंथ न्यास, महिला मंडल, युवक परिषद्, अणुव्रत समिति, किशोर मंडल व कन्या मंडल का विशेष सहयोग रहा।

तुलसी थे जन जन के राम...

● अर्जुन मेड़तवाल, उधना ●

संघर्षों ने भी सदा मुस्कुराते रहे, सचमुच तुम रणधीर थे।
हर क्षण करते रहे पुरुषार्थ, सचमुच तुम कर्मवीर थे।
अणुव्रत, प्रेक्षा, जीवन विज्ञान के है महान उद्गाता-
नाम, भिन्न था चेहरा भिन्न था, बाकी तुम साक्षात् महावीर थे।
तुलसी तुम्हारी वाणी को सुनकर, शैतान भी इन्सान बन गये।
तुम्हारे पावन चरणों में आकर, नादान भी महान बन गये।
पता नहीं कौन सी करामात थी तुम्हारे व्यक्तित्व में
कि औरों के दिए अभिशाप भी, तुम्हारे लिए वरदान बन गये।।

तुलसी तुम तो थे, इन्सान के रूप में एक फरिश्ता।
पता नहीं तुम्हारे साथ था, कितने जन्मों का रिश्ता।
कि जब भी देखता था, मैं तुम्हारे मुख-मंडल को
तो महक उठता था, मेरे जीवन का गुलदस्ता।।

तुलसी तुम तो थे जन-जन के राम।
हमारी उनन्त श्रद्धा के, तुम थे परम धाम।
धन्य हुई यह वसुन्धरा, गुरुवर तुम्हें पाकर
तुम्हारे चरणों में हमारा, कोटि कोटि है प्रणाम।।
तुमको हमने करीब से देखा, तो लगा तुम ऐसे थे।
तारों की बारात में तुम, हंसते हुए चांद जैसे थे।
था घटाओं के पैबन्द से, झांकते हुए आफताब
फिर दुनिया को बताएं तो कैसे, कि तुम कैसे-कैसे थे?।।

तुम्हारे आने से, मानवता को नई राह मिल गई थी।
तुम्हारे शासन में, भैक्षव शासन को अनन्य चाह मिल गई थी।
तुम्हारे विरल व्यक्तित्व का, करिश्मा ही अजीब था प्रभो।
तुम्हारे दिशा-दर्शन से, गण को सबकी वाह-वाह मिल गई थी।।

सहकर कष्ट अनेकों तुमने, भव-भव का बन्धन काटा।
मुस्कुराते रहे विरोधों में पर, नहीं किसी को डांटा।
तुम्हारे वियोग में आज भी, आंसू बहा रही है दुनिया
क्यों कि, विष की प्यालियां तुम पीते रहे और, अमृत सबको बांटा।
लेकर आए तुम इस धरती पर, एक नया उजियारा।
अणुव्रत के रूप में दिया देश को, तुमने नूतन नजारा।
हे प्राणेश्वर, हे करुणेश्वर, सुन लो हमारी अरदास
मानवता को राह दिखाने, तुम्हें आना होगा दुबारा।।

गणाधिपति पूज्य गुरुदेव श्री तुलसी के दीक्षा शताब्दी वर्ष की संपन्नता पर श्रद्धा प्रणति

तेरापंथ धर्म संघ को विश्वविख्यात बनाने वाले युगप्रधान आचार्य श्री तुलसी

● मुनि कमलकुमार ●

जन्म और जीवन दो बिन्दु हैं, जन्म से जीवन का महत्व ज्यादा होता है। रूप और गुण दो बिन्दु हैं, रूप से गुण का महत्व अधिक होता है। अवस्था और अर्हता दो बिन्दु होते हैं, अवस्था से भी अर्हता का मूल्य ज्यादा होता है। हमें इन बिन्दुओं पर अपना ध्यान विशेष रूप से केन्द्रित करना है।

आचार्य श्री तुलसी का जन्म राजघराने में नहीं हुआ, परंतु अपने सुश्रम और गुरु-दृष्टि का सतत जागरूकता से पालन करने से मात्र 22 वर्ष की अवस्था में उन्होंने अपने दीक्षा-प्रदाता अष्टमाचार्य कालूगणी का मन जीत लिया था। उनकी दृष्टि में आप विशेष स्थान बना चुके थे। इसका सुपरिणाम था कि कालूगणी ने आपको अपना उत्तराधिकारी घोषित कर दिया। मात्र तीन दिन आप युवाचार्य रहे। कालूगणी के स्वर्गवास होते ही आप विशाल तेरापंथ धर्मसंघ के नवमाचार्य बने।

22 वर्ष की अवस्था में आचार्य बनना और संघ का संचालन करना

अपने आप में तेरापंथ समाज के लिए प्रथम अवसर था। परंतु आपकी कार्यशैली देखकर सब आश्चर्यचकित रह गए। आचार्य श्री तुलसी से पूर्व का तेरापंथ और आचार्य श्री तुलसी के युग का तेरापंथ — दोनों में बहुत बड़ा परिवर्तन व संशोधन देखने-सुनने को मिलता है।

आचार्य श्री तुलसी ने केवल साधु-साधवियों का ही नहीं, श्रावक-श्राविकाओं का जो निर्माण किया वह अन्य समाजों के लिए प्रेरणा है। धर्मसंघ के प्रत्येक व्यक्ति का कैसे विकास हो, इसके लिए नाना संगठन बनाए गए — जैसे छोटे बालक - बालिकाओं के लिए ज्ञानशाला, उनसे बड़े किशोर मंडल और कन्या मंडल, तथा उससे ऊपर युवक परिषद् और महिला मंडल। समवयस्क लोगों के सर्वांगीण विकास हेतु शिविरों की व्यवस्था की गई, जिनमें गुरुदेव स्वयं अपना अमूल्य समय देकर प्रशिक्षण प्रदान करवाते, ताकि उनका आचार, विचार और अनुशासन अक्षुण्ण बना रहे।

आचार्य श्री तुलसी ने जैन एकता के लिए कई प्रयास किए और उनमें सफलता भी प्राप्त हुई। वे एक सम्प्रदाय के आचार्य होते हुए भी जनकल्याण की भावना से अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान, जीवन-विज्ञान जैसे अवदानों द्वारा आबालवृद्ध के विकास हेतु निरंतर प्रयत्नशील रहे। जैन-अजैन, हिन्दू-मुस्लिम, पढ़े-लिखे, अनपढ़, महिला-पुरुष, मजदूर-व्यापारी—सबको आपने इन अवदानों के माध्यम से व्यसनमुक्त व मानवीय गुणों से युक्त बनाया।

देश के प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति भी आपके अवदानों से अत्यधिक प्रसन्न थे और इनके व्यापक प्रचार-प्रसार में अपना महनीय सहयोग प्रदान करते थे। राष्ट्रपति जी ने आपके समक्ष अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि 'आपको सरकार की आवश्यकता नहीं है, परंतु सरकार को आप जैसे परोपकारी संतों की आवश्यकता है। हम पैसे खर्च कर जो कार्य नहीं करा सकते, वह कार्य आप स्थान-स्थान पर भ्रमण कर लोगों को नैतिक, प्रामाणिक

व व्यसनमुक्त बनाकर रहे हैं। ऐसे संत कम हैं, जो गांव-गांव, प्रांत-प्रांत भ्रमण कर लोगों को जीने की कला सिखा रहे हैं। आप केवल जैन बनाने के लिए नहीं, बल्कि सबको 'गुड मैन' बनाने के लिए प्रयासरत हैं।'

आचार्य श्री तुलसी का व्यक्ति-निर्माण के प्रति अनवरत प्रयास रहता था, क्योंकि परिवार, समाज, देश और विश्व-उत्थान का सपना इसके बिना संभव नहीं है। गुरुदेव तुलसी की दृष्टि सदैव दूरदर्शी होती थी।

आज हम देख रहे हैं कि बाल-विवाह, मृत्युभोज, घूँघट-प्रथा आदि सामाजिक कुरीतियों में जो सुधार आया है, वह आचार्य श्री तुलसी के उपदेश और प्रयासों का ही परिणाम है। नारी-शिक्षा का जो क्रम आज समाज में बढ़ा है, वह भी कल्पनातीत कहा जा सकता है।

आज साध्वियां, समणियां, उपासिकाएं, ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाएं — इनकी लेखन - वक्तृत्व क्षमता देखकर बड़े-बड़े विद्वान भी

आश्चर्यचकित हो जाते हैं। जो तेरापंथ समाज मारवाड़, मेवाड़, हरियाणा, पंजाब, मध्यप्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र तक सीमित था, वह आज समूचे भारत में ही नहीं, पूरे विश्व में अपनी पहचान बना चुका है—यह सब आचार्य श्री तुलसी की सुदीर्घ दृष्टि का परिणाम है।

आज तेरापंथ धर्मसंघ का साहित्य केवल जैनो के लिए ही नहीं, जन-जन के लिए उपयोगी है। प्रचार-प्रसार के कारण जन-जन में आस्था का संचार हुआ है।

तेरापंथ धर्मसंघ में सबसे कम उम्र में आचार्य बनने वाले और सबसे अधिक समय तक आचार्य पद पर सुशोभित होने वाले आचार्य श्री तुलसी की दीक्षा शताब्दी पर, आचार्य श्री महाश्रमण जी के शासनकाल में जो योगक्षेम वर्ष का भव्य आयोजन हो रहा है, वह व्यक्ति, परिवार, समाज, देश और विश्व के लिए प्रेरणा बने—इन्हीं मंगलभावों के साथ, शिक्षा - प्रदाता, दीक्षा - प्रदाता, भाग्य - विधाता गुरुदेव तुलसी को कोटि-कोटि वंदन।

गुरु तुलसी को नमन हमारा

● मुनि हिमांशु कुमार ●

गुरु तुलसी को नमन हमारा, वामन रूप में छिपा हुआ था, वर विराट व्यक्तित्व तुम्हारा। दीक्षा सुदी सुपावन अवसर, संयम राह चले जग सारा।।

सर्पराज ने फण फैलाकर शुभ भविष्य संकेत दिया, तुलसी को पाकर कालू गुरु ने गण को निश्चित किया। बाईस वर्ष की वय में आचारज बन संघ को सदा निखारा।।

नन्हे-नन्हे कदमों से पूरे भारत को नाप लिया, हर व्यक्ति चरित्र निष्ठ हो अणुव्रत का शंखनाद किया। राष्ट्रपति भवन तक गुंजा 'संयम ही जीवन है' नारा।।

तब चरणों में हुआ समर्पित उसको नव आकार दिया, अनगढ़ पत्थर में भी तुमने प्राणों का संचार किया। सबको आकर्षित करता था तेरा मनमोहक उजियारा।।

कितने संघर्षों को झेला फिर भी रहे अडिग प्रण में, जो सोचा वह करके दिखलाया बढ़ते रहे विरोधी क्षण में। राहों में आने वाले कांटों को तुमने सदा बुहारा।।

मैं कोई सम्राट नहीं हूं : आचार्य तुलसी

● मुनि आलोककुमार ●

युगप्रधान आचार्य तुलसी एक महान आचार्य थे। महान इसलिए नहीं कि उनकी यश-कीर्ति दिग्-दिगंत में फैली हुई थी, बल्कि इसलिए कि उन्हें सुविधावादी जीवन पसंद नहीं था। श्रमशीलता ही उनके जीवन का व्रत था, अखंड संकल्प था—इसीलिए वे महान थे। वे स्वयं श्रमशील जीवन जीते थे और अपने शिष्य-शिष्याओं को भी सदैव श्रमशीलता की प्रेरणा दिया करते थे। इसी कारण उन्होंने व्यवहार बोध में भी लिखा है—
प्रतिस्रोत का पथ जो हमने अपनाया है, खबरदार जो सुविधावाद पनप पाया है।

मैं अपना परम सौभाग्य मानता हूँ कि मुझे भी लगभग दो वर्षों तक गुरुदेव तुलसी की एकदम निकटता से सेवा करने का अवसर मिला। घटना उस समय की है जब गुरुदेव तुलसी लाडनू में जैन विश्व भारती में विराज

रहे थे। शाम लगभग चार बजे गुरुदेव पंचमी समिति के लिए जहां पधारते थे, वहां कई बार मैं स्वयं पूज्य गुरुदेव के लिए पानी आदि की व्यवस्था करता था। एक बार गर्मी का समय था। मैं पानी की पात्र रखने गया तो देखा कि वहां कुछ दूरी तक का रास्ता भयंकर धूप के कारण अत्यंत गरम हो गया था। मैंने तुरंत मुनि जम्बूकुमार जी को बुलाया और हम दोनों ने उस गरम फर्श पर कुछ दूरी तक कंबल बिछा दिया। कुछ समय बाद गुरुदेव तुलसी मेरे हाथों का सहारा लेकर पधार रहे थे। जैसे ही वे उस गरम स्थान के पास पहुंचे, उन्होंने कंबल बिछा हुआ देखा। उन्होंने थोड़ी अनुशासनात्मक शैली में पूछा—यह किसने बिछाया? हम घबरा गए, फिर भी मैंने ही हिम्मत करके कहा कि गुरुदेव, यहां की फर्श बहुत गरम है, इसलिए हमने यह बिछाया है।

पूज्य गुरुदेव ने थोड़े कठोर शब्दों में कहा—

'मैं कोई सम्राट नहीं हूँ! इतना भी सहन नहीं कर सकता क्या? हटाओ इनको।'

हमने विनती भी की, परंतु वे नहीं माने और अंततः साइड से होकर भीतर पधारे।

शौच का कार्य सम्पन्न होने के बाद जब वे बाहर पधारे, तब वे 'शासनश्री' मुनि श्री बालचंद जी स्वामी की ओर मुखातिब होते हुए प्रेम से बोले—

'बालजी! ये टाबरियां म्हारो किन्तो ध्यान राखे हैं। यानै पांच-पांच कल्याणक बक्षीस, और बालजी! थानै भी बक्षीस।'

हम दोनों बाल संत पूज्य गुरुदेव का असीम वात्सल्य पाकर एकदम गद्गद हो गए। इस तरह मैंने निकटता से उन्हें देखा और जाना कि वे कभी भी सुविधावाद के पक्षधर नहीं थे।

गणाधिपति पूज्य गुरुदेव श्री तुलसी के दीक्षा शताब्दी वर्ष की संपन्नता पर श्रद्धा प्रणति

विलक्षण व्यक्तित्व से सम्पन्न – आचार्य श्री तुलसी

● मुनि कुमुद कुमार ●

जीवन तो हर प्राणी जीता है, पर ऐसे लोग विरले होते हैं जो एक जीवन्त जीवन जीते हैं। ऐसे ही एक महापुरुष थे, जिन्हें दुनिया आचार्य श्री तुलसी के नाम से जानती है। मात्र ग्यारह वर्ष की आयु में उन्होंने गृहस्थ जीवन त्यागकर सन्यास का पथ स्वीकार कर लिया। बाईस वर्ष की अवस्था में वे धर्मसंघ के अधिशास्ता बन गए। लगभग साठ वर्षों तक उन्होंने गण का संचालन किया और अंत में नश्वर जीवन का संदेश देकर अमर बन गए। आचार्य श्री तुलसी का जीवन स्वयं में एक प्रेरणा है।

अप्रमत्त पुरुष

भगवान महावीर के सूत्र 'उड्डिए णो पमायए' को उन्होंने केवल पढ़ा ही नहीं, बल्कि पूरी तरह आत्मसात किया। तभी तो उम्र के उस पड़ाव पर, जहां सामान्य व्यक्ति विश्राम चाहता है, आचार्य श्री तुलसी स्वयं को कार्यक्षम मानते रहे। प्रातः चार बजे से रात्रि दस बजे तक सतत परिश्रम करना उनके लिए सामान्य बात थी। वे कभी थकते नहीं थे। आचार्य श्री तुलसी के निर्वाण के बाद उनके उत्तराधिकारी आचार्य श्री महाप्रज्ञ ने एक गीत में इस भाव को इन शब्दों में व्यक्त किया — 'जीवनभर काम करूंगा, गण का भंडार भरूंगा। संकल्प अटूट निभाया रे।'

किशोरावस्था में ही आचार्य श्री तुलसी पर शैक्षिक संतों को पढ़ाने का दायित्व था। उनका अनुशासन सहज प्रतीत होता, पर उसका लक्ष्य सदैव संतों का व्यक्तित्व निर्माण ही रहता था। प्रश्न उठता है कि गुरुदेव कालूगणी ने एक किशोर मुनि को यह दायित्व क्यों सौंपा? चिंतन करने पर स्पष्ट हो जाता है कि जो स्वयं जागरूक होता है, वही दूसरों को जागरण की प्रभावी प्रेरणा दे सकता है। वे अंतिम समय तक बाल संतों के निर्माण में जुटे रहे। कभी कोई संत कह देता, 'आज आपको अधिक परिश्रम हो गया है, बाकी अध्ययन कल कर लेंगे।' वे तुरंत कहते, 'क्यों? कल किसने देखा!' जो व्यक्ति समय को महत्व देता है, समय भी उसकी कद्र करता है।

विकास पुरुष

आचार्य श्री तुलसी ने अपने जीवन में जो भी सपना देखा, उसे पूरा किया। उनकी अभिलाषा थी कि आत्म-विकास के साथ धर्मसंघ का विकास हो, मानवता का विकास हो। वे इस दिशा में सदैव जागरूक और सक्रिय रहे। आत्म-विकास के लिए

वे खाद्य संयम, वाणी संयम और सर्वेन्द्रिय संयम के द्वारा स्वयं को साधते रहे। पूज्य कालूगणी की अंतिम शिक्षा को ध्यान में रखकर उन्होंने धर्मसंघ में शिक्षा, शोध और आध्यात्मिक नवाचारों के नए आयाम विकसित किए।

एक बार मुनि अवस्था में उन्होंने मुनि नथमल जी (आचार्य महाप्रज्ञ) से पूछा था, 'क्या तुम मेरे जैसे बनोगे?' मुनि नथमल जी ने उत्तर दिया, 'आप बनाएंगे तो बन जाऊंगा।' आचार्य तुलसी ने उन्हें न केवल अपने जैसा बनाया, बल्कि गण के शीर्ष शिखर तक पहुंचाया। इसी प्रकार मुनि मुदित को भी साधते हुए उन्होंने उन्हें आचार्य श्री महाश्रमण के पद तक पहुंचाया। साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा जी, जिन्होंने संपूर्ण साध्वी समाज का नेतृत्व किया, वे भी आचार्य तुलसी की अमूल्य देन हैं।

नैतिक और चारित्रिक मूल्यों के बिना जीवन का क्या अर्थ है? अधिकांश समस्याएं अनैतिकता से ही उत्पन्न होती हैं। इस सच्चाई को अनुभव कर उन्होंने झोपड़ी से लेकर सत्ता के महलों तक अणुव्रत का प्रकाश फैलाया। राष्ट्र की ज्वलंत समस्याओं के समाधान हेतु भी उनके अनेक कार्य इतिहास में दर्ज हैं। भारत सरकार द्वारा जारी डाक टिकट के अवसर पर कहा गया कि यह संपूर्ण राष्ट्र की ओर से उनके प्रति कृतज्ञता का प्रतीक है।

समता पुरुष

भगवान महावीर के दर्शन का मुख्य तत्व है समता। साधक का लक्ष्य जब आत्म-विकास और लोककल्याण होता है, तो समता की साधना आवश्यक होती है। आचार्य श्री तुलसी समता के जीते-जागते प्रतीक थे। उनके जीवन में जहां अपार सम्मान मिला, वहीं तीव्र विरोध भी झेलना पड़ा। उन्होंने अपने पूर्वाचार्यों की जीवन-शिक्षाओं को सामने रखकर विरोध की परवाह किए बिना सत्य के मार्ग पर बढ़ते रहना अपना नियम बना लिया था।

सन् 1984 में अणुव्रत अधिवेशन के विरोध में सांप्रदायिक तत्वों ने शहर की दीवारों पर पोस्टर चिपका दिए। अधिवेशन स्थल जाते समय आचार्य श्री ने उन्हें देखकर कहा, 'इन लोगों ने हमारा कितना हित किया! दोपहर की इस धूप में डामर की सड़क पर नंगे पांव चलना कठिन होता, पर इन पोस्टरों ने गर्मी के ताप से रक्षा कर

ली।' उन्होंने उसी अवसर पर कहा, 'जो हमारा करे विरोध, हम उसे समझें विनोद।' समता साधना का यह श्रेष्ठ उदाहरण है। वे कहते थे, 'मुझे जितना सम्मान मिला, उतना ही विरोध भी मिला। यदि केवल सम्मान मिलता तो अहं आ जाता, और केवल विरोध मिलता तो निराशा। इन दोनों ने मेरे जीवन में समता बनाए रखी।'

अनुशासन पुरुष

अनुशासन सफलता का अत्यंत महत्वपूर्ण सूत्र है। आचार्य श्री तुलसी सदैव अनुशासन का अनुसरण करते रहे। अनुशास्ता के लिए यह आवश्यक है कि वह सबको साथ लेकर चल सके। उसने आत्म-अनुशासन को इस रूप में साधा कि किसी को कठोरता भी न लगे और उद्देश्य भी पूरा हो जाए। उन्होंने कहा, 'निज पर शासन, फिर अनुशासन।' उन्होंने गलती के सुधार का पूरा अवसर दिया, पर जानबूझकर की गई भूलों पर दृढ़ अनुशासन भी किया। अच्छे कार्य के लिए प्रेरणा और प्रशंसा, तथा त्रुटि के लिए उचित मार्गदर्शन — यही एक कुशल अनुशास्ता की पहचान है।

विलक्षण पुरुष

आचार्य श्री तुलसी के जीवन के अनेक कार्य विलक्षण थे, जिनमें सबसे अद्भुत था अपने ही पद का विसर्जन। सत्ता के शिखर पर बैठे लोग इस पर आश्चर्यचकित रह गए। आज जहां व्यक्ति नाम, धन और पद प्राप्त करने की होड़ में लगा रहता है, वहीं आचार्य तुलसी ने इन सबसे ऊपर उठकर संसार को एक अद्वितीय उदाहरण दिया। लगभग छह दशकों तक गण का निर्देशन करने के बाद, पूर्ण सामर्थ्य के समय, जब अनुयायियों का अपार विश्वास उनके प्रति था, तब उन्होंने अपने पद का विसर्जन कर उत्तराधिकारी को प्रतिष्ठित किया।

समण श्रेणी की स्थापना भी उनका एक अनूठा योगदान है। ऐसी विलक्षणता के लिए अटूट साहस, समय की सटीक पहचान, आत्मविश्वास और दूरदर्शी सोच चाहिए होती है। इन्हीं गुणों के कारण आचार्य श्री तुलसी ने जितना जीवन जिया, वह एक जीवन्त जीवन था — अपने लिए, धर्मसंघ के लिए और समस्त मानवता के लिए। ऐसे ओजस्वी, तेजस्वी, यशस्वी, मनस्वी परम पुरुष आचार्य श्री तुलसी का 100वां दीक्षा दिवस केवल तेरापंथ धर्मसंघ ही नहीं, संपूर्ण मानव-जाति के लिए गौरव का क्षण है।

काल के भाल पर स्वर्णिम अक्षरों में अमिट नाम – आचार्य तुलसी

● मुनि चैतन्य कुमार 'अमन' ●

संयम: खलु जीवनम् — संयम ही जीवन है। जिनका जीवन संयमी था, जिन्होंने असंख्य जीवों को संयम की उत्कृष्ट साधना के मार्ग पर आरोहण हेतु दीक्षित किया, शिक्षित किया। जिन्होंने अनगिनत श्रावक-श्राविकाओं और भक्तों को संयम मार्ग पर आगे बढ़ने हेतु प्रेरित किया। ऐसे महान आत्मा गणाधिपति तुलसी के 100वें दीक्षा दिवस की पूर्णता प्रेरणा और गौरव का विषय है।

भारतीय संस्कृति का प्राण है संयम। संयम अर्थात् नियंत्रण। संयम सुख का राजमार्ग है। संयम किसका हो? जीवन की प्रत्येक क्रिया में। मन-वचन-काय — तीनों में संयम पुष्ट होना चाहिए। जहाँ वाणी, विचार, रहन-सहन और खान-पान का संयम नहीं होता, वहाँ शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक—सभी प्रकार की समस्याओं का जन्म होने लगता है। मन-वचन-काय की असत् प्रवृत्ति जहाँ होती है, वहाँ नित-नई समस्याएँ पैदा होना निश्चित है। संयमी साधक को संयम जीवन में जो आनंद प्राप्त होता है, वह असंयम में कभी संभव नहीं।

आचार्य तुलसी ने बाल्यावस्था में ही संयम मार्ग पर प्रस्थान कर दिया। जिस वय में बालक खाने-पीने, खेलने-कूदने में मग्न रहते हैं, उस उम्र में संयम स्वीकार कर उन्होंने आंतरिक चेतना को जागृत किया। ग्यारह वर्ष की आयु क्या होती है? इतनी छोटी उम्र में संयम अपना लेना, साधु बनकर साधना-पथ पर अग्रसर हो जाना किसी आश्चर्य से कम नहीं। बाल्यावस्था में ही साधु बनकर उन्होंने गुरु के प्रत्येक इंगित को समझा और उसी का परिणाम यह हुआ कि वे तेरापंथ जैसे एक आचार, एक विचार और एक आचार्य परंपरा वाले संगठित धर्मसंघ के आचार्य बने।

भौतिक सुख नहीं, बल्कि आध्यात्मिक सुख और शांति की चाह रखने वाला ही संयम के राजमार्ग पर चल सकता है। अणुव्रत का अमृतदान देकर उन्होंने प्यासी भारतीय धरा को

सरसब्ज कर दिया। सचमुच, अणुव्रत के अवदान से उन्होंने भारतीय जनमानस को झकझोर दिया। उनकी बड़ी सोच, दूरदर्शिता और व्यापक चिंतन ने लोगों के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाए।

अणुव्रत आंदोलन के माध्यम से सामान्य जन से लेकर देश के उच्च पदों पर आसीन व्यक्तियों तक उनका संपर्क हुआ, जिससे पूरे राष्ट्र में नैतिकता और चारित्रिक उत्थान की लहर उठी। जनमानस में शांतिपूर्ण जीवन के लिए तथा शिक्षा क्षेत्र में बालकों के उज्ज्वल भविष्य हेतु जीवन-विज्ञान का अवदान अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ। स्वयं आचार्य तुलसी और उनके यशस्वी उत्तराधिकारी आचार्य श्री महाप्रज्ञ के अनुपम सहयोग से तेरापंथ धर्मसंघ को गगनचुंबी ऊँचाइयाँ प्राप्त हुईं। उनके अवदानों को चिह्नित करते हुए भारत सरकार, प्रांतीय सरकारों तथा अनेक संस्थाओं ने उन्हें विविध अलंकरणों से विभूषित किया। तेरापंथ धर्मसंघ के इतिहास में आचार्य तुलसी का कार्यकाल काल के भाल पर स्वर्णिम अक्षरों में अंकित रहेगा—अमिट, अविस्मरणीय।

आज अनावश्यक संग्रह, बढ़ती विलासिता, अर्थार्जन की तीव्र लालसा, मनोरंजन के बढ़ते साधन, सौंदर्य प्रसाधनों का मोह, इंद्रियों के प्रति असंयम तथा इच्छाओं पर नियंत्रण का अभाव—ये सभी मानव जीवन के लिए खतरनाक मोड़ हैं। इस स्थिति में यदि व्यक्ति व्यक्तिगत, पारिवारिक और सामाजिक उपयोगिता को ध्यान में रखते हुए संयम की भावना को पुष्ट करे, तो समाज में सौहार्द, नैतिकता और नीति-निष्ठा कायम रह सकती है।

आचार्य श्री तुलसी के शतकीय दीक्षा दिवस की पूर्णता पर यदि मानवजाति संयम का संकल्प ले, तो भारत का भविष्य निश्चय ही स्वर्णिम बन सकता है। इस दीक्षा दिवस के शताब्दी वर्ष में हम सभी अधिक से अधिक संयम को जीवन में पुष्ट करने का संकल्प लें।

गणाधिपति पूज्य गुरुदेव श्री तुलसी के दीक्षा शताब्दी वर्ष की संपन्नता पर श्रद्धा प्रणति

महानता का मसीहा – आचार्यश्री तुलसी

● साध्वी प्रांजलप्रभा ●

आचार्य तुलसी जन्म से महान थे। महानता उनकी जन्मजात सहचरी थी। बचपन में दीक्षा ग्रहण की और फिर निरंतर अपने ओज व तेज से आगे बढ़ते गए। उन्होंने स्वयं जागृत जीवन जिया और दूसरों को भी जागृत जीवन जीने के सूत्र दिए। वे 19वीं-20वीं सदी के महान करिश्माई व्यक्तित्व थे। विश्व इतिहास में वे ऐसे महान संत थे जिन्होंने अपनी शक्ति, क्षमता, प्रभाव और गतिशीलता से धर्मसंघ का विकासशील नेतृत्व किया तथा मानवता का उत्थान कर अंतरराष्ट्रीय जगत में ख्याति प्राप्त महापुरुष बने।

उस महान पुरुष की महानता को समझने के लिए महानता के नियमों को जानना आवश्यक है। जिस प्रकार गणितज्ञ बनने के लिए गणित के नियम, वैज्ञानिक बनने के लिए विज्ञान के नियम और कलाकार बनने के लिए कला के नियम जानना आवश्यक है, उसी प्रकार महान बनने के लिए महानता के नियमों को जानना जरूरी है। आचार्य तुलसी महान पुरुष बने और उनकी महानता का पहला आधार था —

नया काम करने का साहस

आचार्य तुलसी में नया काम करने का साहस था। नवीन कार्यों का जोखिम लेना उनके स्वभाव का विशिष्ट गुण था। भृगु संहिता में वर्णित उनकी दस भविष्यवाणियों में से एक थी — आचार्य तुलसी नई रेखाएं खींचेंगे। नूतन कार्य करने का यह उत्साह ही उस विकास पुरुष के विकास का आधार बना। यही कारण था कि उन्होंने लगभग हर दशक में कोई नया कार्य किया।

लाडनू का प्रसंग है। आचार्य श्री महाप्रज्ञ के सान्निध्य में अमृतवाणी के जेसराज सेखानी, आचार्य तुलसी के कार्यक्रमों की वीडियो कैसेट दिखा रहे थे। उनमें आचार्य तुलसी की अनेक मुद्राएं और विविध दृश्य दिखाई दे रहे थे। उनके मुख-विन्यास इतने आकर्षक होते थे कि दर्शक तुरंत प्रभावित हो जाता था। कैसेट रुकते ही आचार्य महाप्रज्ञ मुस्कराए और बोले — वैष्णव धर्म में भगवान कृष्ण को लीला पुरुष कहा गया है, पर मुझे लगता है कि आचार्य तुलसी भी किसी लीला पुरुष से कम नहीं थे। वे केवल भाव-मुद्राओं के कारण ही नहीं, बल्कि अपने नवीन चिंतन, नवीन अवदानों और नवीन कार्यों के कारण लीला पुरुष कहलाने योग्य थे।

वाणी का तीव्र प्रयत्न

आचार्य तुलसी की महानता का दूसरा आधार था उनकी वाणी का तीव्र प्रयत्न। मध्याह्न का समय था। आचार्य महाप्रज्ञ के सान्निध्य में प्रज्ञापना सूत्र के 11वें पद पर विचार-विमर्श चल रहा था। आचार्य महाप्रज्ञ बोले — जब वाणी में तीव्र प्रयत्न होता है, तो भाषा के पुद्गल लोकांत तक जाते हैं। आचार्य तुलसी बोलते समय वही तीव्र प्रयत्न करते

थे। तीव्र प्रयत्न का अर्थ केवल जोर से बोलना नहीं, बल्कि ऐसा मौलिक प्रभाव पैदा करना जिससे वाणी श्रोता के भीतर को झकझोर दे, उसे प्रेरित कर दे।

सन् 1991 का प्रसंग है। मुझे मुमुक्षु श्रेणी से पर्युषण यात्रा हेतु प्रस्थान करना था। यह मेरी पहली यात्रा थी जिसमें मैं मुखिया बनकर जा रही थी। मन में भय था कि यह जिम्मेदारी कैसे निभाऊंगी। आचार्य प्रवर का मंगलपाठ सुनते समय मेरा भय आँखों से आँसुओं के रूप में बहने लगा। पूज्य गुरुदेव ने मेरी ओर देखते हुए तीव्र ओजस्वी वाणी में कहा — चिंता क्यों करती हो? जो चोंच देता है, वह चुगा भी देता है। यह ओजपूर्ण वाणी का ही प्रभाव था कि मेरी आँखों में आशा और पैरों में गति आ गई। अणुव्रत आंदोलन मानव संस्कृति, नैतिक क्रांति और विश्व-शांति का शंखनाद बना, और भावना को उत्साह का ओज मिला जिससे पर्युषण यात्रा सफल हुई।

संघ-विकास का सतत चिंतन

आचार्य तुलसी की महानता का तीसरा आधार था — संघ विकास का चिंतन। आचार्य महाप्रज्ञ ने तेरापंथ के ऐतिहासिक स्थल गंगाशहर के शक्तिपीठ पर कहा था कि गुरुदेव को अपने शरीर से अधिक संघ की चिंता रहती थी। हर पल यही विचार मन में रहता था कि मेरा संघ कैसे प्रगति करे। शायद वे देवलोक में भी संघ-विकास का ही चिंतन कर रहे होंगे।

विकास पुरुष आचार्य तुलसी ने संघ की तेजस्विता के लिए समय-समय पर अनेक नवीन और अभूतपूर्व आयाम प्रस्तुत किए—

- पारमार्थिक शिक्षण संस्थान व समण श्रेणी की स्थापना
- आगम संपादन
- साधु-साध्वी समाज में शिक्षा, शोध, सेवा और कला का विकास
- साधना-विकास हेतु अनुशासन, प्रेक्षा, स्वाध्याय, संयम और भावनात्मक एकता
- योगक्षेम वर्ष जैसे आयोजनों का प्रारंभ
- विशाल साहित्य-सृजन
- सुदूर विहार यात्राएँ

आचार्य तुलसी को महान बनाने वाला एक और आधार था — मानवता का विकास। उनका संपूर्ण जीवन मानवतावादी दृष्टिकोण के प्रति समर्पित था। वे मानवता और मानव धर्म के उद्घोषक, प्रचारक और संपोषक थे। अपना परिचय देते समय कहते थे — मैं पहले मानव, फिर जैन, और जैनों के एक संप्रदाय तेरापंथ का आचार्य। जो मानव बन गया, वह जैन, हिन्दू, मुसलमान, ईसाई — सबकुछ बन गया। यदि मानव मानव नहीं बना, तो कुछ भी नहीं बना। उनका यह उद्घोष उन्हें मानवता के मसीहा के रूप में प्रतिष्ठित करता है।

राष्ट्र संत आचार्य श्री तुलसी

● निखिल बांठिया, बैंगलोर ●

वह समय, जब आज़ादी सिर्फ नारा नहीं — हर दिल की धड़कन बन चुकी थी। हर ओर स्वराज का नारा गूंज रहा था, और भारत विदेशी शासन की बेड़ियों तोड़ने के लिए संघर्षरत था। यह केवल राजनीतिक संघर्ष नहीं था, बल्कि आत्मसम्मान, एकता और जागृति का भी युद्ध था। इसी दौर में, जब राष्ट्र बाहरी स्वतंत्रता के लिए जूझ रहा था, एक और क्रांति चुपचाप जन्म ले रही थी — वह क्रांति राजनीति की नहीं, बल्कि आत्मा की थी। इस आध्यात्मिक क्रांति के केंद्र में थे आचार्य श्री तुलसी, जिन्होंने समझा कि सच्ची स्वतंत्रता केवल सत्ता परिवर्तन से नहीं, बल्कि अंतःकरण के शुद्धिकरण से मिलती है।

दायित्व का प्रथम क्षण

जरा सोचिए — बाईस वर्ष की आयु। जीवन का वह समय जब अधिकतर युवा अपने भविष्य की दिशा ढूँढ़ रहे होते हैं, विचारों में उत्साह होता है और अनुभव अभी आकार ले रहा होता है। ऐसे समय में, आचार्य श्री तुलसी के सामने आया एक अप्रत्याशित आह्वान — तेरापंथ संघ का नेतृत्व संभालने का। यह समाचार सुनकर पूरा संघ कुछ क्षण के लिए स्तब्ध रह गया, और स्वयं वे भी मौन हो गए। इतनी कम आयु में यह विराट जिम्मेदारी! हृदय में गर्व से अधिक विनम्र भय था — कहीं यह योग्यता मुझमें है भी या नहीं? पर यही वह क्षण था जब उनके भीतर का साधक जागा।

उन्होंने इस दायित्व को चुनौती नहीं, तपस्या के रूप में स्वीकार किया। उन्होंने अपने भीतर निश्चय किया कि यह पद प्रतिष्ठा का नहीं, सेवा का माध्यम बनेगा। वे जानते थे कि नेतृत्व का अर्थ आदेश देना नहीं, बल्कि अनुशासन, समर्पण और त्याग के द्वारा उदाहरण बनना है। अपने गुरु की आज्ञा और आशीर्वाद का स्मरण करते हुए उन्होंने मन ही मन कहा — 'यह मार्ग कठिन है, पर गुरु की दृष्टि मेरा संबल बनेगी।' और इसी समर्पण ने उन्हें वह शक्ति दी, जो आगे चलकर केवल संघ ही नहीं, समाज के नैतिक जीवन को भी दिशा देने वाली बनी।

संघ-संयम और आत्म-विकास का काल

कम उम्र में इतना बड़ा दायित्व मिलने पर आचार्य श्री तुलसी का पहला विचार था — 'मुझे स्वयं को तैयार करना है।' वे जानते थे कि अब वे वह केंद्र हैं, जहाँ हर साधु-साध्वी अपने प्रश्नों के उत्तर खोजने आएंगे। इसलिए उन्होंने अपने विहार-क्षेत्र को सीमित रखा और अध्ययन, मनन तथा संघ के विकास पर ध्यान केंद्रित किया। उन्होंने संघ के संगठन को नई दिशा दी — साधु-साध्वियों की शिक्षा पर बल दिया, और यह संदेश दिया कि समय के साथ चलना आवश्यक है, पर मूल्यों से विचलन नहीं होना चाहिए। युवा आयु में ही यह परिपक्व दृष्टि उनके नेतृत्व की पहचान बन गई।

महिला सशक्तिकरण

वह समय ऐसा था जब अधिकतर स्त्रियाँ घूँघट के भीतर अपनी पहचान दबाकर जीती थीं। घर के आँगन

से बाहर कदम रखना भी संकोच और सामाजिक डर से भरा होता था। पर तभी आचार्य श्री तुलसी ने एक अलग ही आवाज़ उठाई — आवाज़ यह नहीं कि परंपरा तोड़ दो, बल्कि यह कि 'नारी को ओट में मत रखो, उसे उभरने दो।' इसलिए उन्होंने साध्वी-संघ की शिक्षा, प्रशिक्षण और नेतृत्व पर विशेष ध्यान दिया। सैकड़ों साध्वियाँ जो कभी संकोच में रहती थीं, उनकी प्रेरणा से पढ़ने-लिखने लगीं और समाज के सामने नए आत्मविश्वास से खड़ी होने लगीं। साध्वी कनकप्रभा जी इसका सबसे उजला उदाहरण बनीं। संकोच से भरी एक साध्वी से वे आगे चलकर तेरापंथ साध्वी-संघ की साध्वीप्रमुखा बनीं— नेतृत्व, लेखन और गंभीर चिंतन की धनी। उनकी प्रगति यह दिखाती है कि जब अवसर मिलता है, तो नारी केवल आगे नहीं बढ़ती— वह मार्ग बनाती है। और यही सबसे बड़ा परिवर्तन था — नारी अब सिर्फ घर की दीवारों के पीछे नहीं, समाज की नैतिक दिशा तय करने में भी सहभागी बनने लगी।

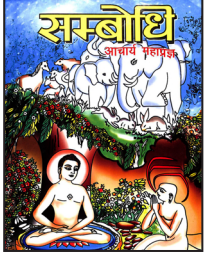
अणुव्रत

जब धर्म आचरण से कट जाए, तब छोटे व्रत बड़ी क्रांति बनते हैं। स्वतंत्र भारत में आचार्य श्री तुलसी ने देखा कि देश राजनीति से तो आज़ाद था, पर समाज भीतर से कमज़ोर— धर्म मंदिरों तक सिमट गया था और व्यवहार में प्रामाणिकता घटती जा रही थी। झूठ, अनुचित लाभ, भ्रष्टाचार, क्रोध और नशा जीवन का सामान्य हिस्सा बनते जा रहे थे। मनुष्य पूजा में श्रद्धावान था, पर व्यवहार में सत्य से दूर होता जा रहा था। उन्हें लगा कि राष्ट्र को सुधारने के लिए बड़े अनुष्ठानों की नहीं, छोटे, सरल और व्यवहारिक संकल्पों की आवश्यकता है— ऐसे संकल्प जिन्हें हर व्यक्ति अपनी दिनचर्या में निभा सके। इसी सोच से जन्म हुआ अणुव्रत आंदोलन: सत्य बोलना, नशा न करना, हिंसा और क्रोध पर संयम, ईमानदारी, न्याय, भेदभाव से दूर रहना, और जीवन में सरलता व करुणा बनाए रखना। अणुव्रत आज भी उतना ही आवश्यक है, क्योंकि तेज़ रफ़्तार जीवन में सत्य, संयम और ईमानदारी पहले से कठिन हो गए हैं। यह आंदोलन याद दिलाता है कि प्रगति तभी सार्थक है जब मनुष्य अपने मूल्यों को नहीं खोता— क्योंकि चरित्र ही मानव जीवन की सबसे बड़ी पूँजी है।

राष्ट्र संत

बाईस वर्ष की आयु में आचार्यपद स्वीकारते हुए आचार्य श्री तुलसी ने शक्ति नहीं, चरित्र को नेतृत्व का आधार बनाया। उन्होंने पहले अपने भीतर अनुशासन जगाया, फिर उसी प्रकाश को संघ और समाज में फैलाया— सत्य, संयम और प्रामाणिकता को राष्ट्र के जीवन में बसाने के लिए। उनकी दृष्टि स्पष्ट थी: देश तभी आगे बढ़ेगा जब उसके नागरिक भीतर से सच्चे हों। इसी नैतिक जागरण की यात्रा उन्हें केवल तेरापंथ का आचार्य नहीं, बल्कि भारत को दिशा देने वाला एक राष्ट्रसंत बनाती है।

संबोधि

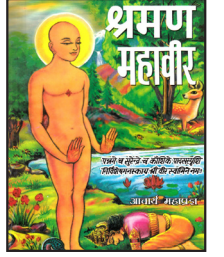


परिशिष्ट



-आचार्यश्री महाप्रज्ञ-

श्रमण महावीर



क्रान्ति का सिंहनाद

कुछ समाज में धारणाएं भी प्रचलित हो गई कि अमुक अमुक तप होने ही चाहिए। कोई न करे या किसी से न हो तो वह अपने आप में हीनता का अनुभव करने लगता है। दूसरे लोग भी जैसे-तैसे प्रेरित करते रहते हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि 'तप' तो जीवित रहा किन्तु उसका मूल हार्द गौण हो गया। एक और भी बात है कि तप अच्छा है, प्रीतिकर है तो किसी विशेष समय में कर उसकी इति श्री क्यों कर दी जाती है? मौसमी फूलों की तरह क्या उसका मौसम होता है? महावीर को उसमें आनंद था तो वह सतत चल रहा था। उन्होंने तप के अनुष्ठान के लिए कोई दिन, महीना निर्धारित नहीं किया था। उसकी उन्हें जरूरत थी, रस था और ध्येय में सहयोगी था, इसलिए सदा समुचित प्रयोग करते रहे। किन्तु बाद में कुछ तिथियां और महीने निश्चित से हो गए। बस, वह समय आता है और दौड़-धूप शुरू हो जाती है। बरसात की नदियों की तरह फिर वह शान्त हो जाता है। तप वैसा नहीं है। वह तो गंगा की पवित्रतम धारा की भांति है जो सागर में मिल कर ही आश्वस्त होती है।

ज्ञान और दर्शन चैतन्य का स्वभाव है। उसके लिए स्वतंत्र कोई विशेष आयास नहीं करना होता है। वे चरित्र तप की साधना के परिणाम मात्र हैं। साधना जो है, वह है तपोयोग की। जो कुछ सार-सत्य होता है, वह इससे ही होता है। तप का महत्त्व इसलिए है कि वह समस्त आवरणों को जलाकर चैतन्य को अपने स्वच्छ रूप में प्रस्तुत करता है। आवृत ज्ञान और दर्शन को अनावृत भी यही करता है। इस दृष्टि से तप के सम्बन्ध में बहुत सजग, विवेकवान् और विज्ञ होना चाहिए। अज्ञान तप कष्टकर होता है, साधना में सहायक नहीं है। महावीर ने कहा है-

'मासे मासे तु जो बालो, कुसगणे तु भुंजए।
न सो सुयक्खायधम्मस्स, कलं अग्घइ सोलसिं॥

अज्ञानी व्यक्ति महीने महीने का उपवास कर कुश के अग्रभाग पर टिके इतना-सा भोजन करके भी शुद्ध धर्म की सोलवीं कला का भी स्पर्श नहीं करता। बुद्ध ने कहा है- 'नासमझ तप भी करते हैं तो भी नरक में जाते हैं। जिन दो अतियों से बचने की बात कही है उनमें से एक है शरीर को व्यर्थ सताना। श्रोण नाम का राजकुमार भिक्षु भोग से तप की दूसरी अति पर जब उतर गया तब कुछ भिक्षुओं ने बुद्ध से कहा। बुद्ध श्रोण के पास आये और बोले-श्रोण ! तुम कुशल विणावादक थे।

'हां भन्ते।'

'वीणा बजाने के नियम से परिचित हो ?'

'हां भन्ते।'

'क्या तार बिलकुल ढीले होते हैं तब वीणा बजती है?'

'नहीं।'

'क्या श्रोण ! वीणा के तार बहुत कसे हुए होते हैं, तब वीणा बजती है।'

'नहीं भन्ते।'

'श्रोण ! वही नियम साधना का है।'

(क्रमशः)

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ की तपस्वी साध्वियां

आचार्यश्री रायचंद जी युग

साध्वीश्री जेतांजी (सूखाल) दीक्षा क्रमांक 201

साध्वीश्री आचार-विचार में निर्मल, प्रकृतिभद्र, विनयवती और सेवार्थिनी थी। आपने उपवास से लेकर 13 दिन तक तपस्या की।

- साभार : शासन समुद्र -

उचित अवसर देख मृगावती बोली- 'भंते ! मैं आपकी वाणी से बहुत प्रभावित हुई। महाराज चण्डप्रद्योत मुझे स्वीकृति दें और वत्स के राजकुमार उदयन की सुरक्षा का दायित्व अपने कंधों पर लें तो मैं साध्वी होना चाहती हूं।'

चण्डप्रद्योत का सिर नत और मन प्रणत हो गया। अहिंसा के आलोक में वासना का अंधतमस् विलीन हो गया। उसने उदयन का भाग्यसूत्र अपने हाथ में लेना स्वीकार कर लिया, आक्रामक संरक्षक बन गया। मृगावती को साध्वी बनने की स्वीकृति मिल गई। कौशांबी की जनता हर्ष से झूम उठी। युद्ध के बादल फट गए। मृगावती का शील सुरक्षित रह गया। उज्जयिनी और वत्स दोनों मैत्री के सघन सूत्र में बंध गए।

भगवान् मैत्री के महान् प्रवर्तक थे। उन्होंने जन-जन को मैत्री का पवित्र पाठ पढ़ाया। उनका मैत्री-सूत्र है-

'मैं सबकी भूलों को सह लेता हूं,

वे सब मेरी भूलों को सह लें।

सबके साथ मेरी मैत्री है,

किसी के साथ मेरा वैर नहीं है।'

इस सूत्र ने हजारों-हजारों मनुष्यों की आक्रामक वृत्ति को प्रेम में बदला और शक्ति के दीवत पर क्षमा के दीप जलाए।

सामाजिक जीवन में भिन्न-भिन्न रुचि, विचार और संस्कार के लोग होते हैं।

भिन्नता के प्रति कटुता उत्पन्न हो जाती है। द्वेष की ग्रन्थि घुलने लगती है। वही समय पर आक्रामक बन जाती है।

भगवान् ने इस ग्रंथि-मोक्ष के तीन पर्व निश्चित किए-

१. पाक्षिक आत्मालोचन।

२. चातुर्मासिक आत्मालोचन।

३. सांवत्सरिक आत्मालोचन।

किसी व्यक्ति के प्रति मन में वैर का भाव निर्मित हो तो उसे तत्काल धो डाले, जिससे वह ग्रंथि का रूप न ले। भगवान् ने साधुओं को निर्देश दिया- 'परस्पर कोई कटुता उत्पन्न हो तो भोजन करने से पहले-पहले उसे समाप्त कर दो।' एक बार एक मुनि भगवान् के पास आकर बोला- 'भंते। आज एक मुनि से मेरा कलह हो गया। मुझे उसका अनुताप है। अब मैं क्या करूं?'

भगवान् - 'परस्पर क्षमा-याचना कर लो।'

मुनि- 'भंते ! मेरा अनुमान है कि वह मुझे क्षमा नहीं करेगा।'

भगवान् - 'वह तुम्हें क्षमा करे या न करे, आदर दे या न दे, तुम्हारे जाने पर उठे या न उठे, वंदना करे या न करे, साथ में खाए या न खाए, साथ में रहे या न रहे, कलह को शान्त करे या न करे, फिर भी तुम उसे क्षमा करो।'

मुनि- 'भंते ! मुझे अकेले को ही ऐसा क्यों करना चाहिए?'

भगवान् - 'श्रमण होने का अर्थ है शान्ति। श्रमण होने का अर्थ है मैत्री। तुम श्रमण होने का अनुभव कर रहे हो, इसलिए मैं कहता हूं कि तुम अपनी मैत्री को जगाओ। जो मैत्री को जागृत करता है, वह श्रमण होता है। जो मैत्री को जागृत नहीं करता, वह श्रमण नहीं होता।'

इस जगत् में सब लोग श्रमण नहीं होते। श्रमण भी सब समान वृत्ति के नहीं होते। इस वस्तु-स्थिति को ध्यान में रखकर भगवान् ने कहा-यदि तत्काल मैत्री की अनुभूति न कर सको तो पक्ष के अंतिम दिन में अवश्य उसका अनुभव करो। पाक्षिक दिन भी उसकी अनुभूति न हो सके तो चातुर्मासिक दिन तक अवश्य उसे विकसित करो। यदि उस दिन भी उसका अनुभव न हो तो सांवत्सरिक दिन तक अवश्य ही उसका विकास करो। यदि उस दिन भी द्वेष की ग्रंथि नहीं खुलती है, सबके प्रति मैत्री-भावना जागृत नहीं होती है तो समझो कि तुम सम्यग् दृष्टि नहीं हो, धार्मिक नहीं हो।' (क्रमशः)

धर्म है उत्कृष्ट मंगल



धर्म है
उत्कृष्ट मंगल

आचार्य महाश्रमण

-आचार्यश्री महाश्रमण

समाज-सुधार के सूत्रधार :
गुरुदेव श्री तुलसी



वस्तुतः जाति से कोई गंवार नहीं होता। मनुष्य अपनी नासमझी के कारण ही गंवार कहलाता है।

धराहरा जिण केवली

करेडा- १४-६-८५

परमाराध्य आचार्य प्रवर के सान्निध्य में भगवती व्याख्याप्रज्ञप्ति सूत्र का वाचन चल रहा था। विद्यार्थी एवं सूत्र-रसपिपासु साधु-साध्वियों का समुदाय सम्मुखीन था। जिज्ञासु समणीगण भी वहीं थीं। उसमें एक पाठ आया - 'उप्यण्णणाणदंसण धरा अरहा जिणा केवली'। इस पाठ को सुनकर श्रद्धास्पद आचार्यवर ने फरमाया-जब-जब मैं इस पाठ को सुनता हूँ, एक सरस संस्मरण मेरी स्मृतिसृति पर अवतरित हो जाता है— लाडलू नगरवासिनी महिला मोहनलाल खटेड़ की मौसी सास /श्वशुर चुन्नीलाल जी की धर्म पत्नी एक तत्त्वज्ञ श्राविका थी। उसे अनेक थोकड़े कण्ठस्थ थे। एक बार वह मेरे पास आई और प्रश्न उपस्थित करते हुए बोली- गुरुदेव ! थोकड़ों में एक जगह आता है-'धराहरा जिण केवली'। इसका तात्पर्य क्या है?

वस्तुतः पाठ उप्यण्णणाणदंसण धरा अरहा जिणा केवली' था पर भाषाशास्त्रीय अल्पज्ञता के कारण उस वयोवृद्धा ने उप्यण्णणाणदंसण को एक तरफ कर दिया। 'अरहा' को 'हरा' बना दिया और उस बहिन का अपना मुंहजमा पाठ बन गया— 'धरा हरा जिण केवली'!

मैंने अनेक व्यक्तियों के समक्ष इस प्रश्न को उपस्थित किया, पर कोई भी इसका अर्थ स्पष्ट करने में समर्थ नहीं हुआ। अन्ततोगत्वा मैंने भगवती सूत्र पर दृष्टिपात किया। फलस्वरूप पता चला कि प्रश्न-कारिका बहिन अपूर्ण और अशुद्ध पाठ बोल रही है। पूर्ण और शुद्ध पाठ- उप्यण्णणाणदंसण धरा अरहा जिणा केवली है जिसका अर्थ है-उत्पन्न ज्ञान-दर्शन के धारक अरिहन्त जिन (जेता या ज्ञानी) और केवली।

कभी-कभी अनभिज्ञता और अजागरूकता के कारण सरल तथ्य भी अबूझ पहली का रूप धारण कर लेते हैं।

शिक्षा-द्वयी

परमाराध्य आचार्य प्रवर आसीन्द नगर में विराजमान थे। ब्रह्ममुहूर्त का समय था। सभी संत आचार्यवर के समीप आसीन थे। आज रात्रि में मच्छरों का साम्राज्य था। जिससे आचार्यप्रवर बहुत कम नींद ले पाए। इसी बात का जिक्र करते हुए गुरुवर ने कहा- आज रात को तो वह आगम-वाणी बहुत याद आ रही थी-

पुट्टो य दंसमसएहिं, समरेव महामुणी।

नागो संगाम सीसे वा, सूरु अभिहणे परं ।।

गुरुदेव ने संतों से पूछा कि यह 'समरेव' क्या है? अनेक संतों ने यही उत्तर दिया कि समर यानी युद्ध।

आचार्य प्रवर ने कहा- युद्ध अर्थ का द्योतक शब्द 'संगाम सीस' आगे आया है फिर यहां 'युद्ध' अर्थ कैसे होगा? अन्ततोगत्वा शब्द को शल्य-चिकित्सा करते हुए गुरुदेव ने कहा- यहां 'सम एव' शब्द है अर्थात् समभाव में रहे। रकार का आगम होने से समरेव बन गया है।

इस पूरी गाथा का अर्थ इस प्रकार है- डांस और मच्छरों का उपद्रव होने पर महामुनि समभाव में रहे, क्रोध आदि का वैसे ही दमन करे, जैसे युद्ध के अग्रभाग में स्थित हाथी बाणों को नहीं गिनता हुआ शत्रुओं का हनन करता है।

आचार्यवर ने इस गाथा के माध्यम से भाषा-शास्त्र और परीषह- विजय दोनों के बारे में संत-मण्डली को शिक्षा प्रदान की।

उपहार

'बेमाली' नामक एक छोटा-सा कस्बा, जहां पर परमाराध्य आचार्यवर ससंघ विराजमान थे। एक ग्रामीण भाई, जिसके शरीर पर वार्धक्य के लक्षण परिलक्षित हो रहे थे, आचार्य प्रवर के समीप आया और करबद्ध होकर बोला - 'महाराज! आज से बाईस वर्ष पूर्व आपश्री का यहां आगमन हुआ था। उस समय एक उपहार मैंने श्रीचरणों में भेंट किया था। वह उपहार एक संकल्प का था कि मैं आजन्म मृत्यु-भोज में भोजन नहीं करूंगा। आज पुनः आपश्री के चरण मेरे गांव में टिके हैं। इस शुभ अवसर पर मैं एक उपहार और आपको भेंट करना चाहता हूँ, जिसे स्वीकार कर मुझे कृतार्थ करें- जीवन पर्यन्त मैं (बीड़ी) धूम्रपान नहीं करूंगा।' इसी भांति महाजन लोग मिलावट आदि न करने के लिए कृतसंकल्प होते, अन्य जन मदिरापान आदि का परित्याग करते। कुछ लोग ब्याज की मात्रा को सीमित करते।

(क्रमशः)

संघीय समाचारों का मुखपत्र



तेरापंथ टाइम्स

की प्रति पाने के लिए क्यूआर कोड
स्कैन करें या आवेदन करें

<https://abtyp.org/prakashan>

समाचार प्रकाशन हेतु

abtypptt@gmail.com पर ई-मेल अथवा 8905995002
पर व्हाट्सअप करें।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

| दिसम्बर 2025 | |
|---------------------|---|
| सप्ताह के विशेष दिन | |
| 15 दिसम्बर | भगवान पार्श्वनाथ दीक्षा कल्याणक |
| 16 दिसम्बर | भगवान चन्द्रप्रभु जन्म कल्याणक दिवस |
| 17 दिसम्बर | भगवान चन्द्रप्रभु दीक्षा कल्याणक |
| 18 दिसम्बर | भगवान शीतलनाथ केवलज्ञान कल्याणक |
| 19 दिसम्बर | पक्खी |

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के तपस्वी संत

आचार्यश्री कालूरामजी युग

मुनिश्री खूबचंदजी (लुहारी) दीक्षा क्रमांक 448

मुनिश्री ने उपवास से नौ दिन तक लड़ी बद्ध तप किया। आठ माह एकान्तर किये। आपके कुल तप की तालिका इस प्रकार है- उपवास/92, 2/11, 3/3, 4/3, 5/3, 6/2, 7/3, 8/3, 9/2।

मुनिश्री सं 1993 ब्यावर में आचार्यश्री तुलसी के पास लघुसिंह निष्क्रीडित तप की चौथी परिपाटी प्रारंभ की। नौ दिन तक चढ़ने के बाद वापस उतरते समय सात दिन के तप में पांचवें दिन बोरियापुर में समाधि पूर्वक पंडित-मरण को प्राप्त किया। मुनिश्री साधक बाईस साल की अवस्था में घोर तप कर अपना कल्याण किया।

- साभार : शासन समुद्र -

आचार्य श्री तुलसी के 112वें जन्म दिवस पर विविध आयोजन

रेलमगरा

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के नवम आचार्य, आचार्य श्री तुलसी एक ऐसे संत थे जो दूरदृष्टि, क्रांति के प्रवर्तक, करुणा के सागर और संस्कृति के शिल्पी थे। उन्होंने कई अनमोल ग्रंथों की रचना की, साथ ही अर्हत वंदना, अणुव्रत गीत से नई पहचान दिला तेरापंथ को शिखर तक पहुंचाया। उन्होंने जो गीत लिखे उन्हें जब गाते तो आत्मा को छू जाते। आज उनके दुवारा लिखित तेरापंथ प्रबोध तेरापंथ की पहचान बन गया। उनके सामने कई अवरोध आये परन्तु उनकी त्याग तपस्या के सामने टिक नहीं पाए, ऐसे महा मनीषी थे। उन्होंने साधना को समाज-सुधार से जोड़ा और अणुव्रत आंदोलन के माध्यम से न केवल तेरापंथ धर्मसंघ को, बल्कि समस्त मानवता को नैतिकता, संयम और अहिंसा का सार्वभौमिक संदेश दिया। आचार्य तुलसी ने धर्म को केवल पूजा या अनुष्ठान तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उसे जीवन-साधना और सामाजिक चेतना का माध्यम बनाया। उन्होंने हजारों किलोमीटर की पदयात्रा कर हर वर्ग के व्यक्ति से संवाद किया — गरीब की झोपड़ी से लेकर राष्ट्रपति भवन तक उनके विचारों का प्रभाव पहुँचा। वे सामाजिक क्रांति के नायक थे — जिनके मार्गदर्शन से समाज में बाल विवाह, पर्दा प्रथा, मृत्युभोज और दहेज जैसी कुप्रथाओं पर अंकुश लगा। उन्होंने नारी शिक्षा का दीप प्रज्वलित किया, जिसकी आभा आज हर क्षेत्र में झलकती है। आज महिलाएँ डॉक्टर, प्रशासक, पुलिस अधिकारी, सैनिक और अंतरिक्ष यात्री बनकर समाज का गौरव बढ़ा रही हैं — यह सब आचार्य श्री तुलसी की दूरदृष्टि और प्रेरणा का परिणाम है। आज सरकारें भी उनके विचारों को अपनाकर जन-जन को प्रेरित कर रही हैं, ताकि देश विकसित और नैतिक मूल्यों पर आधारित बन सके। उनका चिंतन — महिला सशक्तिकरण, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और सामाजिक समरसता जैसे विषयों पर — आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना उनके जीवनकाल में था। आत्ममंथन का समय — क्या हम नई कुरुतियाँ गढ़ रहे हैं? आज जब हम आचार्य तुलसी के जन्मोत्सव को अणुव्रत दिवस के रूप में मना रहे हैं, तो यह आत्मचिंतन का अवसर भी है। गुरुदेव तुलसी ने हमें जिन कुरुतियों और रूढ़िवाद से मुक्त कराया, क्या हम आज नई विवृतियाँ तो नहीं गढ़ रहे? प्रि-वेडिंग शूट्स, दिखावटी डांस, शादी

समारोहों में फिजूलखर्ची और मृत्युभोज के नए रूप — क्या ये सब हमारे संस्कारों और सामाजिक मूल्यों को कमजोर नहीं कर रहे? कुछ स्थानों पर इनका परिणाम संबंधों में तनाव और समाज की छवि पर धब्बे के रूप में देखा जा रहा है। गुरुदेव आचार्य श्री तुलसी हमें भले ही भौतिक रूप से छोड़कर चले गए हों, पर उनका पाथेय और मार्गदर्शन आज भी हमारे साथ है। आइए, हम उनके आदर्शों की पुनः स्थापना करें — संस्कार, सादगी और संयम की भावना को फिर से जीवंत करें। उनके दिए अवदानों और अणुव्रत के संदेशों के अनुरूप अपने समाज को संस्कारयुक्त, सशक्त और सहिष्णु बनाएं — तभी उनका जन्मोत्सव मनाना वास्तव में सार्थक होगा।

जोरावरपुरा

तेरापंथ भवन में आचार्य श्री महाश्रमण जी सुशिष्या शासन श्री साध्वी बसंत प्रभा जी आदि ठाणा - 4 के सान्निध्य में आचार्य श्री तुलसी का जन्म दिवस मनाया गया। साध्वी श्री बसंतप्रभा जी ने कहा जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के नौवें आचार्य थे, जिनका जन्म 20 अक्टूबर 1914 को राजस्थान के लाडनूं में हुआ था। उन्होंने दीक्षा 5 दिसंबर 1925 को 11 साल की उम्र में, अपने गुरु अष्टम आचार्य श्री कालूगणी के मार्गदर्शन में, उन्होंने दीक्षा ग्रहण की और उन्हें 22 वर्ष की अल्प आयु में ही तेरापंथ धर्म संघ का आचार्य पद को सुशोभित किया जिन्होंने 1949 में अणुव्रत आंदोलन की शुरुआत की और जैन विश्व भारती संस्थान की स्थापना की। उनका जीवन मानवता के कल्याण और अहिंसा के संदेश को समर्पित था, और उन्हें अपनी अद्भुत नेतृत्व क्षमता और दूरदर्शिता के लिए जाना जाता है। एक बहु आयामी व्यक्तित्व के धनी आचार्य श्री तुलसी ने 100 से अधिक पुस्तकों के लेखक किया और एक महान समाज सुधारक थे, जिन्होंने 776 से अधिक साधु-साध्वियों को दीक्षा दी। उन्होंने मानव कल्याण के लिए अणुव्रत, जीवन विज्ञान और प्रेक्षाध्यान जैसी शिक्षाओं का प्रवर्तन किया। साध्वी संकल्प श्री ने भी आचार्य श्री तुलसी की महिमा का वर्णन करते हुआ कहा आचार्य श्री तुलसी वो महान विभूति जिन्होंने समाज उत्थान के लिए अनेकों कार्य किए। आचार्य तुलसी ने महिला वर्ग को आगे लाने के लिए घूँघट प्रथा को खत्म किया। आचार्य तुलसी की देने से ही आज नारी शक्ति देश के

विभिन्न स्थानों पर अव्वलता के साथ काम कर रही है। दहेज प्रथा, जाति भेद भाव, छुआछूत, मृत्यु भोज आदि सभी कुरीतियों से समाज को छुटकारा मिला। साध्वी कल्पमाला जी और साध्वी रोहित यशा ने गीतिका का संगान किया और आचार्य श्री तुलसी के जीवन पर प्रकाश डालते हुआ उनके जीवन के बारे में बताया। बाबूलाल और सुरेंद्र कुमार बुच्चा ने भी गीतिका का संगान कर आचार्य श्री तुलसी के प्रति अपनी भावना से श्रद्धा सुमन अर्पित किए।

राजराजेश्वरी नगर

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या साध्वी श्री पुण्ययशा जी ठाणा-4 * के सान्निध्य में तेरापंथ भवन, राजराजेश्वरी नगर में गणाधिपती पूज्य गुरुदेव तुलसी का 112वां जन्म दिवस (अणुव्रत दिवस) एवं अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद सत्र 2025-27 के नव-मनोनित राष्ट्रीय अध्यक्ष पवन मांडोट एवं संगठन मंत्री रोहित कोठारी एव राष्ट्रीय संगठन से जुड़े सभी पदाधिकारियों का अभिनन्दन-सम्मान समारोह का आयोजन हुआ। सभी अतिथियों को परिषद् द्वारा जैन पट से सम्मानित किया गया। मंगलाचरण पिस्ता देवी श्रीश्रीमाल द्वारा किया गया। तेयुप अध्यक्ष विक्रम मेहर ने पधारें हुए सभी गणमान्य व्यक्तियों का स्वागत किया। तत्पश्चात सभा/ट्रस्ट अध्यक्ष राकेश छाजेड़, उपाध्यक्षा सरोज बैद, महिला मंडल अध्यक्षा मंजू बोथरा, युवा गौरव विमल कटारिया, CPS प्रभारी दिनेश मरोठी ने AB'TYP के प्रति मंगलकामना प्रेषित की। गुलाब बाँठिया एव देवेंद्र नाहटा, महिला मंडल बहनों, खटेड़ परिवार एव साध्वीश्री के नातिले परिवार द्वारा गुरुदेव तुलसी के प्रति गीतिका द्वारा श्रद्धा सुमन अर्पित किए। पवन मांडोट एवं रोहित कोठारी ने अपनी भावनाएँ प्रेषित की। रोहित कोठारी ने किशोर मंडल से लेकर अभातेयुप तक की अपनी यात्रा का उल्लेख किया एवं 'मिशन 60' - यानी पूरे भारत में युवकों एवं किशोरों की संख्या 60,000 तक पहुँचाने का संकल्प साझा किया। आगामी 51 दिवसीय अखंड जाप कार्यक्रम के बारे में जानकारी साझा की। राष्ट्रीय अध्यक्ष पवन मांडोट ने 'सेंटर ऑफ एक्सीलेंस - युवा लोक' को बेंगलुरु में स्थापित करने की भावना रखी। भारत भर में 100 ATDC सेंटर करने का संकल्प लिया है। उन्होंने बताया कि इस कार्यकाल में कुछ विशेष कार्यक्रम एवं नव इतिहास सृजन करेंगे, जिसमें आप सभी 7 परिषदों

का सहयोग अपेक्षित है। साध्वी विनीत यशा जी गीतिका प्रस्तुत की एवं साध्वी पुण्ययशाजी ने गणाधिपति पूज्य गुरुदेव तुलसी को याद किया एवं आभातेयुप नवनिर्वाचित अध्यक्ष एवं उनकी पूरी टीम को मंगल कामना आशीर्वाद प्रदान किया। इस अवसर पर अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल क्षेत्रीय संयोजिका चुने जाने पर रुचिका पटवारी का तेयुप द्वारा जैन पट सम्मानित किया गया। तेरापंथ सभा, महिला मंडल युवक परिषद, गणमान्य व्यक्तियों एवं श्रावक श्राविका समाज की उपस्थिति रही। संचालन युवक परिषद मंत्री संदीप बैद एवं आभार विपुल पितलिया ने किया।

गंगाशहर

उग्र विहारी तपोमूर्ति मुनि कमल कुमार जी स्वामी के सान्निध्य में आचार्य श्री तुलसी का 112 वां जन्मदिन अणुव्रत दिवस के रूप में तेरापंथ भवन गंगाशहर में मनाया गया। इस अवसर पर बोलते हुए उग्र विहारी तपोमूर्ति मुनि श्री कमल कुमार जी स्वामी ने कहा कि आचार्य श्री तुलसी महामानव थे। उन जैसे महा पुरुष शताब्दियों में ही आते हैं। आचार्य श्री तुलसी का जीवन दर्शन भारतीय आध्यात्मिक चेतना का एक अभिनव उन्मेष है। आचार्य श्री तुलसी ने बहुत लंबी पदयात्रा के माध्यम से व्यापक जन सम्पर्क किया। अणुव्रत के माध्यम से जन जागरण का प्रत्यन्त किया। उन्होंने हर क्षेत्र में बहुत पुरुषार्थ किया। गुरुदेव श्री तुलसी ने अपने जीवन में अनेक महान कार्य किये। उनमें प्रमुख रूप से अणुव्रत आन्दोलन, रूढ़िवाद का उल्मूलन, नशामुक्त, जैन विश्व भारती शिक्षा केन्द्र, समण संस्कृति, परमार्थिक शिक्षण संस्थान, साहित्य परम्परा, आगम संपादन का कार्य, प्रेक्षा ध्यान, जीवन विज्ञान का आविष्कार, ओर सबसे महत्वपूर्ण आज के युग के लिए अनुकरणीय विर्सजन सूत्र का अनुपम उदाहरण की स्थापना। अपने आचार्य काल में अपने आचार्य पद के विसर्जन ओर अपनी विधमानता में युवाचार्य को आचार्य पद पर नियुक्त करना पुरे विश्व के लिए अपूर्व घटना थी। अछुतो उदार के लिए बहुत प्रयास किया। आचार्य श्री तुलसी का यह वाक्य 'निज पर शासन - फिर अनुशासन' अमर वाक्य बन गया है। इस अवसर पर मुनि श्री श्रेयांस कुमार जी स्वामी ने अपने भाव गीतिका के माध्यम से रखे। इस अवसर पर पूर्व महापौर नारायण जी चोपड़ा ने आचार्य तुलसी के व्यक्तित्व

ओर कर्तित्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आज राजनीति में ओर प्राशासनिक क्षेत्र में नैतिकता की, अणुव्रत के नियमों के पालन की महती आवश्यकता है। जैन लूणकरण छाजेड़ ने गुरुदेव तुलसी के अवदानों की चर्चा करते हुए कहा कि नारी उत्थान, कुरुतियों के निवारण के लिए गुरुदेव तुलसी के द्वारा किये गए कार्यों को महिला समाज कभी भुला नहीं पायेगा। समण श्रेणी का आगाज, जातिवाद की जटिल स्थित को सुलझाने, छुआछूत को मिटाने के लिए भरसक प्रयास किया। उनके द्वारा किये कार्यों के कारण उन्हें 'दलितों का मसीहा' के रूप में जाना जाने लगा। तेयुप से ललित राखेचा, तेरापंथ सभा से कमल जी भंसाली, तेरापंथ प्रोफेशनल फॉर्म से अधिवक्ता श्रीमती विधा चोरडिया, महिला मंडल अध्यक्ष श्रीमती प्रेम बोथरा, कन्या मंडल से गरिमा भंसाली, अणुव्रत समिति से कन्हैया लाल बोथरा, शान्ति प्रतिष्ठान से धर्मेन्द्र डाकलिया ने अपने विचार व्यक्त किये।

पल्लावरम/चेन्नई

तेरापंथ भवन में युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी के सुशिष्य मुनिश्री दीपकुमारजी ठाणा-2 के सान्निध्य में आचार्यश्री तुलसी के 112वें जन्मदिवस 'अणुव्रत दिवस' का आयोजन जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा एवं अणुव्रत समिति, चेन्नई के द्वारा किया गया। मुनि दीपकुमारजी ने कहा कि आचार्य श्री तुलसी युगदृष्टा महापुरुष थे। उन्होंने युग की नब्ज को पहचाना, युगीन समस्याओं का समझा और सुलझाया। उनकी प्रवचन कला अद्भुत थी। वाणी में ओज था। वे महान् संगीतकार थे। स्वयं संगान भी करते एवं काव्य रचना भी करते। आचार्य तुलसी महान ग्रंथकार, साहित्यकार थे। उन्होंने अनेको ग्रंथों का निर्माण किया और ग्रंथकारों का भी निर्माण किया। श्रावक समाज का संगठनात्मक रूप सृजन किया। समण श्रेणी जैसे क्रांतिकारी अवदान से देश-विदेश में तेरापंथ जैन धर्म का पर्याय बन गया। मुनिश्री ने आगे कहा कि अणुव्रत आचार्य श्री तुलसी का विशिष्ट अवदान है। अणुव्रत सार्वभौमिक आंदोलन है, जो मानव में मानवता का शंखनाद करता है। मुनिश्री काव्यकुमारजी ने कहा कि आचार्यश्री तुलसी समता योगी थे। उन्होंने महान् पुरुषार्थ किया। संघ और श्रावक समाज के उत्थान के लिए लम्बी-लम्बी पदयात्राएँ की।

आचार्य श्री तुलसी के 112वें जन्म दिवस पर विविध आयोजन

कोलकाता

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि जिनेशकुमार जी ठाणा-3 के सान्निध्य में अणुव्रत आंदोलन के प्रवर्तक, राष्ट्रसंत आचार्य श्री तुलसी का 112वाँ जन्म दिवस अणुव्रत दिवस के रूप में अणुव्रत समिति कोलकाता व जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा (कलकत्ता - पूर्वांचल ट्रस्ट द्वारा भिक्षु विहार में आयोजित किया गया। इस अवसर पर उपस्थित धर्मसभा को संबोधित करते हुए मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा- आचार्य श्री तुलसी एक देदीप्यमान सूर्य बनकर आए। संयम और तप में पराक्रम कर वे महर्षि देवर्षि ब्रह्मर्षि कहलाए। उनका जीवन निर्मल व पवित्र था। वे साहित्यकार प्रवचनकार, संगीतकार और संघ के सारथी थे। वे एक महान परिवर्तक थे। उन्होंने मानव उत्थान के लिए प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान, अणुव्रत की त्रिपदी दी। नैतिकता, सद्भावना और नशामुक्ति का आलोक बांटा। अणुव्रत सुरक्षा कवच है। धर्म और व्यवहार का सेतु है। महाव्रती नहीं बन सकते हैं तो कम से कम अणुव्रती तो बनें। मुनि ने आगे कहा- आचार्य तुलसी का जीवन बहुआयामी था। जैन विश्व भारती पूज्य गुरुदेव का कल्पवृक्ष अभियान है जो सारे संसार को जैन धर्म का संदेश देता है। मुमुक्षु संस्था समण श्रेणी, यूनिवर्सिटी, ज्ञानशाला, उपासक महान संत के अलौकिक अवदान है। विश्व के महान संत ने पद का विसर्जन कर के आश्चर्यजनक कार्य किया जो कुर्सी से चिपके लोगों के लिए प्रेरणा है। असाधारण प्रतिभा के धनी युगदृष्टा, युगसृष्टा, युग प्ररुष, युगचिंतक आचार्य श्री तुलसी के 112वें जन्मदिवस की पुण्य बेला में उनका सुमिरन करता हूँ। हे प्रभो ऐसी शक्ति दे जिससे साधना के क्षेत्र में आगे बढ़ते रहे। मुनि कुणाल कुमार जी ने सुमधुर गीत का संगान किया। कार्यक्रम का शुभारंभ तेरापंथ महिला मंडल, पूर्वांचल ने किया। स्वागत भाषण अणुव्रत समिति कोलकाता के अध्यक्ष नवीन दुगड़ ने दिया। इस अवसर पर महासभा के पूर्व अध्यक्ष सुरेश गोयल, कलकत्ता सभा के पूर्व अध्यक्ष तेजकरन बोथरा, पूर्वांचल सभा के अध्यक्ष संजय सिंधी, तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्ष बबीता तातेड, तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष राजीव बोथरा तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के पूर्व अध्यक्ष प्रवीण सुराणा ने अपने विचार व्यक्त किये। पूर्वांचल स्वर लहरी के सदस्यों ने सुमधुर

गीत प्रस्तुत किए। आभार ज्ञान सभा मंत्री पंकज डोसी ने किया। संचालन मुनि परमानंद ने किया।

पीलीबंगा

आचार्य श्री तुलसी का 112वाँ जन्मदिवस पीलीबंगा जैन भवन में श्रद्धा व संगठन भाव से 'अणुव्रत दिवस' के तौर पर दो सत्रों में मनाया गया। प्रथम सत्र में कार्यक्रम का शुभारंभ मंगलाचरण से हुआ जिसे पूजा डागा, भूमि नौलखा, जतिन और दृष्टि खदरिया ने गीतिका प्रस्तुत कर किया। सभाध्यक्ष मालचंद पुगलिया, महिला मंडल अध्यक्ष सुलोचना देवी बांठिया, प्रीति डाकलिया, पुष्पा नाहटा, कन्या मंडल ने गीतिका एवं आचार्य तुलसी के जीवन प्रसंग पर अपने वक्तव्य की प्रस्तुति दी। समारोह का सूचारू मंच संचालन हेमलता डाकलिया ने किया। रात्रिकालीन सत्र में महिला मंडल की सुंदर गीतिका, कन्या मंडल गीतिका, चंद्रकला दफ्तरी व ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों की प्रस्तुतियाँ मुख्य आकर्षण रहीं। राजकुमार, सभा के मंत्री प्रकाश डाकलिया ने सामूहिक गीतिका प्रस्तुत की। महिला मंडल की अन्य भावपूर्ण गीतिकाएँ, पुखराज छाजेड़ एवं प्रतिज्ञा नौलखा द्वारा प्रस्तुत रचनाएँ भी सभी के लिए प्रेरणास्रोत बनीं। संचालन सतीश पुगलिया ने किया। डॉ मुनि विनोद कुमार जी ने अपने प्रेरणा पाथेय में आचार्यश्री की शिक्षाओं को आत्मसात करते हुए वर्तमान में उनके मार्गदर्शन को प्रासंगिक बताया और उनके बताए सह-अस्तित्व, सहिष्णुता और सद्भावना जैसे सिद्धांतों पर चलने का आह्वान किया।

गुड़ियातम

युगप्रधान आचार्य श्री तुलसी जी की 112वीं जन्म जयंती के उपलक्ष्य में मनाया गया, जिसका मुख्य विषय था— अणुव्रत Celebration of Humanity (मानवता का उत्सव)। यह आयोजन मुनि रश्मि कुमार जी, मुनि प्रियांशु कुमार जी के मंगल सान्निध्य में अत्यंत श्रद्धा और उत्साह के साथ मनाया गया। कार्यक्रम में विशेष अतिथि के रूप में भट्टारक धवल कीर्ति स्वामी पोलूर से विशेष रूप से पधारे थे। कार्यक्रम की शुरुआत अणुव्रत जुलूस, मंगलाचरण और अणुव्रत गीत से हुई। इसके बाद मुनिश्री रश्मि कुमार जी ने अपने प्रेरक प्रवचन में कहा कि — 'अणुव्रत केवल एक आंदोलन नहीं, बल्कि जीवन को मानवीय मूल्यों से जोड़ने का एक अभियान है। आचार्य श्री तुलसी जी ने

इसका संदेश देकर पूरी मानवता के लिए एक दिशा निर्धारित की।' विशेष अतिथि भट्टारक धवलकीर्ति स्वामी जी ने भी अपने उद्बोधन में कहा कि आचार्य तुलसी का जीवन संयम, करुणा और सेवा का आदर्श उदाहरण है। उन्होंने युवाओं से आचार्य तुलसी के अणुव्रत सिद्धांतों को अपने जीवन में अपनाने का आह्वान किया। अणुव्रत से संबंधित प्रदर्शनी, प्रेरक पोस्टर प्रदर्शन और संकल्प ग्रहण कार्यक्रम भी आयोजित किया गया। महिला मंडल, युवक परिषद, कन्यामंडल और ज्ञानशाला के बच्चों ने सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ देकर कार्यक्रम को और भी जीवंत बना दिया। आयोजन वास्तव में 'अणुव्रत - मानवता का उत्सव' की भावना को चरितार्थ करने वाला प्रेरणादायी कार्यक्रम रहा।

छापर

भिक्षु साधना केन्द्र में सेवा केंद्र व्यवस्थापक मुनि देवेन्द्र कुमार जी एवं मुनि पृथ्वीराज के सान्निध्य में आचार्य तुलसी का 112वां जन्मोत्सव मनाया गया। शिक्षाविद्द रेखाराम गोदारा की अध्यक्षता में कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रधानाचार्य सुनीलकुमार तैवर विशिष्ट अतिथि नेचर एनवायरमेंट एण्ड वाइल्डलाइफ सोसायटी के शंकरलाल सारस्वत व समाजसेवी कृष्णगोपाल जोशी थे। तेरापंथ महिला मण्डल व तेरापंथ कन्यामण्डल की बहिनों ने गीत के माध्यम से अपने भाव व्यक्त किए। तेरापंथ सभा के प्रवक्ता प्रदीप सुराणा ने आचार्य तुलसी के तेरापंथ धर्मसंघ एवं मानव जाति के लिए दिए गए अवदानों की चर्चा करते हुए कहा कि उनके जन्मोत्सव को हम अणुव्रत दिवस के रूप में मना रहे हैं। तपोमूर्ति मुनि पृथ्वीराज जी स्वामी ने कहा कि आचार्य तुलसी ने मानव जाति के लिए नैतिकता व सत्यमय जीवन जीने की प्रेरणा दी। सेवाकेन्द्र व्यवस्थापक मुनि श्री देवेन्द्र कुमारजी ने कहा कि आचार्य तुलसी ने विश्व को जहाँ अणुव्रत आन्दोलन के रूप में एक आयाम दिया है, वहीं नशामुक्ति, अहिंसा, महिला सशक्तिकरण व शिक्षा के क्षेत्र में जैन विश्व भारती की स्थापना की है। मुनि जिज्ञासु कुमारजी मुनि आरजव कुमार जी, सपना बैद, शोभा डोसी, सुविधा नाहटा, प्रिया दूधोडिया, अणुव्रत समिति के अध्यक्ष विनोद नाहटा, महिला मंडल अध्यक्ष सरोज भंसाली, मंत्री हेमलता दूधोडिया, रेखा दूधोडिया, राजू नाहटा ने अपने भावों की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संचालन सभा प्रवक्ता प्रदीप सुराणा ने किया

जसोल

महातपस्वी आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या साध्वी रतिप्रभा जी के सान्निध्य में तेरापंथ के नवम अधिशास्ता आचार्य श्री तुलसी का 112 वां जन्म दिवस अणुव्रत दिवस के रूप में हर्षोल्लास से आयोजित किया। साध्वी रतिप्रभा जी ने श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए कहा कि आचार्य श्री तुलसी ऐसा व्यक्तित्व जिन्होंने अपने जीवन को उदबोधित किया। अपने व्यक्तित्व विकास के साथ उनका चिंतन विशाल एवं ऊंचाई को छूने वाला था। अतः हर मानव का कल्याण कैसे हो? इसके लिए अत्यधिक प्रयत्नशील रहते! उनके हाथों में पौरुष की मशाल थी, कदमों में लक्ष्य के प्रति दृढ़ गति थी। मस्तिष्क में नये संकल्प को साकार करने का जुनून था। अदम्य साहस के खुली आँखों से सपने देखने वाले अलौकिक आचार्य तुलसी ने इस संघ को अनेको आयाम दिये। संघ को विकास के शिखर चढ़ाया। अणुव्रत आंदोलन के सूत्रधार आचार्य तुलसी ने सम्प्रदाय से ऊपर उठकर मानव जाति के लिये यह अनमोल अवदान था। साध्वीश्री कलाप्रभा जी ने कहा आचार्य तुलसी महामानव के रूप में इस धरती पर जन्म लिया। जिनकी दिव्यवाणी ने लाखों को साधना के राज पथ पर आरूढ़ किया। उनके जादुई हाथों के स्पर्श ने व्यक्तियों ने अणुव्रत आंदोलन के द्वारा जीवन को नैतिक, सदाचारी बनाया। जिनके प्रेरक जीवन में अनेको की दीक्षा का रूपांतर किया। आचार्य तुलसी अनुशासन का पाठ पढ़ाने वाले स्वयं पहले इस धारा पर चले और अनुशासन का नारा दिया। साध्वीश्री मनोज्ञयशा जी ने कुशलता से संचालन करते हुए कहा कि लोग कहते आचार्य तुलसी एक अच्छे समाज सुधारक थे, कुछ कहते वो एक कुशल धर्म प्रचारक थे, ऐसे हर कोई उनके बारे में अनेको गुणों की बात करता पर वो महामानव सम्पूर्ण मानव जाति के संरक्षण थे। साध्वीश्री पावन यशा जी ने 'अणुव्रत की पावन गंगा में जीवन स्वच्छ बनाए' इस प्रेरणादायी सुमधुर गीत के द्वारा अणुव्रत की बात रखी। तेरापंथ सभा अध्यक्ष भूपतराज कोठारी ने अणुव्रत नियमावली का वाचन किया। अणुव्रत समिति के मंत्री सफरु खान ने अपने विचार व्यक्त किये। अणुव्रत समिति अध्यक्ष महावीर सालेचा, निवर्तमान अध्यक्ष पारसमल गोलेच्छा, संगठन मंत्री डूंगरचन्द बागरेचा सहित सदस्य उपस्थित थे।

सिकंदराबाद

गणाधिपति आचार्यश्री तुलसी के 112वें जन्मोत्सव के पावन अवसर पर अणुव्रत दिवस का भव्य आयोजन किया गया। मानव को आचार्य तुलसी की देन का आयोजन युगप्रधान महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण जी की विदुषी सुशिष्या साध्वी डॉ गवेषणाजीश्री जी ठाणा -4 के सान्निध्य में तेरापंथ भवन, डी वी कॉलोनी, सिकंदराबाद में हुआ। डॉ. साध्वी गवेषणाश्री ने कहा- आचार्य श्री तुलसी की जीवन-गाथा भारतीय चेतना का एक अभिनव उन्मेष है, आश्चर्यों की वर्णमाला से आलोकित एक महालेख है। आपने समाज में अनेक नये उन्मेष व नये आयाम दिये हैं। धार्मिक जगत के इतिहास में एक नया कीर्तिमान आपने स्थापित किया, उसमें एक है - अपने पद का विसर्जन। विसर्जन धन का, समय का, ज्ञान का, वस्तु का अनेक प्रकार का हो सकता है किन्तु सारी सक्षमता होते हुए आपके द्वारा पद का विसर्जन करना बहुत बड़ी बात है। विश्व के इतिहास में प्रत्येक दशक नवीनता लिये था। 11 वर्ष की उम्र में दीक्षा 22 में आचार्य पद तीसरे दशक में अणुव्रत का प्रारंभ, मुमुक्षु का ट्रेनिंग सेन्टर, चतुर्थ दशक में साध्वियों की शिक्षा, आगम संपादन, आदर्श संघ का उद्भव पंचम दशक में - जैन विश्व भारती तथा साध्वीप्रमुखा का चयन, छठम् दशक में समणी दीक्षा तथा युवाचार्य का चयन सातवे दशक में जैन युनिवर्सिटी व योग क्षेम वर्ष। सचमुच में 62वर्षीय आचार्य काल यशस्वी, तेजस्वी रहा तथा तेरापंथ संघ को नवीन ऊंचाईयाँ प्रदान की। साध्वी मयंक प्रभा ने कहा - विश्व के इतिहास में इन शताब्दियों का दुर्लभ व्यक्तित्व है - आचार्य श्री तुलसी। आचार्य श्री तुलसी का व्यक्तित्व और कर्तृत्व अमोघ है। जिसे शब्दों में बांधना और गीतों में उकेरना असंभव है। साध्वी मेरुप्रभाजी ने 'सांसों में तुलसी का नाम' गीतिका प्रस्तुत की। साध्वी दक्षप्रभा ने भी सुमधुर गीतिका प्रस्तुत की तथा मंच की कुशलता पूर्ण संचालन किया। अणुव्रत समिति के मंगलाचरण से कार्यक्रम की शुरुवात हुई। चांद बाई बैद, शान्ता बाई ने भावपूर्ण गीतिका का संगान किया, महिला मंडल मंत्री निशा सेठिया, सभा मंत्री हेमन्त संचेती, टी पी एफ अध्यक्ष विरेन्द्र घोषल ने आचार्य श्री तुलसी के व्यक्तित्व-कर्तृत्व को उजागर किया।



अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

समाचार प्रेषकों से निवेदन

1. संघीय समाचारों के साप्ताहिक मुखपत्र 'अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स' में धर्मसंघ से संबंधित समाचारों का स्वागत है।
2. समाचार साफ, स्पष्ट और शुद्ध भाषा में टाइप किया हुआ अथवा सुपाठ्य लिखा होना चाहिए।
3. कृपया किसी भी न्यूज पेपर की कटिंग प्रेषित न करें।
4. समाचार मोबाइल नं. 8905995002 पर व्हाट्सअप अथवा abtyptt@gmail.com पर ई-मेल के माध्यम से भेजें।

समाचार पत्र ऑनलाइन पढ़ने के लिए
नीचे दिए गए लिंक पर क्लिक करें।

<https://terapanthtimes.org/>

:: निवेदक ::



अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

भगवान महावीर का 2595वां दीक्षा कल्याणक महोत्सव

नोखा।

भगवान महावीर की साधना उत्कृष्ट एवं अलौकिक थी। आज दीक्षा कल्याणक महोत्सव उनकी अनासक्त चेतना थी। वे अहिंसा, सत्य, अपरिग्रह, अनेकांत के उपासक थे।

वर्तमान युग में भी उनकी ज्ञान परक शिक्षाएं प्रासंगिक हैं। साधना का संकल्प सूत्र है-समता। व्यक्ति सहिष्णु बने। हर स्थिति में समता रखें तब मोक्ष मार्ग की ओर प्रस्थान कर सकेंगे - यह उद्गार 'शासन गौरव' साध्वी राजीमती जी ने भगवान महावीर के 2595 वे कल्याणक महोत्सव पर कहे। प्रारंभ में तेरापंथ महिला मंडल द्वारा 'भगवान महावीर' स्तुति का संगान किया। महिला मंडल अध्यक्षा प्रीति मरोठी एवं पूर्व अध्यक्षा सुमन मरोठी ने महावीर की कष्टों भरी कहानी के संस्मरण सुनाए।

साध्वी प्रभातप्रभा एवं साध्वी मनोजप्रभा ने महावीर को संगम एवं चण्डकौशिक के उपसर्ग एवं समतामय पवित्र आभामंडल के बारे में बताया। युवक परिषद् द्वारा महावीर के प्रति श्रद्धा सुमन गीतिका के द्वारा अर्पित किए गए। सभा अध्यक्ष शुभकरण चौरडिया, मंत्री मनोज घीया, तेयुप मंत्री सुरेश बोथरा, डा. प्रेमसुख मरोठी, 'कवि' इंद्रचंद्र बैद, हंसराज भूरा आदि उपस्थित रहे। आज के दिन बीदासर में 43 दीक्षा में साध्वी प्रभातप्रभा की दीक्षा आचार्य महाश्रमण ने प्रदान की। उनके प्रति साध्वी राजीमती ने ज्ञान, दर्शन, चरित्र, संयम में विकास करने का आशीर्वाद प्रदान किया मंगल कामना की। कुशल संचालन युवक सुशील भूरा ने किया। ज्ञात है मुनि अमृत कुमार जी एवं मुनि उपशम कुमार जी देशनोक चातुर्मास सम्पन्न करके नोखा पधारेंगे।

वृहद मंगल पाठ कार्यक्रम का आयोजन

पूर्वांचल कोलकाता।

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि जिनेश कुमार जी ठाणा-3 के सान्निध्य में दीपावली के शुभदिन प्रवचन कार्यक्रम व वृहद मंगलपाठ का भव्य आयोजन जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा (कलकत्ता-पूर्वांचल) ट्रस्ट द्वारा भिक्षु विहार में किया गया। इस अवसर पर उपस्थित धर्मसभा को संबोधित करते हुए मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा - भारतीय संस्कृति में दीपावली पर्व का बहुत बड़ा महत्त्व है। दीपावली अर्थात् आलोक का विस्तार। पराजित अमावस्या का उच्छ्वास, घोर अंधकार का पलायन, आलोक सुरसरिता का धरती पर अवतरण। आकाश के अनंत नक्षत्र

मंडल से घरा की मूर्तिमान स्पर्धा है। दीपावली का पर्व ज्योति का, प्रकाश का, पुरुषार्थ का आत्मनिरीक्षण का दिव्यता का पर्व है। दीप प्रकाश का एक प्रतीक है। आदमी को अंधकार नहीं प्रकाश चाहिए मुनि ने आगे कहा- व्यक्ति के बाहर की सफाई पर ज्यादा ध्यान देता है, उससे अधिक भीतर की सफाई पर ध्यान देने की आवश्यकता है। भीतर की सफाई ज्ञान रूपी प्रकाश से ही संभव है। मुनि ने आगे कहा दीपावली जागृति का पर्व है। त्याग, तप, संयम का पर्व है। पर्व आमोद-प्रमोद का साधन न बने। दीपावली का यह पर्व भगवान महावीर, भगवान राम तथागत बुद्ध दयानंद सरस्वती से जुड़ा हुआ है। दीपावली का संबंध लक्ष्मी से भी जुड़ा हुआ है। व्यक्ति लक्ष्मी संपन्न बनना चाहता

है। लक्ष्मी का एक अर्थ है आभा, व्यक्ति आभा संपन्न बने व्यक्ति को हमेशा मंगल की कामना करनी चाहिए। आतिशबाजी से बचे। इससे पर्यावरण दूषित होता है। कितनी हिंसा होती है। मुनि परमानंद ने कहा दीपावली प्रकाश, स्वच्छता व समृद्धि का पर्व है। व्यक्ति के भीतर ज्ञान का प्रकाश, बुराईयों की सफाई व सद्गुणों की समृद्धि होने से ही दीपावली मानना सार्थक हो सकेगा। मुनि कुणाल कुमार जी ने सुमधुर गीत का संगान किया। रात्रि में दीपावली बृहद्ध, मंगल पाठ कार्यक्रम का आयोजन हुआ जिसमें मुनि जिनेश कुमार जी ने आध्यात्मिक अनुष्ठान कर बृहद्ध मंगल पाठ श्रद्धालुओं को सुनाया। बृहद्ध मंगल पाठ श्रवण करने हेतु बड़ी संख्या में श्रद्धालुगण उपस्थित रहे।

अभिनंदन समारोह सम्पन्न

हैदराबाद।

तेरापंथ युवक परिषद्, हैदराबाद द्वारा आज तेयुप निवर्तमान अध्यक्ष अभिनंदन नाहटा के अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष द्वितीय के रूप में मनोनीत होने पर साध्वी डॉ. गवेषणाश्री जी (ठाणा 4) के पावन सान्निध्य में तेरापंथ भवन में अभिनंदन समारोह का आयोजन में किया गया। राजेन्द्र बोथरा द्वारा जारी विज्ञप्ति अनुसार साध्वीश्री जी ने अभिनंदन नाहटा को हार्दिक बधाई देते हुए कहा कि युवाओं के संस्कार, सेवा और संगठनात्मक क्षमता से ही समाज का उज्ज्वल

भविष्य निर्मित होता है। उन्होंने परिषद् के सभी सदस्यों को भी समर्पित भावना से समाजहित में कार्य करते रहने का प्रेरक संदेश दिया। तेयुप अध्यक्ष राहुल गोलछा ने अपने उद्बोधन में कहा कि यह पूरे हैदराबाद तेरापंथ समाज के लिए गौरव का क्षण है कि हमारे निवर्तमान अध्यक्ष को राष्ट्रीय स्तर पर यह सम्मान प्राप्त हुआ है। उन्होंने कहा कि यह उपलब्धि प्रत्येक सदस्य की सामूहिक निष्ठा और टीम भावना का परिणाम है तथा भविष्य में और ऊँचाइयाँ प्राप्त करने की प्रेरणा देती है। कार्यक्रम में परिषद् सदस्यों एवं समाजजनों ने उपस्थित होकर अपनी शुभकामनाएँ और बधाइयाँ प्रेषित कीं।

इस अवसर पर अखिल भारतीय परिषद् सदस्य मनीष पटावरी, आशीष दक, राहुल श्यामसुखा एवं कुशल भंसाली को भी अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् की कार्यकारिणी में मनोनीत किए जाने पर बधाई दी गई। कार्यक्रम में तेलंगाना माइनोंरिटी सदस्य एवं जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, सिकंदराबाद के उपाध्यक्ष हिमांशु बापना, मंत्री हेमंत संचेती, महिला मंडल अध्यक्ष नमिता सिंधी, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम अध्यक्ष वीरेंद्र घोषाल, तथा अणुव्रत समिति अध्यक्ष राजेंद्र बोथरा सहित अनेक गणमान्य उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन संगठन मंत्री चेतन मरलेचा ने किया।

अलविदा तमिलनाडु, नमस्कारम आंध्रप्रदेश

चेन्नई।

भारतीय संस्कृति की सन्त परम्परा में श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के 11वें अधिशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण के निर्देशानुसार शिष्य मुनि मोहजीतकुमार जी एवं सहवर्ती संतो ने आंध्रप्रदेश की सीमा में प्रवेश किया। सीमा पर किलपाँक तेरापंथी सभा, तेरापंथ युवक परिषद्, तेरापंथ महिला मण्डल, तेरापंथ किशोर मण्डल तथा अनेक कार्यकर्ताओं ने मुनिवरों का भावभीना स्वागत किया। तीन संतों के स्वागत में कर्नाटक, तमिलनाडु,

आंध्रप्रदेश इन तीन राज्यों के श्रावकों की उपस्थिति सुयोगपूर्ण थी।

मुनि मोहजीत कुमारजी ने तमिलनाडु चेन्नई क्षेत्र के किलपाँक में सफलतम चातुर्मास को सफल बनाने में कार्यकर्ताओं के योगदान की सराहना करते हुए कहा कि नया क्षेत्र, नया उत्साह और नए आयाम इस चातुर्मास की उपयोगिता तथा संघ प्रभावना के कारण बने।

मुनिश्री ने आगे कहा कि संतों का श्रम, नई कल्पनाओं का प्रस्तुतिकरण और श्रावकों की श्रद्धा की वर्धापना का दिग्दर्शन था। अब गुरु आज्ञा से आंध्र

प्रदेश सीमा में आगमन हुआ। गुरु दृष्टि की आराधना करते हुए सभी आगे बढ़ते रहे। इस अवसर पर आयोजित मंगलकामना एवं स्वागत समारोह में तेरापंथ सभा किलपाँक के अध्यक्ष अशोक परमार, उपाध्यक्ष धर्मीचन्द छल्लाणी, सह-मंत्री अशोक आच्छा तथा महिला मण्डल की वरिष्ठ संरक्षिका माला कातरेला ने भावाभिव्यक्ति दी।

प्रवेश पर आंध्र प्रदेश के निवासी तिरुपति, रेनीगुंटा, काटूर, कालहस्ती आदि क्षेत्रों से आए श्रद्धालु श्रावकों ने भी मुनिवरों का हार्दिक स्वागत किया।

प्रेक्षा प्रशिक्षक सम्मान समारोह का आयोजन

पूर्वांचल कोलकाता।

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि जिनेश कुमार जी ठाणा 3 के सान्निध्य में प्रेक्षाध्यान कल्याण वर्ष की सम्पन्नता पर प्रेक्षा प्रशिक्षक सम्मान समारोह का आयोजन ईस्ट जोन प्रेक्षा प्रशिक्षक वर्ग एवं जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा (कलकत्ता-पूर्वांचल) ट्रस्ट द्वारा भिक्षु विहार में आयोजित किया गया। इस अवसर पर उपस्थित धर्मसभा को संबोधित करते हुए मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा- मन को साधने का सर्वोत्तम उपाय है- ध्यान। ध्यान जीवन में संयम लाता है। वह एक नियंत्रण है, ब्रेक है। अपनी आवश्यकता, अपनी इच्छा, और अपने भोग पर नियंत्रण की बात ध्यान से फलित होती है। इसलिए ध्यान जीवन की बहुत बड़ी आवश्यकता व अनिवार्यता है। प्रेक्षाध्यान आचार्य श्री महाप्रज्ञजी का जगत को कल्याणकारी अवदान है। प्रेक्षाध्यान की साधना निष्काम धर्म और अनासक्त की साधना है।

ध्यान का अर्थ विचारों को रोकना नहीं है। उसका अर्थ है भावों को बदलना। खुद को पहचानने की प्रक्रिया है-ध्यान। परम पूज्य आचार्य श्री महाप्रज्ञजी ने प्रेक्षाध्यान पद्धति का आविष्कार किया।

प्रेक्षाध्यान के प्रयोगों से मानसिक तनावों से मुक्ति, आत्मिक शांति व चित्त की निर्मलता प्राप्त होती है। प्रेक्षाध्यान कल्याण वर्ष में आचार्य श्री महाश्रमणजी के मार्गदर्शन में प्रेक्षा फाउंडेशन के अंतर्गत ईस्ट जोन में अच्छा कार्य हुआ। ईस्ट जोन कोर्डिनेटर मंजू सिपानी और बृहत्तर कोलकाता के सभी प्रशिक्षक व प्रशिक्षिकाओं का प्रेक्षाध्यान के प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान रहा सभी साधुवाद के पात्र हैं। इस अवसर पर मुनि कुणाल कुमार जी ने सुमधुर गीत का संगान किया। कार्यक्रम का शुभारंभ प्रेक्षा प्रशिक्षकों द्वारा मंगलाचरण से हुआ। स्वागत भाषण श्रीमती सुधा जैन ने दिया। हावड़ा प्रेक्षा प्रशिक्षिकाओं द्वारा लघु नाटिका प्रस्तुत की गई। रश्मि सुराणा व श्रीमती प्रियंका डागा ने कविता प्रस्तुत की। ईस्ट जोन कोर्डिनेटर मंजू सिपानी ने प्रेक्षाध्यान कल्याण वर्ष में हुए कार्यों की रिपोर्ट प्रस्तुत की। पूर्वांचल सभा के अध्यक्ष संजय सिंधी, साउथ सभा के अध्यक्ष विनोद चोरडिया पूर्व मंत्री कमल ठिया, सॉल्टलेक सभा के मंत्री अशोक भूतोडिया ने अपने विचार व्यक्त किये। आभार ज्ञापन अरुणजी नाहटा ने किया। सभी प्रेक्षा प्रशिक्षकों को मोमेंटो से सम्मानित किया गया।

बच्चों हेतु विशेष ज्ञानशाला का हुआ आयोजन

ब्यावर।

पूज्य गणाधिपति गुरुदेव आचार्य श्री तुलसी द्वारा प्रवर्तित ज्ञानशाला उपक्रम के अंतर्गत साध्वी कीर्तिलता जी के सान्निध्य में 15 वर्ष और उससे कम आयु के बच्चों हेतु विशेष ज्ञानशाला का आयोजन मुथा भवन, ब्यावर में किया गया। जिसमें तेरापंथ समाज के 18 बच्चों ने भाग लिया।

उक्त ज्ञानशाला के आयोजन में तेरापंथ सभा के मनीष रांका, युवक परिषद के शेरसिंह मरलेच, तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्ष चंद्रकांता दुगड़ एवं मंत्री सुनीता सकलेचा का विशेष सहयोग रहा। ज्ञानशाला के दौरान साध्वीजी जी द्वारा बच्चों को गुरुवंदन कैसे किया जाए इसकी विधि बताई गई साथ ही अहंम अहंम की वंदना फले प्रार्थना के साथ ज्ञानशाला की विधिवत

शुरुआत की गई। ज्ञानशाला में बच्चों को 25 बोल में से 10 बोल, नमस्कार महामंत्र, साधु भगवंत को किस प्रकार विधिपूर्वक वंदन किया जाए वंदन पाठ, परमेष्ठी वंदन, तेरापंथ आचार्य परंपरा के 11 आचार्य के नाम जिन शासन के 24 तीर्थंकर परंपरा के नाम, गुरु वंदन पाठ, सामायिक एवं सामायिक पारना का पाठ इत्यादि कंठस्थ करवाए गए।

ज्ञानशाला साध्वीजी जी के द्वारा ज्ञानशाला के महत्व को समझाते हुए अभिभावकों के साथ बैठक कर ज्ञानशाला को अनवरत रूप से प्रत्येक रविवार को चलने हेतु इंदु भटेवरा आशा रांका एवं इंदु मुथा पुरुष वर्ग में दयाराम एवं अभय सांखला को ज्ञानशाला संरक्षक/संरक्षिका के रूप मनोनीत किया गया। अंत में तेरापंथ युवक परिषद अध्यक्ष श्री मुकेश रांका द्वारा बच्चों के उत्साहवर्धन हेतु पुरस्कार वितरन किया गया।

जैविभा विश्वविद्यालय का 16वां स्थापना दिवस समारोह आयोजित

लाडनू।

केन्द्रीय संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री गजेन्द्र सिंह शेखावत ने कहा है कि आजादी के अमृतकाल में देश को 'विकसित भारत' बनाने के प्रधानमंत्री के संकल्प को पूरा करने के लिए जरूरी है कि हम सशक्त, समर्थ एवं सुसंस्कृत युवाशक्ति का निर्माण करें। इस कार्य को जैन विश्वभारती संस्थान विश्वविद्यालय सफलता पूर्वक कर रहा है। वे अहमदाबाद कोबा स्थित प्रेक्षा विश्व भारती परिसर में आचार्यश्री महाश्रमण प्रवास स्थल पर आयोजित लाडनू के जैन विश्वभारती संस्थान विश्वविद्यालय के 16वें दीक्षांत समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में दीक्षांत भाषण में बोल रहे थे। विश्वविद्यालय के अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी के सान्निध्य में एवं कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ की अध्यक्षता में हुए इस समारोह में केन्द्रीय मंत्री गजेन्द्र सिंह ने बताया कि केवल तकनीकी रूप से समृद्ध होना अथवा सामरिक ताकत में आगे बढ़ना भी देश को दुनिया में प्रणम्य नहीं बना सकता। इसके लिए संस्कार और संस्कृति के पुनर्जागरण की आवश्यकता है। हमें अपने अधिकारों के प्रति ही नहीं बल्कि अपने कर्तव्यों के प्रति भी सजग होना होगा। उन्होंने दीक्षांत समारोह को संकल्प का उत्सव बताया और कहा कि यह केवल डिग्री लेने का समारोह नहीं है, दीक्षोत्सव में आत्मा को सजग रखने और समाज को आलोकित करने की दीक्षा मिलती है। जो उपाधि अर्जित की है, वह केवल कागज मात्र नहीं है, बल्कि यह एक महान परम्परा की श्रृंखला को समाहित किए हुए है। उन्होंने विद्यार्थियों से जीवन में सफलता अर्जित करने के साथ सरल बने रहने के लिए प्रेरित किया। केन्द्रीय मंत्री शेखावत ने भारत में विद्यमान सहिष्णुता के भाव को महान बताया और कहा कि इसी कारण हमारी संस्कृति विश्व में अब भी कायम है। उन्होंने जैन दर्शन के अनेकांत, अहिंसा, सत्य, अपरिग्रह, संयम व प्रेक्षा के विचारों को सबके लिए आदर्श बताते हुए उनको अपने जीवन में उतारने के लिए प्रेरित किया। साथ ही उन्होंने सभी विद्यार्थियों से सत्यव्रत, अहिंसाव्रत और सेवाव्रत की त्रय-प्रतिज्ञाएं भी करवाईं। प्राप्त ज्ञान को सुरक्षित रखें और उसे निरन्तर बढ़ाते रहे। दीक्षांत समारोह में आचार्यश्री महाश्रमण

जी ने सभी विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों को अनुशासन प्रदान करते हुए सबको 'शिखापदम्' का पाठ करवाया। उन्होंने ज्ञान को प्रकाश की उपमा देते हुए साथ में संयम भी रखने को आवश्यक बताया। आचार्यश्री ने सबसे अनुरोध किया कि वे प्राप्त ज्ञान को सुरक्षित रखें और उसे निरन्तर बढ़ाते रहें, संयम की चेतना रखें, जितनी भी हो सके दूसरों की सेवा भी करते रहें। उन्होंने परहित और परोपकार के महत्व पर प्रकाश डाला और कहा कि समाज के लिए जितना संभव हो सके, काम अवश्य करें। उन्होंने किसी भी प्राणी को कष्ट नहीं पहुंचाने के लिए प्रेरित करते हुए जैन विश्वभारती संस्थान के लिए भी अपनी शुभांसा प्रकट की। इससे पूर्व आचार्यश्री ने विनीत और अविनीत के परिभाषित करते हुए कहा कि अविनीत को विपत्ति मिलती है और विनीत को सम्पत्ति। हमारी वाणी पर हमारा अनुशासन हो, बोलने से पहले सोचो, बोलने में संयम रहना चाहिए। इन्द्रियों पर अनुशासन हो, बुरा देखो मत, बुरा सुनो मत, बुरा बोलो मत, बुरा सोचो मत और बुरा काम मत करो। यही आत्मा पर अनुशासन होता है। इनसे हमें विनीत और अविनीत की लक्ष्मण-रेखा मिलती है। अनुशासित होना अपेक्षित है। उन्होंने कहा कि लोकतंत्र में अनुशासन और कर्तव्यनिष्ठा नहीं होने पर विनाश हो जाता है। स्वयं का स्वयं पर अनुशासन हो तो दूसरों के लिए ज्यादा मेहनत करनी ही नहीं पड़ती है। आचार्य तुलसी ने कहा था, अपने पर अपना अनुशासन, यही है अणुव्रत का शासन।

समाज व राष्ट्र हितों को सर्वोपरि रखने का दिलाया संकल्प

कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने दीक्षांत समारोह में सभी विद्यार्थियों एवं अन्य सभी को संकल्प सूत्र का पाठ करवा कर संकल्प ग्रहण करवाया, जिसमें अपने आचार-विहार को परस्पर सौहार्द का निर्वहन करने वाला और मानवीय मूल्यों की गरिमा को बनाए रखते हुए समाज व राष्ट्र हितों को सर्वोपरि रखने का संकल्प दिलाया गया। इस अवसर पर उन्होंने विश्वविद्यालय की एक साल की प्रति का विवरण भी प्रस्तुत किया और बताया कि प्राकृत भाषा का यह एकमात्र विश्वविद्यालय है, जिसमें प्राकृत का एक स्वतंत्र विभाग है। प्राकृत भाषा के राष्ट्रीय नोडल केन्द्र को यहां प्रारम्भ किए जाने के सम्बंध में केन्द्र सरकार के पास

प्रस्तावित प्रस्ताव की भी उन्होंने जानकारी दी। उन्होंने राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं शोध के सम्बंध में विश्वविद्यालय में स्थापित केन्द्र व विभाग तथा पाठ्यक्रमों की जानकारी भी दी तथा नेचुरोपैथी व योग में बीएनएसवाई डिग्री व सर्टिफिकेट कोर्स के बारे में भी बताया। कुलपति प्रो. दूगड़ ने विश्वविद्यालय की शैक्षणिक व शिक्षणोत्तर दोनों गतिविधियों में समान रूप से की गई प्रगति की जानकारी देते हुए बताया कि विश्वविद्यालय में अब तक की सर्वाधिक विद्यार्थी संख्या है। यहां 1089 नियमित विद्यार्थी एवं 11 हजार 140 विद्यार्थी दूरस्थ शिक्षा से अध्ययनरत हैं। उन्होंने बताया कि आचार्य श्री महाप्रज्ञ की स्मृति में जारी चांदी के सिक्के के विमोचन का समारोह संस्थान के तत्वावधान में आयोजित किया गया। विश्वविद्यालय के भौतिक संसाधनों की जानकारी देते हुए उन्होंने भवनों के नवीनीकरण, सौंदर्यकरण एवं नवनिर्माण किए जाने एवं राज्यपाल सहित विविध विश्वविद्यालयों के कुलपतियों एवं अन्य प्रमुख लोगों के आगमन आदि विविध गतिविधियों के बारे में बताया। पीएचडी सहित कुल 3700 विद्यार्थियों को दी गई डिग्रियां दीक्षांत समारोह में केन्द्रीय मंत्री गजेन्द्र सिंह शेखावत व कुलपति बच्छराज दूगड़ द्वारा 3700 विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों को अधिस्नातक (एमए) व विद्या वाचस्पति (पीएचडी) की डिग्रियां प्रदान की गईं। इस दौरान जैन विश्व भारती के अध्यक्ष अमरचंद लूंकड़ भी उनके साथ रहे। सभी विभागों के विभागाध्यक्षों ने अपने डिग्री धारकों के नाम उच्चारित किए और मंच पर बुला कर उन्हें उपाधि प्रदान की गई। जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म व दर्शन विभाग, प्राकृत एवं संस्कृत विभाग, योग एवं जीवन दर्शन विभाग, अहिंसा एवं शांति विभाग, शिक्षा विभाग के प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी, प्रो. जैनेन्द्र कुमार जैन, डा. युवराज सिंह खंगारोत, डा. बलबीर सिंह चारण, प्रो. बीएल जैन आदि ने अपने-अपने पीएचडी व स्नातकोत्तर विद्यार्थियों को आमंत्रित कर उपाधियां दिलवाईं। समारोह का संचालन व आभार ज्ञापन कुलसचिव राजेश मौजा ने किया। आचार्यश्री महाश्रमण के मंगलपाठ एवं राष्ट्रगीत के साथ दीक्षांत समारोह का समापन किया गया। कार्यक्रम में हेमंत बैद, अरविंद संचेती, बाबूलाल, मनसुख, अशोक पारख आदि उपस्थित रहे।

बदलते युग में नई सोच सफलता का सूत्रधार

माधावरम, चेन्नई।

आचार्य महाश्रमण तेरापंथ जैन पब्लिक स्कूल में बाल दिवस के अवसर पर छात्रों के लिए एक विशेष प्रेरणात्मक सत्र आयोजित किया गया, जिसमें मुनि जयेश कुमारजी ने विद्यार्थियों को संबोधित किया। बड़ी संख्या में छात्र-छात्राएँ, शिक्षक और अभिभावक उपस्थित रहे।

मुनि जयेश कुमारजी ने इस अवसर पर उपस्थित विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा आज के इस तेजी से बदलते युग में व्यक्ति नई सोच के बिना आगे नहीं बढ़ सकता है। मैं अनेक बार कहता हूँ कि मनुष्य का जन्म कुछ नया

करने हेतु हुआ है, पर नया करने के लिये पहले कुछ अलग सोचना जरूरी है। व्यक्ति अपनी अलग सोच से सामान्य कार्य को भी असाधारण उत्कृष्टता प्रदान कर सकता है।

उन्होंने आगे कहा प्रसिद्ध सूक्त है 'सफलता बड़ी चीजों में होती है पर खुशियाँ छोटी चीजों से मिलती है। कई लोग छोटी छोटी खुशियों को ज्यादा महत्व देते हैं, पर सच्चाई यह है कि कुछ बड़ा किये बिना व्यक्ति जीवन में महानता का वरण नहीं कर सकता है। सफलता के लिये छोटी छोटी खुशियों का बलिदान करना ही पड़ता है। हर महान व्यक्ति ने इनका बलिदान देकर ही असाधारण सफलताओं को हासिल

किया है। मुनिश्री ने आशा व्यक्त कि इस कार्यशाला में प्राप्त संबोध आपके जीवन में नई सोच के जागरण के साथ उसे नई दिशा दे सकेगा। यह सत्र विद्यार्थियों के मन में नई सोच का संचार करेगा और उन्हें जीवन में उद्देश्यपूर्ण दिशा प्रदान करेगा। मुनि मोहजीत कुमार जी ने सभी विद्यार्थियों को सत्संकल्प करवाए एवं अच्छे इंसान बनने की प्रेरणा दी।

विद्यालय प्रबंधन ने उनके आगमन हेतु आभार व्यक्त करते हुए कहा कि ऐसे प्रेरक कार्यक्रम विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं। कार्यक्रम का समापन भावी शुभकामनाओं और धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

तप अभिनंदन कार्यक्रम' एवं 'शक्ति सलोनी' का काव्यपाठ

राजराजेश्वरी नगर।

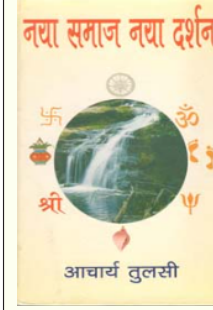
तेरापंथ भवन राजराजेश्वरी नगर में दो विशेष कार्यक्रमों का आयोजन हुआ। कवयित्री शक्ति सलोनी का काव्य पाठ एवं दो कन्याओं का तप अभिनंदन। साध्वी पुण्ययशजी ने अपने मंगल उद्बोधन में कहा प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में कुछ-कुछ अद्भुत क्षमताएं होती हैं। सत् पुरुषार्थ के द्वारा उन क्षमताओं को परख कर उनमें निष्णात बना जा सकता है। कवित्व शक्ति का संबंध हमारी सृजन क्षमता से जुड़ा है। कवयित्री शक्ति सलोनी की कविताओं में क्रांति और वीर रस का अद्भूत संगम देखने को मिलता है। बिना देखे धाराप्रवाह सम-सामयिक विषयों को

अध्यात्म के साथ प्रखर कवित्व के रूप में प्रस्तुत करना वास्तव में बेजोड़ कला है। ऐसा लग रहा है मानो सरस्वती कंठों में विराजमान है। ये आगे प्रगति करती रहे ऐसी मंगलकामना है। 'जब तक हिंदुस्तान है, जिंदा हिंदी का सम्मान रहेगा', 'वो होते भाग्यशाली जिनके घर बेटी जन्मती है', 'गर्व से सीना ठोक के बोलो हों हम जैनी श्रावक हैं' जैसी कविताओं से बहुत ही सुंदर वातावरण का निर्माण हुआ। साध्वीश्री जी ने ज्ञानशाला की 2 दस वर्षीय नन्ही बालाओं के बियासन तप की अनुमोदना करते हुए कहा सुश्री चहल कटारिया के 101 बियासन तथा जेसल मांडोत के 52 दिन के बियासन सानंद संपन्नता की ओर गतिमान हैं। छोटी-छोटी

कन्याओं के प्रबल मनोबल और हिम्मत का परिचय दिया है। इस तपस्या के क्षेत्र में ये आगे बढ़ें और नया कीर्तिमान जोड़ें। इनके साथ इनकी दादी-नानी श्रीमति पुष्पा कटारिया ने अपनी पौत्री और दोहित्री के साथ 116 बियासन किये हैं। सभी का तप आगे प्रवर्धमान रहे। सभाध्यक्ष राकेश जी छाजेड़ ने एक अभिनव अनुभव बताया। तेयुप से सहमंत्री महेश मांडोत, तेमम अध्यक्ष मंजु बोथरा ने भावाभिव्यक्ति दी। परिवार द्वारा गीतिका प्रस्तुत की गई। दोनों बच्चियों ने गीत द्वारा गुरुदेव के प्रति अपनी भावना व्यक्त की। कवयित्री एवं तपस्वियों को सम्मानित किया गया। मंच संचालन तेयुप अध्यक्ष विक्रम महेर ने आभार सुरेश जी दक ने व्यक्त किया।

बोलती किताब

‘नया समाज – नया दर्शन’



समय सदा परिवर्तनशील है— यह सृष्टि का शाश्वत सत्य है। उत्पाद, व्यय और ध्रौव्य की त्रिपदी में यह परिवर्तन की निरंतरता झलकती है। किंतु इस परिवर्तनशील जगत् में मनुष्य ही ऐसा तत्त्व है, जो विवेक और चिंतन से अपने बदलाव की दिशा तय कर सकता है। परंपराओं की लकीर पर चलना आसान है, परंतु उसमें जीवन की रचनात्मकता मर जाती है। आचार्य महाप्रज्ञ के विचारों में यह विश्वास झलकता है कि परिवर्तन मौलिकता को नष्ट करने वाला नहीं, बल्कि उसे सुरक्षित रखकर जीवन में नवीनता लाने वाला होना चाहिए। यही दृष्टि 'नया समाज – नया दर्शन' की आधारभूमि है।

यह ग्रंथ जैन दर्शन के उस सूक्ष्म चिंतन को आधुनिक परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करता है, जिसमें परिवर्तन और मौलिकता का संतुलन विद्यमान है। जैन दर्शन मानता है कि हर क्षण में उत्पत्ति और विनाश के बीच भी मूल तत्त्व सुरक्षित रहता है। आचार्य महाप्रज्ञ इसी भाव को जीवन, साहित्य और समाज की भाषा में व्यक्त करते हैं। उनके अनुसार लेखक, विचारक या समाज—यदि एक ही रेखा पर चलते रहें तो यंत्रवत् हो जाते हैं; किंतु विवेकपूर्ण परिवर्तन से वे सृजनशील बन सकते हैं। इस दृष्टि से यह पुस्तक सिर्फ दार्शनिक नहीं, बल्कि सृजनात्मक चेतना का घोष है।

'नया समाज – नया दर्शन' में आचार्य महाप्रज्ञ ने अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान और जीवनविज्ञान जैसे प्रयोगों को एक समग्र दार्शनिक ढाँचे में जोड़ा है। अणुव्रत नैतिकता का मॉडल है, प्रेक्षाध्यान आत्म-अनुशासन का प्रयोग है और जीवनविज्ञान जीने की कला है। उनका मत है कि शिक्षा व्यवस्था में यदि जीवनविज्ञान का समावेश हो जाए, तो नई पीढ़ी केवल ज्ञानवान नहीं, बल्कि संवेदनशील और विवेकशील भी बनेगी। यह पुस्तक उसी शिक्षा-दर्शन का विस्तार करती है जो मानवता को आत्मकल्याण और लोककल्याण के समन्वय की दिशा में अग्रसर करता है।

इस ग्रंथ में आचार्य महाप्रज्ञ ने केवल अध्यात्म की नहीं, बल्कि अर्थ, समाज और राजनीति की भी चर्चा की है। उनके अनुसार महावीर का दर्शन केवल मोक्ष का नहीं, बल्कि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र का मार्गदर्शक है—जहाँ अर्थ अनर्थ नहीं, बल्कि दृष्टिकोण का परिणाम है। 'नया समाज – नया दर्शन' में यही संदेश निहित है कि यदि मानव अपने विचार और आचरण में विवेकपूर्ण परिवर्तन लाए, तो एक नया समाज—नैतिक, शांतिपूर्ण और वैज्ञानिक दृष्टि से प्रगतिशील—निर्मित हो सकता है। साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा द्वारा संपादित यह कृति आचार्य महाप्रज्ञ के चिंतन को सुसंगठित रूप में पाठकों तक पहुँचाने का अद्भुत प्रयास है।

पुस्तक प्राप्ति के लिए संपर्क करें :

आदर्श साहित्य विभाग जैन विश्व भारती

+91 87420 04849 / 04949 <https://books.jvbharati.org> books@jvbharati.org

पृष्ठ 2 का शेष

भाषा के विवेकपूर्ण..

राजनगर की जनता ने प्रतिरोध किया, साधुओं को वंदन करना छोड़ा, तो स्थानकवासी मुनि के रूप में भीखणजी जैसे वैरागी साधु का आगमन हुआ।

कालक्रम की दृष्टि से देखा जाए तो— पहला, राजनगर वह स्थल है जहाँ आचार्य भिक्षु को बोधि प्राप्त हुई। दूसरा, यहाँ बुखार का निमित्त बना जिसने उन्हें आगमों के गहन अध्ययन के लिए प्रेरित किया। तीसरे क्रम में बगड़ी और केलवा आदि स्थल आते हैं। आज ऐसे पावन राजनगर में आगमन हुआ है। आचार्यश्री भिक्षु का जन्म त्रिशताब्दी वर्ष भी चल रहा है। इसी वर्ष राजनगर आना भी एक विशेष संयोग है। यहाँ के श्रावक समाज में उत्तम धर्म-जागरूकता बनी रहे।

आचार्यश्री के मंगल प्रवचन के उपरान्त साध्वीप्रमुखा विश्रुतिवाजी ने समुपस्थित जनता को उद्बोधित करते हुए एक घटना-प्रसंग के माध्यम से पूज्य प्रवर से निवेदन किया कि विहार आदि के समय अपने स्वास्थ्य का समुचित ध्यान रखते हुए ही यात्रा करें।

राजनगर में चातुर्मास करने वाली साध्वी उज्ज्वलरेखाजी ने अपने हृदयोद्गार व्यक्त किए। स्थानीय तेरापंथी सभाध्यक्ष ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। स्थानीय ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने भावपूर्ण प्रस्तुति दी। ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं ने गीत की प्रस्तुति दी। राजनगर के एसडीएम बृजेश गुप्ता एवं सभापति अशोक टाक ने भी अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि

दिनेशकुमार जी ने किया।

श्रेय और हितकर...

मुनि संबोध कुमारजी 'मेधांश', मुनि कैवल्य कुमारजी ने अपनी अभिव्यक्ति दी। बालक विदांशु धारीवाल ने आचार्यश्री से अठाई तप का प्रत्याख्यान किया। ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों की प्रस्तुति हुई। कांकरोली की समस्त तेरापंथी संस्थाओं ने सामूहिक रूप से गीत का संगान किया।

आचार्यश्री की मंगल सन्निधि में उपस्थित स्थानीय विधायक दीपति किरण माहेश्वरी ने भी अपनी भावाभिव्यक्ति दी। मुनि संबोध कुमारजी के प्रथम उपन्यास 'मत्स्यादर' का लोकार्पण जैन विश्व भारती द्वारा किया गया। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।

इको फ्रेंडली फेस्टिवल बैनर का विमोचन

कोलकता।

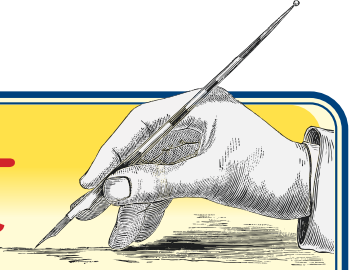
जैन कार्यवाहिनी कोलकता के तत्वावधान में दीपावली पर्व के अवसर पर जैन संस्कार विधि से कैसे दीपावली का करें पूजन पर विशेष कार्यक्रम महासभा भवन के भिक्षु ग्रंथागार में हुआ जिसमें जैन संस्कार विधि के बारे में सम्पूर्ण जानकारी प्रायोगिक तौर पर जैन कार्यवाहिनी के सदस्य व जैन संस्कारक प्रवीण सिंघी ने विधि पूर्वक जानकारी दी।

कार्यक्रम में मंगलभावना पत्रक की स्थापना कार्यवाहिनी के संयोजक पंकज दुधोडिया व हाजरी संयोजक प्रदीप बैद ने की। सिंघी जी ने कार्यक्रम

को विधिवत संपादित करने के साथ साथ उपस्थितजनों के जिज्ञासाओं का समाधान भी किया। कार्यक्रम में अणुव्रत समिति कोलकता द्वारा ईको फ्रेंडली फेस्टिवल के बैनर का विमोचन जैन कार्यवाहिनी के समन्यवक महेंद्र दुधोडिया, अणुव्रत समिति कोलकता के अध्यक्ष नवीन दुगड़, जैन कार्यवाहिनी के संयोजक पंकज दुधोडिया, जैन कार्यवाहिनी के संयोजक राजकुमार भादानी, अणुव्रत समिति के निवर्तमान अध्यक्ष प्रदीप सिंघी, मंत्री सुरेंद्र मनोत, कोलकाता सभा के मंत्री उमेद नाहटा, प्रदीप बैद, उत्तर हावड़ा सभा के मंत्री प्रवीण सिंघी सहित गणमान्यजन उपस्थित थे।

सम्पादकीय

आचार्य तुलसी : धर्मक्रान्ति के सूत्रधार



भगवतगीता में श्रीकृष्ण ने कहा है-

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत ।

अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥

जब जब भारतवर्ष में धर्म के क्षेत्र में ग्लानि उत्पन्न होती है, तब-तब भारतवर्ष को अधर्म से उबारने के लिए उसके अभ्युदय के लिए मैं किसी न किसी रूप में अवतरित होता हूँ। चूंकि जैन धर्म अवतारवार में विश्वास नहीं करता, फिर भी आचार्य तुलसी के सन्दर्भ में देखते हैं तो श्रीकृष्ण द्वारा उच्चारित यह सूत्र चरितार्थ होता दिखाई देता है।

धर्म क्रांति के पुरोधा :

बीसवीं सदी के प्रारंभ में आचार्यश्री तुलसी इस धरा पर धर्म क्रांति के पुरोधा बनकर अवतरित हुए। वे अध्यात्म के क्षितिज पर भोर का किरण बनकर उतरे। धूप की भांति खिले और प्रचंड सूर्य की भांति खिले। अध्यात्म जगत में फैली हुई अनैतिकता, असंयम और दृढ़िवाद की तिमिरता को उजाले से भर दिया। उन्होंने अधर्म के अंधियारे को चीरते हुए धर्म का तेजोमय सही स्वरूप प्रस्तुत करते हुए अभिनव क्रांति का शंखनाद किया।

धर्मक्रान्ति के सूत्रधार आचार्य श्री तुलसी के साथ भी प्रारंभ में वही घटित हुआ जो क्रांति के हर सूत्रधार के साथ होता है। जैसे कि मार्टिन ल्यूथर, ईसा मसीह, सुकरात, महात्मा गांधी, आचार्य भिक्षु आदि। आचार्य तुलसी की धर्म-क्रान्ति के सामने अनेक आरोह-अवरोह आए। उनका भयंकर विरोध हुआ, उन्हें जान से मारने का प्रयास हुआ। आगजनी की घटनाएं हुई, कोर्ट केस किए गए, लेकिन क्रांति की लहर कब रुकी है? उनके सामने आने वाले मुसीबतों के पहाड़ स्वयं धराशायी हो गए। अवरोधों की आंधियां स्वतः शांत हो गईं। कठिनाइयां चकनाचूर हो गईं।

लहर को पता है वह टकराएगी, टकराकर मिट जाएगी।

फिर भी वह झूम के चलती है, तूफान को चूम के चलती है।।

धीरे-धीरे लोग आचार्य श्री तुलसी के उद्देश्यों को, उनकी भावनाओं को समझने लगे। विरोध का झंडा लेकर चलने वाले चरणों में झुकने लग गए।

संप्रदाय विहिन धर्म के प्रवर्तक :

आचार्य श्री तुलसी ने देखा कि समाज और राष्ट्र में धर्म के संदर्भ में गलत अवधारणाएं बनी हुई हैं। एक तरफ धर्म को मंदिर, मस्जिद या गिरजाघरों की चार दीवारों में कैद कर लिया गया है, उसे क्रियाकांड की वस्तु मान लिया गया है। आदमी सोचता है कि धर्म स्थान में पूजा-पाठ कर लो। बाहर कितने भी अनैतिक काम कर लो उसमें कोई दोष नहीं है। धर्म स्थान में जाकर धूप-दीप कर लो, आरती उतार लो, सब पाप कर्म नष्ट हो जाएंगे। दूसरी तरफ सम्प्रदाय को धर्म मान लिया गया। आचार्य तुलसी एक संप्रदाय के आचार्य थे लेकिन उनका चिंतन अपने संप्रदाय तक सीमित नहीं था। उनका मानना था धर्म बहुत व्यापक है। धर्म सार्वभौम तत्व है और उसे किसी एक सम्प्रदाय के कठघरे में कैद नहीं किया जा सकता। उन्होंने कहा- मैं संप्रदाय का विरोधी नहीं हूँ। लेकिन धर्म को प्रथम स्थान देना है। सम्प्रदाय असत्य हो सकते हैं धर्म कभी असत्य नहीं हो सकता।

सूर्य का प्रकाश सबको समान रूप से मिलता है उस पर किसी व्यक्ति विशेष का अधिकार नहीं हो सकता। वैसे ही धर्म भी सबके लिए समान होता है। उस पर किसी संप्रदाय विशेष का अधिकार नहीं है। उन्होंने फरमाया- 'आत्म शुद्धि का जहां प्रश्न है, संप्रदाय का मोह न हो' धर्म आत्मशुद्धि का साधन है उसमें संप्रदाय का मोह नहीं होना चाहिए। जहां धर्म गौण और सम्प्रदाय प्रमुख हो जाता है वहां साम्प्रदायिक अभिनिवेश उत्पन्न होता है। तनाव और हिंसा का उद्भव हो जाता है। उस समय अपने आप पर सम्प्रदाय विशेष का लेबल लगा देने वाले धर्मनेता लाचार हो जाते हैं। भीष्म पितामह की भांति वे धर्म रूपी द्रौपदी का चीरहरण होते हुए देखते रहते हैं।

1947 में भारत देश आज़ाद हुआ और साम्प्रदायिक अभिनिवेश की आग की लपटों में अनेक निर्दोष हिन्दु-मुस्लिम नागरिकों का कल्लेआम हो गया। उन दृश्यों से भारतमाता का कलेजा भी शायद कांप उठा। इस स्थिति से व्यथित आचार्य श्री तुलसी ने देश को उबारने का एवं हिंसा की हुवाशानी से बचाने का बीड़ा उठाया। उन्होंने कहा- 'इन्सान पहले इन्सान, फिर हिन्दु या मुसलमान' और इस सूत्र को चरितार्थ करते हुए उन्होंने 1 मार्च 1949 को 'अणुव्रत आंदोलन' का सूत्रपात कर दिया। देश के मूर्धन्य विद्वानों ने एवं शीर्षस्थ राजनेताओं ने उसका स्वागत किया। कुछ ही समय में यह

आंदोलन सम्प्रदाय विहिन धर्म के रूप में प्रतिष्ठित हो गया। गुरुदेव तुलसी ने अणुव्रत गीत में कहा है-

अपने से अपना अनुशासन, अणुव्रत की परिभाषा।

वर्ण जाति या सम्प्रदाय से, मुक्त धर्म की भाषा।।

यह सम्प्रदाय मुक्त धर्म की स्थापना सारे विश्व के लिए शांति का संदेश बन गई।

नैतिकता परमो धर्म :

'अहिंसा परमो धर्म' - यह भारतीय संस्कृति का महान सूत्र रहा है। आचार्य श्री तुलसी ने कहा- अहिंसा हमारा साध्य है। उसका साधन है नैतिकता और अपरिग्रह। असाध्य शुद्ध है लेकिन उसकी प्राप्ति के साधन भी शुद्ध होने चाहिए। जहां परिग्रह है, अनैतिकता है, बेईमानी है, धोखाधड़ी है वहां अहिंसा का अस्तित्व सुरक्षित नहीं रह सकता। उन्होंने कहा- अनैतिकता की चिलचिलाती धूप से बचना है तो अणुव्रत एक मात्र छत्री है।

भगवान महावीर ने कहा- 'णानस्स सारं आयारो'

ज्ञान का सार आधार है। आचरण के बिना प्राप्त किए गए ज्ञान का कोई मूल्य नहीं है। व्यक्ति धर्म स्थान में जाता है, पूजा-पाठ करता है और बाहर आकर दूसरों से धोखा करता है, शोषण करता है, हिंसात्मक उपद्रव करता है, मिलावट करता है। व्यापार व्यवसाय में बेईमानी करता है, दिखावा कुछ है- देता कुछ है, अपने स्वार्थ के लिए वोट को बेंचता है खरीदता है। यह तो सरासर अन्याय और अनैतिकता है। जहां ऐसी अनैतिकता है वहां धर्म ठहर नहीं सकता।

'संयमः खलु जीवनम्'

आचार्य श्री तुलसी ने जिस अणुव्रत धर्म का प्रतिपादन किया। उसका प्रतीक-सूत्र है- 'संयमः खलु जीवनम् - संयम ही जीवन है' यह सूत्र आज अणुव्रत की पहचान बन गया है। आचार्य श्री ने अनुभव किया कि वर्तमान की हिंसा, आतंकवाद, गरीबी, शोषण, बेरोजगारी, दहेज जैसी भयंकर रूढ़ियां, पर्यावरणीय प्रदूषण, अपराध, मांसाहार, व्यसन, फैशन आदि जितनी - जितनी समस्याएं हैं उनकी उद्मय भूमि है मनुष्य का असंयम। जब तक मनुष्य की दिनचर्या में रहन-सहन में संयम का आचरण नहीं होगा तब तक ये सभी समस्याएं समाहित होने वाली नहीं हैं। अतः उन्होंने अणुव्रत आचार संहिता में संयम को महत्वपूर्ण स्थान दिया। अणुव्रत के प्रत्येक नियम में संयम की भावना दृष्टिगोचर हो रही है। चलने में फिरने में उठने-बैठने में, वाणी में आहार में संयम आ गया तो शरीर भी स्वस्थ रहेगा, मन भी स्वस्थ रहेगा, व्यक्ति, समाज और राष्ट्र भी स्वस्थ रहेगा। पर्यावरण भी सुरक्षित रहेगा और विश्व बंधुत्व एवं विश्व शांति का सपना साकार होगा। व्यक्ति बदलेगा और व्यक्ति बदलेगा तो आज जाकर पूरा राष्ट्र और विश्व बदलेगा।

हवा का झोंका आते ही, पक्षों का हिलना निश्चित है।

अग्नि का स्पर्श होते ही, कागज का जलना निश्चित है।।

कहते हैं गुरुवर तुलसी, इसी प्रकार मान के चलो- अणुव्रत का आचरण होते ही, आदमी का बदलना निश्चित है।।

मानवता के ऐसे महान पुरस्कर्ता जन-जन के उद्धारक, महान धर्मनायक, समाज सुधारक और राष्ट्रनायक विश्व संत आचार्य श्री तुलसी की दीक्षा के शताब्दी वर्ष की संपन्नता पर मैं उनकी पावन स्मृति को वंदन करता हूँ। उनके पवित्र जीवन से हम भी प्रेरणा लेते हुए अणुव्रती बनने का लक्ष्य रखते हुए अणुव्रत पथ पर दृढ़ता से चरण न्यास अवश्य करें यही मंगलकामना।

गुरुवर तुलसी की दीक्षा शताब्दी यही संदेश दे रही है कि अगली शताब्दी आचार्य तुलसी के अवदानों की शताब्दी होगी। हिंसा, युद्ध, असंयम, नशे और पर्यावरणीय प्रदूषण की विभिषिकाओं से मुक्त होकर सुख, शांति और आनंदपूर्ण जीवन जीने के लिए जगत के पास एक ही रास्ता है - आचार्य श्री तुलसी का दर्शन। निःसंदेह उनके अवदान - अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान, और जीवन विज्ञान पूरे जगत के लिए वरदान बन सकते हैं।

पुनः तीर्थंकर तुल्य उस महान् आत्मा को कोटिशः वंदन। उनके महान उत्तराधिकारी प्रेक्षा प्रणेता आचार्यश्री महाप्रज्ञजी एवं वर्तमान अणुव्रत अनुशास्ता विश्व संत आचार्यश्री महाश्रमणजी के चरणों में कृतज्ञ भाव से नमन।

संयम के विकास से होगी भीतरी सुख की प्राप्ति : आचार्यश्री महाश्रमण

उदयपुर।

25 नवम्बर, 2025

अध्यात्म जगत के महासूर्य युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी ने आर्हत वांगमय के माध्यम से अमृत देशना प्रदान करते हुए कहा कि व्यक्ति सुख प्राप्त करना चाहता है। केवल व्यक्ति ही नहीं, छोटे-छोटे प्राणी भी सुख की इच्छा रखते हैं। दशवैकालिक आगम में सुखी बनने के कई सूत्र प्रस्तुत किए गए हैं। पहला सूत्र है - अपने आप को तपाओ। जो व्यक्ति सुविधावादी मनोवृत्ति वाला होता है और थोड़ी-सी कठिनाई भी सहन नहीं कर पाता, वह सुकुमार बना रहता है। ऐसे व्यक्ति के लिए छोटी-सी कठिनाई भी बहुत बड़ी बन सकती है। जबकि जिसे कठोर जीवन जीने का अभ्यास होता है, वह जीवन की कठिनाइयों की अधिक परवाह नहीं करता। अतः कठिनाइयों को सहन करने की मनोवृत्ति का विकास करना चाहिए।

हमारे साधु-साध्वियां सदी, गर्मी और बरसात के मौसम में भी विहार करते हैं। सावधानी रखी जा सकती



है, किन्तु कठिनाइयों से डरना नहीं चाहिए और अपने पथ पर आगे बढ़ते रहना चाहिए। जीवन में जितना त्याग और संयम का विकास होगा, उतना ही भीतरी सुख की प्राप्ति होगी। जहां राग-द्वेष, असंयम और असहिष्णुता होती है, वहां अशांति और दुःख उत्पन्न होते हैं। जहां योग, त्याग और संयम होता है, वहां सुख की प्राप्ति होती है।

आचार्य प्रवर ने आगे कहा कि इसी स्थल पर आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी ने वर्षावास किया था। आचार्य महाप्रज्ञ जी का व्यक्तित्व और कर्तृत्व अत्यंत विराट रहा है। उदयपुर शहर में हमारा आगमन हुआ है। यहां के लोगों में भक्ति-भावना बनी रहनी चाहिए। इस क्षेत्र में आज साध्वीप्रमुखा जी, मुख्यमुनि और साध्वीवर्या नए रूप में आए हैं। यह

स्थान मुनि मधुकर जी स्वामी से भी जुड़ा रहा है। यहां की जनता में धार्मिक भावना निरंतर बनी रहनी चाहिए।

पूज्य प्रवर के मंगल प्रवचन के उपरांत साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि परम पूज्य गुरुदेव उदयपुर में पधारे हैं। पूज्य गुरुदेव पुष्कलावर्त मेघ के समान हैं, जिनके एक बार बरसने से धरती दस हजार

वर्ष तक स्निग्ध बनी रहती है। गुरुदेव की अमृत देशना रूपी अध्यात्म वर्षा से उदयपुर की यह धरती भी सहस्रों वर्षों तक स्निग्ध और उर्वर बनी रहेगी। उदयपुर में आचार्य श्री तुलसी पधारे थे, आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी ने यहां चातुर्मास किया था, और परम पूज्य गुरुदेव श्री महाश्रमण जी भी आचार्य बनने के बाद दूसरी बार यहां पधारे हैं। आचार्य प्रवर की तेजस्विता, प्रज्ञा और तप के बल पर आज यहां इतनी बड़ी संख्या में लोग उपस्थित हुए हैं।

साध्वीप्रमुखाश्री के उद्बोधन के पश्चात तेरापंथी सभा उदयपुर के अध्यक्ष कमल नाहटा, मंत्री अभिषेक पोखरणा और तेयुप अध्यक्ष अशोक चौरडिया ने अपनी अभिव्यक्ति दी। उदयपुर ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने अपनी प्रस्तुति दी। तेरापंथ युवक परिषद उदयपुर ने गीत के माध्यम से आचार्य प्रवर की अभिवंदना की। तेरापंथ महिला मंडल और तेरापंथ कन्या मंडल ने भी पृथक-पृथक गीत प्रस्तुत किए। बजरंग जैन ने भी गीत की प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

कषाय मंदता है ध्यान की सबसे बड़ी निष्पत्ति : आचार्यश्री महाश्रमण

उदयपुर।

26 नवम्बर, 2025

महासूर्य, तीर्थंकर के प्रतिनिधि महातपस्वी युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी ने आर्हत वाणी के माध्यम से अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि ध्यान भी एक साधना है। परम पूज्य आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी द्वारा प्रेक्षाध्यान के अंतर्गत किए गए प्रयोग जैसे कायोत्सर्ग, दीर्घश्वास प्रेक्षा, समवृत्ति श्वास प्रेक्षा, चैतन्य केन्द्र प्रेक्षा आदि विशेष महत्व रखते हैं। कषाय मंदता ध्यान की सबसे बड़ी निष्पत्ति है। यद्यपि ध्यान के अन्य लाभ भी हो सकते हैं, परंतु अहिंसा की चेतना का विकास और समता की साधना ध्यान के प्रमुख लाभ हैं।

क्रोध, मान, माया, लोभ आदि कषाय क्षीण होने चाहिए। सामायिक भी एक उत्तम साधना है। सामायिक में ध्यान, स्वाध्याय, आत्मचिंतन आदि कई प्रयोग

किए जा सकते हैं। साधु का सर्वविरति रूप जीवन भर की सामायिक होता है। साधुत्व एक अनमोल रत्न है। श्रावकों को भी अपने दैनिक कार्यक्रम में प्रतिदिन एक सामायिक का प्रयास करना चाहिए, इससे उनके जीवन का क्रम बहुत अच्छा हो सकता है।

मानव जीवन में कुल सात व्यसन बताए गए हैं, जिनमें एक व्यसन हिंसा करना है। साधु तो सदुपदेश देने वाले होते हैं। साधु हिंसा का त्याग कर अहिंसा का आचरण करते हैं।

ऐसे अहिंसामूर्ति और त्यागमूर्ति साधुओं के मात्र मुखदर्शन से ही पाप झड़ते हैं और पुण्य का बंध होता है। यदि ऐसे साधु सदुपदेश दें कि प्राणियों की हिंसा से बचने का प्रयास किया जाए और कोई हिंसा का परित्याग कर दे, तो उसके जीवन में अच्छा परिवर्तन आ सकता है। साधु में संयम-साधना हो तो वही उसकी वास्तविक संपत्ति होती है। ऐसे साधु को



देवता भी नमस्कार करते हैं।

आचार्यश्री ने आगे कहा कि आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी की चातुर्मास स्थली में हमारा आगमन हुआ है और जिस मंच से आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी ने प्रवचन दिया था, वहीं आज हमारा प्रवचन हो रहा है। हमारे पूर्वाचार्यों द्वारा जो संदेश, निर्देश और उपदेश दिए गए हैं, उन्हें यथासंभव ध्यान में रखते हुए उनका

अनुपालन करने का प्रयास होना चाहिए। यहां की जनता में अच्छी धार्मिक और आध्यात्मिक गतिविधियां निरंतर चलती रहें। आने वाले साधु-साध्वियों से उत्तम आध्यात्मिक और धार्मिक लाभ लेते रहना चाहिए।

दो चातुर्मास के उपरांत आचार्यश्री के दर्शन करने वाली साध्वी उज्जवलप्रभा जी ने अपने उद्गार व्यक्त

किये तथा सहवर्ती साध्वियों के साथ गीत का संगान किया।

दिगंबर जैन समाज की ओर से तरुण सागर, चातुर्मास समिति के संयोजक विनोद जैन, महावीर स्वाध्याय समिति के अध्यक्ष प्रकाश जैन, अणुव्रत समिति की अध्यक्ष प्रणिता जैन, टी.पी.एफ. के अध्यक्ष राजेंद्र चंडालिया, स्थानीय तेरापंथी सभा के सभाध्यक्ष कमल नाहटा, धीरेन्द्र मेहता आदि ने अपनी अभिव्यक्ति दी। ज्ञानशाला की प्रशिक्षक और प्रशिक्षिकाओं ने सामूहिक रूप से गीत का संगान किया।

लक्ष्मण कर्णावट ने अपनी आत्मकथा को श्रीचरणों में लोकार्पित किया। आचार्य श्री ने उन्हें मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। राजस्थान सरकार में जनजाति मंत्री बाबूलाल खराड़ी ने भी अपनी अभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।

आचार्य भिक्षु : जीवन दर्शन

आज्ञा : परम मूल्य

आचार्य भिक्षु ने आज्ञा को सर्वोपरि मूल्य दिया। उनकी वाणी है—

जिन शासन में आज्ञा बढ़ी। आतौ बांधी रे भगवन्ता पाल।।

सहु सज्जन असज्जन भैला रहे। छांदो रुंधे रे प्रभु वचन संभाल।।

उन्होंने आज्ञा का मूल्यांकन करते हुए इन मर्यादा-सूत्रों का निर्माण किया—

1. साधु-साधवियां आचार्य की आज्ञा की आराधना करें।
2. विहार, चातुर्मास आचार्य की आज्ञा से करें। आचार्य की आज्ञा का उल्लंघन कर अथवा बिना आज्ञा कहीं न रहें।
3. दीक्षा आचार्य के नाम से दें।
4. दीक्षा के बाद दीक्षित साधु को आचार्य को लाकर सौंपें।
5. आचार्य की इच्छा हो तब गुरु-भाई, शिष्यादि को गण का भार सौंप सकेगा। यह रीति परम्परा है।
6. आचार्य जिसको भी गण का भार सौंपे, सर्व साधु-साधवियां उसकी आज्ञा में चलें।
7. सर्व साधु-साधवियां एक ही आचार्य की आज्ञा में चलें। ऐसी रीति निर्धारित की है। यह संघ चले तब तक के लिए यह रीति है।



भिक्षु की कहानी जयाचार्य की जुबानी



मूल्यांकन तुम कर लेना

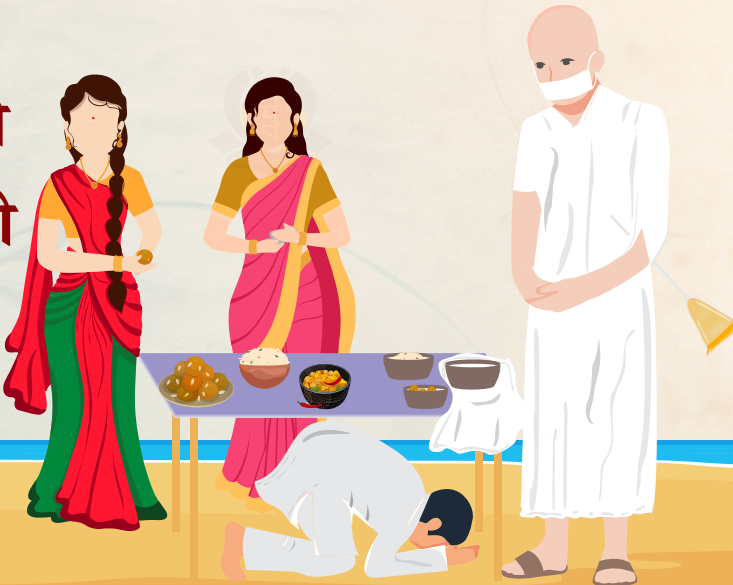
किसी ने पूछा— इतने संप्रदाय हैं, उनमें साधु कौन और असाधु कौन? तब स्वामीजी बोले— किसी को आंखों से दिखाई नहीं देता। उसने वैद्य से पूछा— शहर में नंगे कितने हैं और वस्त्र पहने कितने हैं?

तब वैद्य बोला— आंखों में दवा डालकर तुम्हारी दृष्टि मैं लौटा दूंगा, फिर तुम्हीं देख लेना कितने नंगे हैं और कितने वस्त्र पहने हैं।

इसी प्रकार पहचान तो हम बतला देते हैं, फिर साधु कौन असाधु कौन इसका निर्णय तुम स्वयं कर लेना।

किसी का भी नाम लेकर असाधु कहने से वह झगड़ा करने लग जाती है। इसे ध्यान में रख कर साधु-असाधु के लक्षण तो हम दे देंगे, उनका मूल्यांकन तुम कर लेना।

जानें तेरापंथ को पहचाने स्वयं को यथा संविभाग



बारह व्रतों का एक ऐसा व्रत जिसका सीधा संबंध पंच महाव्रत धारी साधु से है। अथवा यों, कहें कि इस व्रत को फलीभूत होने में, सिद्ध होने में साधु की प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष उपस्थिति अनिवार्य है। 'यथासंविभाग' अर्थात् अपनी अधिकार की वस्तु आदि का साधुओं को उनके उपयोगार्थ देना। भावना भाना। साधुओं को देने योग्य 14 प्रकार की वस्तुओं का उल्लेख आता है। अशन-पान-खाद्य-वस्त्र-प्रतिग्रह-कम्बल-पाद प्रोक्षण औषध-भेषज-पीठ-फलक-सय्या-संस्तारक।

साधुओं को भिक्षा देते समय इन दोषों से बचना चाहिए अशुद्ध-अनादर भाव-कपट-व्यर्थवस्तु-अहं-लालच-देना स्वयं शुद्ध होते हुए भी औरों से दिलवाना। श्रावक सचित-अचित का भी ध्यान रखे। एक प्रश्न यह पूछा गया, साधु अगर उपस्थित ही नहीं हो तो दान कैसे हो? तो इसका उत्तर यह दिया गया कि 'भावना' श्रावक भावना भाते रहे इससे भी निर्जरा होती है क्योंकि सारी बात तो भावना के पीछे ही है अतः श्रावक भावना शुद्ध रखे, दान शुद्ध करे, सुपात्र दान करे।

क्या आप जानते हैं?



बीज/गुठली व छिलके से रहित होने पर बेर, हरे बादाम, आलुबुखारा और अमरूद को अचित्त माना जाए।

साप्ताहिक प्रेरणा

इस सप्ताह चौदह नियम चितारने का प्रयास करें।

समय का हो उत्कृष्ट सदुपयोग : आचार्यश्री महाश्रमण

नाथद्वारा।

29 नवम्बर, 2025

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी अपनी धवल सेना के साथ नाथद्वारा पधारे। समुपस्थित श्रद्धालुओं को आर्हत वांग्मय के माध्यम से अमृत देशना प्रदान करते हुए आचार्यश्री महाश्रमण जी ने फरमाया कि हमारे जीवन में समय का बहुत महत्व होता है। समय एक प्रकार का धन है। इस धन का आदमी क्या उपयोग करता है, यह एक ध्यातव्य बात है। समय का सदुपयोग भी किया जा सकता है, दुरुपयोग भी, और अनुपयोग भी हो सकता है। अच्छे कार्यों में समय का नियोजन किया जाए तो समय का सदुपयोग हो जाता है। हिंसा, झूठ, धोखाधड़ी आदि बुरे कार्यों में समय लगाया जाए तो समय का दुरुपयोग होता है। और आदमी आलस्यवश कोई कार्य ही न करे, तो वह समय का अनुपयोग बन जाता है।

आदमी को चाहिए कि वह समय का



बढ़िया धार्मिक-आध्यात्मिक उपयोग करे। बुरे कार्यों, बुरे विचारों और बुरी योजनाओं में अपना समय न लगाए। और कुछ भी न करना भी उत्तम नहीं है। समय का अच्छा उपयोग किया जाए तो जीवन में समय का सार्थक उपयोग

संभव है। समय के लिए किसी प्रकार का धन लगाने की आवश्यकता नहीं होती। प्रतिदिन के 24 घंटे सभी को समान रूप से मिलते हैं। इस समय का कौन व्यक्ति कितना विवेकपूर्ण उपयोग करता है, यही महत्वपूर्ण होता है। धर्मग्रंथों में

चौरासी लाख जीवयोनियाँ बताई गई हैं। उनमें यह मानव जीवन दुर्लभ भी है और महत्वपूर्ण भी। इस मानव जीवन में साधना करके मोक्ष तक पहुँचा जा सकता है। किसी अन्य योनि से मोक्ष की प्राप्ति संभव नहीं है। अतः इस मानव

जन्म में हमें समय का उत्कृष्ट उपयोग करना चाहिए।

आचार्य प्रवर ने आगे कहा कि आज नाथद्वारा आना हुआ है। हमारे प्रथम गुरु आचार्य श्री भिक्षु के जन्म का त्रिशताब्दी वर्ष भी चल रहा है। आगे हमें कंटालिया, सिरियारी आदि स्थलों पर भी जाना है। यहाँ के लोगों में उत्तम धार्मिक और आध्यात्मिक भाव बने रहें।

आचार्य प्रवर के मंगल प्रवचन के उपरान्त साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभाजी ने श्रद्धालुओं को संबोधित किया। राजस्थान के पूर्व विधानसभा अध्यक्ष डॉ. सी. पी. जोशी पूज्य प्रवर की मंगल सन्निधि में उपस्थित हुए। आचार्य प्रवर के स्वागत में अभिवंदना की और मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया। तेरापंथ महिला मंडल नाथद्वारा ने गीत का संगान किया। स्थानीय सभा अध्यक्ष विश्वजीत सिंह कर्णावट और रमेश सोनी ने अपनी आस्थासिक्त अभिव्यक्ति दी। नाथद्वारा ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने अपनी भावपूर्ण प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।

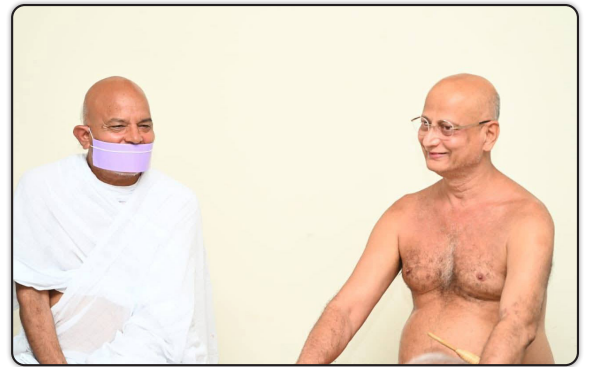
आचार्यश्री महाश्रमणजी : चित्रमय झलकियाँ



श्रीचरणों में मेवाड़ राजघराने के लक्ष्यराज सिंह मेवाड़



गुरु सन्निधि में मेवाड़ राजघराने के विश्वराज सिंह मेवाड़



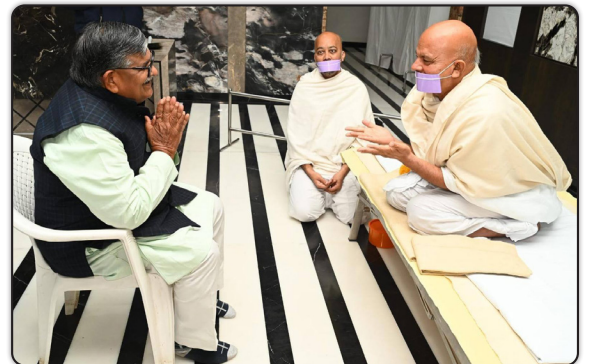
युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमणजी एवं दिगम्बर परम्परा के आचार्य श्री पुलकसागरजी का आध्यात्मिक मिलन



'संघ परामर्शक', 'शासन गौरव' मुनि श्री मधुकर जी के समाधि स्थल पर आचार्यप्रवर



विहार सेवा में मध्य प्रदेश सरकार के मंत्री कैलाश विजयवर्गीय



आचार्यश्री के दर्शनार्थ पहुंचे हरियाणा व पंजाब के राज्यपाल गुलाबचंद कटारिया